राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक — पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य सचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

— ग्रन्थाङ्क ८ —

महाकवि उदयराज विरचित

राजविनोदमहाकाव्यम्

★

— प्र का श क —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

वि० सं० २०१३]

[मूल्य
२) रु० २५ न पैं०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रकाशित ग्रन्थ

१ प्रमाणमञ्जरी – तार्किकचूड़ामणि सर्वदेव। २ यन्त्रराजरचना – महाराजाधिराज जयसिंहदेव कारिता। ३ कान्हडदे प्रबन्ध – महाकवि पद्मनाभ। ४ क्यामखांरासा – नवाब अलफ़खां (कविवर जान)। ५ लावारासा – चारण कविया गोपालदान। ६ महर्षिकुलवैभवम् – विद्यावाचस्पति स्व. श्री मधुसूदनजी ओझा। ७ वृत्तिदीपिका – मौनि कृष्णभट्ट। ८ राजविनोद काव्य – कवि उदयराज।

प्रेस में

त्रिपुराभारतीलघुस्तव – सिद्धसारस्वत लघुपण्डित। २ बालशिक्षा व्याकरण – ठक्कुर संग्रामसिंह। ३ करुणामृतप्रपा – महाकवि ठक्कुर सोमेश्वरदेव। ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा – पं. कृष्णमिश्र। ५ शकुनप्रदीप – पं. लावण्यशर्मा। ६ उक्तिरत्नाकर – पं. साधुसुन्दर गणी। ७ प्राकृतानन्द – पं. रघुनाथ कवि। ८ ईश्वरविलासकाव्य – पं. कृष्णभट्ट। ९ चक्रपाणिविजयकाव्य – पं. लक्ष्मीधर भट्ट। १० काव्यप्रकाश – भट्ट सोमेश्वर। ११ तर्कसंग्रहफक्किका – क्षमाकल्याण गणी। १२ कारकसंबन्धोद्योत – पं.रभसनन्दी। १३ शृंगारहारावलि – हर्षकवि। १४ कृष्णगीतिकाव्यनि – कवि सोमनाथ। १५ नृत्यसंग्रह – अज्ञातकर्तृक। १६ नृत्यरत्नकोश – महाराजाधिराज कुंभकर्णदेव। १७ नन्दोपाख्यान – अज्ञातकर्तृक। १८ चान्द्रव्याकरण – चन्द्रगोमी। १९ शब्दरत्नप्रदीप – अज्ञातकर्तृक। २० रत्नकोश – अज्ञातकर्तृक। २१ कविकौस्तुभ – पं. रघुनाथ मनोहर। २२ एकाक्षरकोशसंग्रह – विविधकविकर्तृक। २३ शतकत्रयम् – भर्तृहरि, धनसारकृत व्याख्यायुक्त। २४ वसन्तविलास – अज्ञातकर्तृक। २५ दुर्गापुष्पाञ्जलि – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २६ दशकण्ठवधम् – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २७ गोरा बादल पदमिणी चऊपई – कवि हेमरतन। २८ बांकीदासरी ख्यात – महाकवि बांकीदास। २९ मुंहता नैणसीरी ख्यात – मुंहता नैणसी। इत्यादि।

प्राप्तिस्थान – सञ्चालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर।

महाकवि उदयराज विरचित

राजविनोदमहाकाव्यम्

★

सम्पादक

श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम० ए०

— प्रकाशनकर्त्ता —

श्रीराजस्थान-राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक-राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१३] प्रथमावृत्ति ★ मूल्य [खिस्ताब्द १९५६

२) ६० ५० न० पै०

प्रकाशकीय वक्तव्य

प्रस्तुत "राजविनोद" काव्य की रचना कवि उदयराज द्वारा अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध सुलतान महमूद बेगड़ा के यशोवर्णन के रूप में हुई है। महमूद बेगड़ा गुजरात का एक महाप्रतापी, शूरवीर और कर्त्तव्यपरायण नरेश हो गया है, जिसका वर्णन सम्बन्धित इतिहासों में विस्तार से मिलता है। उदयराज महमूद बेगड़ा का आश्रित एक संस्कृत कवि था। तत्प्रणीत "राजविनोद" द्वारा मध्यकालीन भारतीय इतिहास के कई नवीन तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है तथा राजस्थान की तात्कालिक स्थिति आदि के विषय में भी कितनी ही सूचनाएं प्राप्त होती हैं। सर्व प्रथम डाक्टर बूलर ने सन् १८७५ ई० में बम्बई सरकार के लिये "राजविनोद" की प्रति प्राप्त कर इसका महत्त्व प्रदर्शित किया था। तब से इसके प्रकाशन की आवश्यकता बनी हुई थी।

भाण्डारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना में हमारा जाना हुआ तो वहां पर सुरक्षित बम्बई सरकार के ग्रन्थ-संग्रह से "राजविनोद" की प्रति प्रकाशन के लिये हम अपने साथ ले आए। राजस्थान सरकार द्वारा जयपुर में "राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर" की स्थापना होने पर श्री गोपालनारायण जी बहुरा हमारे सम्पर्क में आये और हमने इनकी साहित्यिक रुचि देख कर "राजविनोद" के सम्पादन का कार्य इनको सौंप दिया। इन्होंने प्रास्ताविक परिचय के साथ-साथ ऐतिहासिक ग्रन्थों के आधार पर महमूद बेगड़ा का वंश-परिचय तथा डा० एच० डी० सांकलिया के दोहाद के शिलालेख का अनुवाद और अनुक्रमणिका आदि से इसे समन्वित करके पुस्तक की उपयोगिता को संवर्धित कर दिया है।

"राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला" के ८ वे पुष्प के रूप में प्रस्तुत रचना को प्रकाशित करते हुए हमें परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इति।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य संचालक
राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर,
. जयपुर

जयपुर,
ज्येष्ठ कृष्णा ७
वि० सं० २०१३

प्रास्ताविक परिचय



डाक्टर बूलर ने सन १८७५ ई० में बम्बई सरकार के लिये 'राजविनोद' नामक काव्य की एक हस्तलिखित प्रति* प्राप्त की। इस काव्य में अहमदाबाद के सुलतान महमूद बेगडा के जीवन चरित्र का वर्णन मिलता है।† यह ऐतिहासिक काव्य अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। डाक्टर बूलर ने 'संस्कृत के हस्तलिखित ग्रन्थों की रिपोर्ट (१८७४ ७५)' में इस काव्य को एक साहित्यिक विनोद बतलाते हुए इस प्रकार लिखा है —"उदयराज विरचित 'राजविनोद' अथवा 'श्री ... पातसाहि श्री महमूद सुरत्राणचरित्र' जिसमें अहमदाबाद के सुलतान महमूद बेगडा का जीवन-चरित्र वर्णित है एक विशुद्ध साहित्यिक विनोद है। प्रयागदास के पुत्र और रामदास के शिष्य उदयराज ने महमूद की प्रशंसा करते हुए उसको महान् पराक्रमी, प्रतापी और हिन्दू धर्म

---

* प्रति सं० १८। १८७४–७५ ई० (मा० आ० रि० इ०)

† बेगडा का जन्म १४४५ ई० में हुआ था। उसका नाम फतहखाँ था। वह १४५८ से १५११ ई० तक ५४ वर्ष गुजरात का सुलतान रहा। उसके समय की कुछ मुख्य मुख्य घटनायें इस प्रकार हैं —

१४६७–७० ई० जूनागढ का युद्ध।

१४७२ ई० कच्छ और सिंध पर आक्रमण।

१४७३ ई० द्वारका पर अधिकार, मन्दिर का तोडना।

१४६५ ई० महमूद द्वारा बहरोट पारनेर के किला और दम्मन के बन्दरगाह पर अधिकार करने के लिये सेना भेजना। महमूद के सेनानायक अलपखान द्वारा संजान की पारसी बस्ती का ध्वंस (१४६५ अथवा १४९१ ई०)।

१४७९ ई० वातरक पर महमूदाबाद का बसाना। रानपुर विजय।

१४८२–८४ ई० चम्पानेर की लडाई। पावागढ का २० महीने तक घेरा।

१४८४ ई० (नवम्बर) पावागढ पर आक्रमण और विजय।

१४९१–९४ ई० बहमनी राज्य के बहादुर गिलानी द्वारा गुजरात के समुद्री किनारे पर हमले। गिलानी को पराजित करके मार डाला गया।

१५०८ ई० खान देश के तख्त पर महमूद द्वारा अपने आदमी को बिठाना।

१५०८–९ ई० चौल और दीव पर पुर्तगालियों से झगडा।

१५११ ई० (२३ नवम्बर) महमूद की ६७ वर्ष की अवस्था में मृत्यु। उसकी मृत्यु के थोडी ही देर पहले महमूद को दिल्लीश्वर की ओर से भेंट प्राप्त हुई। (पृ० २०७)। (कोमिसरियट—History of Gujrat Vol I (1938) P 130)

का रक्षक बतलाया है, मानो वह कोई कट्टर हिन्दू राजा हो। कवि ने क्षत्रिय राजा के समान वर्णन करते हुए लिखा है कि वह राजन्यचूडामणि है, श्री और सरस्वती दोनों उसकी सेवा करती है, दानवीरता में वह कर्ण से भी बढ कर है और उसके पूर्वज मुजफ्फरशाह ने श्रीकृष्ण की कलिकाल के विरुद्ध सहायता की थी। यह चरित्र सात सर्गों मे वर्णित है। पहले सर्ग मे २६ श्लोक है और इसमे सुरेन्द्र सरस्वती-सम्वाद रूप से काव्य की भूमिका बाँधते हुए यह वर्णन किया है कि ब्रह्मा ने इन्द्र को सरस्वती की खोज करने के लिये भेजा। इन्द्र ने इसे महमूदशाह के सभामण्डप में पाया। सरस्वती ने अपने वहाँ रहने का कारण बताते हुए महमूद का कीर्तिगान किया। दूसरे सर्ग का नाम 'वंशानुकीर्त्तन' है। इसमे ३१ श्लोक है और महमूदशाह की वंशपरम्परा का वर्णन है। इसमें दिया हुआ वंशानुक्रम इतिहास के अनुसार सही ज्ञात होता है। "सभा समागम नामक तीसरे सर्ग मे ३३ श्लोकों में महमूद के सभा प्रवेश का वर्णन है। दरबार मे कौन-कौन से राजा और सभ्य उपस्थित होते थे, इसका वर्णन सर्वावसर नामक चतुर्थ सर्ग मे ३३ श्लोकों मे किया गया है। पाचवें सर्ग में सङ्गीतरङ्गप्रसङ्ग का ३५ श्लोकों मे वर्णन है और छठे सर्ग मे विजययात्रोत्सव वर्णन के ३६ श्लोक है। सातवें सर्ग का नाम 'विजय लक्ष्मीलाभ' है और इसमे ३७ श्लोकों में महमूद के सामरिक पराक्रम का वर्णन है। पातशाह की उदारता के अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन से ज्ञात होता है कि कवि को उसके दरबार मे पर्याप्त दक्षिणा मिली होगी अथवा मिलने की आशा रही होगी।"

अहमदाबाद के प्रसिद्ध सुलतान महमद बेगडा (१४५८ ई० १५११ ई०) के दरबारी कवि उदयराज विरचित ऐतिहासिक काव्य की इस दुर्लभ प्रति* पर यह टिप्पणी पर्याप्त नहीं है। सामान्यत गुजरात के इतिहास और विशेषत गुजरात के सुलतानों के इतिहास में रुचि रखनेवाले एव अन्य साहित्यिक अभिरुचि वाले विद्वानों के परिचय के लिए यह दुष्प्राप्य ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। इसकी प्रति† भाण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना से प्राप्त की गई है और इसी सस्थान के सग्रहाध्यक्ष श्री पी० के० गोडे के मन्तव्यानुसार इस काव्य को आवश्यक टिप्पणियो सहित प्रस्तुत किया गया है।

राजविनोद के प्रत्येक सर्ग के अन्त मे निम्नलिखित पद्य दिया हुआ है जिसमे सुलतान महमूद के वंशानुक्रम का वर्णन है —

श्रीमान् साहिमुदफ्फर. समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति—
स्तस्मात्साहि महम्मदस्समभवत्साहिस्ततोऽहम्मद· ।
जात साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
स्यात श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात्तदीयात्मज ॥

एपिग्राफिका इण्डिका जि० २४ भाग ५, जनवरी १९३८ पृ० २१२ पर डाक्टर एच डी

---

* आफेट ने 'राजविनोद' की भाण्डारकर सग्रहालयवाली प्रति के अतिरिक्त और किसी प्रति का उल्लेख नही किया है। (C C I 502) कृष्णमाचारि ने भी History of Classical Sanskrit Literature, Madrass, 1937 P 271, 433 मे इसी एक प्रति का उल्लेख किया है।

† गवर्नमेन्ट मैनिस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, भा ओ रि इ पूना, स० १८। १८७४-७५।

साकलिया द्वारा सम्पादित दोहाद का एक शिलालेख प्रकाशित हुआ है। महमूद बेगडा का यह लेख विक्रम सम्वत १५४५ शक सम्वत १४१० (१४८८ ई०) का है। इस लेख में दिए हुए वंशानुक्रम और ऊपर दिये हुए पद्यान्तर्गत क्रम को इस प्रकार मिलाया जा सकता है —

राजविनोद (१४५८–१५११ ई०)	दोहाद का शिलालेख (१४८८ ई०)
१—साहि मदफर (१३९२ १४१० ई०)	१—शाहिमुदाफर
२—साहि महम्मद (१) का पुत्र (तस्मात्समभवत)।	२—महम्मद (१) का पुत्र (तत्पुत्र)।
३—साहि अहम्मद (१४११–१४४२ ई०) इसके बाद (तत)।	३—अहम्मद (इसका वंशज) तस्यान्वये प्रसूत
४—साहि महम्मद (३) का पुत्र (तस्य तनज जात) १४४२ १४५१ ई०।	४—साह महम्मद (३) का पुत्र (तस्माद भूत)।
५—महमूदसाहि (४) का पुत्र 'तदीयात्मज (१४५८ १५११ ई०)।	५—साह महमूद अन्वय जात

इन वंशावलियों से विदित होगा कि चार पीढी के नाम तो ज्यों के त्यों मिलते हैं केवल महमूद (बेगडा) को राजविनोद में तो महम्मद का पुत्र लिखा है जीयात्तदीयात्मज और दोहाद के शिलालेख में उसको साह महम्मद का वंशज तस्यान्वय जात लिखा है। डाक्टर साँकलिया ने मुसलमान इतिहासकारों के आधार पर इन सुलतानों का वंशानुक्रम* इस प्रकार लिखा है—(१) मुजफ्फरशाह (मुजफ्फर १) २—अहमदशाह (अहमद), (३) उसका पुत्र मुहम्मदशाह (मुहम्मद), (४) उसका पुत्र कुतुबुद्दीन (कुतुबुद्दीन अहमदशाह) (५) दाऊद और (६) महमूद १ मुहम्मदशाह का द्वितीय पुत्र।

सम्वत् १५८७ में पण्डित विवेकधीरगणि नामक जैन विद्वान ने शत्रुञ्जयतीर्थोद्धार प्रबन्ध नामक एक ऐतिहासिक प्रबन्ध की रचना की है जिसका सम्पादन मुनि श्रीजिनविजयजी ने करके सम्वत १९७३ में भावनगर की जैन आत्मानन्द सभा द्वारा प्रकाशित कराया है। सम्वत् १५८७ में चित्तौड के रहनेवाले ओसवाल जाति के कर्माशाह ने लाखों रुपये खर्च करके शत्रुञ्जय के मुख्य मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया और उसका प्रतिष्ठा महोत्सव किया। उस समय वहाँ पर गुजरात के सुलतान बहादुरशाह का राज्य था। इसी बहादुरशाह की आज्ञा प्राप्त करके यह जीर्णोद्धार कार्य सम्पन्न किया गया था। इसलिये इस ऐतिहासिक प्रबन्ध में गुजरात के इन सुलतानों का संक्षेप में वंश वर्णन दिया गया है। बहादुरशाह जिसके समय में जीर्णोद्धार कार्य सम्पन्न हुआ, प्रस्तुत राजविनोद काव्य में वर्णित महमूदशाह अर्थात महमूद बेगडा का पौत्र था। इसलिये इसमें इसके वंश का उल्लेख होना स्वाभाविक है। इस ऐतिहासिक प्रबन्ध में गुजरात के सुलतानों के वंशानुक्रम के विषय में निम्नलिखित श्लोक मिलते हैं —

---

* एपिग्राफिया इण्डिका जनवरी १९३८ पृ० २१४।

पीरोजशाहेः समयेऽस्य जज्ञे श्रीगूर्जरत्रा भुवि पादशाहिः ।
मुज्जफुराह्वः(१)रगुणाब्धिचन्द्रमितेषु (१४३०) वर्षेषु च विक्रमार्कात् ।।१४।।

शाहिमदशाहिर्जज्ञे(२) तत आशेष्वब्धिचन्द्रमितवर्षे (१४५४)
दिग्रसवेदेन्द्वब्दे (१४६८) योऽस्थापयदहिमदावादम् ।।१५।।

महिमुन्द(३)कुतुबदीनी(४) शाहिमहिमुंद(५)वेगडस्तदनु ।
यो जीर्णदुर्गचम्पकदुर्गौ जग्राह युद्धेन ।।१६।।

उल्लास २, पृ० १३ ।

इतिहास के विशेषज्ञ इन वंशावलियों की छानबीन करके इन पर विशेष प्रकाश डालेंगे ।

राजविनोद महाकाव्य का रचयिता उदयराज अवश्य ही महमूद का दरबारी कवि था क्योंकि उसने इस काव्य में उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है । यह विचारणीय है कि धार्मिक कट्टरता के लिये प्रसिद्ध महमूद ने* उदयराज जैसे हिन्दू पण्डित को अपने आश्रय में कैसे रक्खा । यों तो इस काव्य के रचनाकाल का निर्धारण करने के लिये यह कहा जा सकता है कि महमूद के शासन काल १४५८ ई० से १५११ ई० के बीच में ही यह लिखा गया था परन्तु अवश्य ही यह उस समय रचा गया होगा जब महमूद का भाग्य उदय के शिखर पर पहुँच चुका था । प्रस्तुत काव्य के चतुर्थ सर्ग में उन सभी राजाओं का वर्णन आया है जिनको महमूद ने अपने आधीन कर लिया था । इसके अतिरिक्त अलग अलग राजाओं के पद और सम्मान आदि का भी इस सर्ग के पद्यों से पता चलता है —

"राज्ञोऽस्य वेत्रधरदत्तपदावकाशान्देशाधिपान् सदसि कृतप्रवेशान् ।"

१, स० ४

इस प्रसङ्ग में मालवराज और दक्षिणनृप का वर्णन इस प्रकार है.—

'वेषं विशेषरुचिरं दधतादरेण हस्तारविन्दसमुदञ्चितचामरेण ।
राजा विराजतितरां परिहृष्यमानो गोष्ठीषु दक्षिणनृपेन विचक्षणेन ।।१०।। स० ४.

एतस्य चण्डभुजदण्डपराक्रमेण नि शेषखण्डितरणाङ्गणशौण्डभावः ।
सर्वस्वमेव निजजीवितरक्षणाय दण्ड समर्प्पयति मालवमण्डलेशः ।।११।। स० ४

फिर ७ वे सर्ग मे 'मालव' के लिए लिखा है —

"त्यक्त्वा लुठितदेशकोशविषयो द्रागदुर्गमानग्रह
राजन् जीवितमात्रलाभमधुना काङ्क्षत्यसौ मालव. ।।२६।।

सम्भवत दक्षिण के निजामशाह पर जब मालवा के महमूद खिलजी ने १४६२-६३ ई० म हमला किया तब सुलतान महमूद (बेगडा) ने जो मालवा के विरुद्ध सैनिक सहायता दी थी,

* महमूद ने अपने आज्ञाकारी गिरनार के माण्डलिक राजा को इस्लाम धर्म ग्रहण करने के लिये बाध्य किया । (देखो डा एस के बनर्जी कृत 'हुमायू बादशाह' संस्करण १९३८ पृ० ११२ और कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भा० ३, पृ० ३०५) ।

यहाँ उसी से अभिप्राय है, यदि यह सच है तो यह काव्य १४६३ ई० के बाद का रचा हुआ होना चाहिए ।

इसी चतुर्थ सर्ग के बारहवें श्लोक में मेवाड़ के राणा कुम्भा का वर्णन है —

"य पार्थिव खलु कुम्भकर्ण कर्णेन वर्णमुचित सहते तुलाया ।
सोऽय करोति महमूदनपस्य सेवा दण्डे वितीर्णवरभूरिसुवर्णभार ॥१२॥

इसके अतिरिक्त सातवें सर्ग में भी मेदपाट के राजा का जिक्र है । इसमें स्पष्ट है कि महमूद और राणा कुम्भा समकालीन थे । राणा कुम्भा* ने १४३३ से १४६८ ई० तक राज्य किया था । इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि "राज विनोद" का रचना काल १४६२ से १४६६ के बीच में है ।

दोहाद के शिलालेख (१४८८ ई०) में बहुत सी उन घटनाओं का भी उल्लेख मिलता है जिनका राजविनोद में कोई वर्णन नहीं है । यदि राजविनोद के रचना काल के विषय में उपरोक्त अनुमान ठीक मान लिया जाय तो इसका समाधान सहज ही में हो सकता है । क्योंकि शिलालेख का समय राज विनोद के समय से लगभग २० वर्ष बाद का है जिसमें महमूद के १४५८ ई० से १४८८ ई० तक ३० वर्षों के राज्यकाल का वर्णन मिलता है ।

दोहाद के शिलालेख की भाषा, शैली और विषय को देखते हुए यह भी एक धारणा बनती है कि सम्भवतः राजविनोद नामक ऐतिहासिक काव्य और दोहाद के शिलालेख, दोनों का रचयिता एक ही हो । इन दोनों की समानता के कुछ अंश इस प्रकार है —

---

* महाराणा कुम्भा वि० सं० १४९० (ई० सं० १४३३) में चित्तौड़ के राजसिंहासन पर बैठा । पिछले दिनों में महाराणा को उन्माद रोग हो गया था । एक दिन वह कुम्भलगढ़ में मामादेव (कुम्भ स्वामी) के मन्दिर के पास जलाशय के तट पर बैठा हुआ था उस समय उसके राज्यलोभी पुत्र ऊदा (उदयसिंह) ने कटार से उसे अचानक मार डाला । यह घटना वि० सं० १५२५ (ई० सं० १४६८) में हुई । (श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत 'राजपूताने का इतिहास' पृ० ६३३–६३४) इस सम्बन्ध में देखिए—मुहणोत नैणसी की ख्यात, पत्र १२ पृ० १ । वीर विनोद, भा० १ पृ० ३३४ ।

इतिहास और शिलालेखों के आधार पर महमूद और राणा कुम्भा में कोई लड़ाई होना अथवा राणा का उसके आधीन होना नहीं पाया जाता है । महमूद के पूर्वज कुतुबुद्दीन से अवश्य ही कुम्भा का युद्ध हुआ था जबकि उसने मालवा के महमूदशाह के साथ मिल कर चित्तौड़ पर आक्रमण किया था । इस युद्ध में कुतुबुद्दीन और मालवा का सुलतान दोनों ही राणा से हार कर अपने अपने देशों को लौट गए थे । (देखिए—वि० सं० १५१७ (ई० सं० १४६०) माग० बु० ५ का कीर्तिस्तम्भप्रशस्ति लेख) ।

प्रस्तुत काव्य में कवि परम्परा के अनुसार ही कवि ने अपने प्रशंसनीय सुलतान के समकालीन, प्रसिद्ध और पराक्रमी कुम्भा का उसके आधीन होना लिख दिया है । डा० सांकलिया द्वारा सम्पादित दोहाद के शिलालेख में भी कुम्भा का महमूद के साथ कोई सम्बन्ध वर्णित नहीं है । (सं०) ।

उदयराजकृत राजविनोद	दोहाद का शिलालेख
१—काव्य पद्यात्मक है।	१—लेख पद्यात्मक है।
२—काव्य की भाषा संस्कृत है।	२—लेख संस्कृत भाषा में है।
३—काव्य की हस्तलिखित प्रति डा० बूलर ने गुजरात में प्राप्त की।	३—लेख बड़ौदा से उत्तर-पूर्व में ७७ मील पर दोहाद में प्राप्त हुआ।
४—राजविनोद की हस्तलिखित प्रति में सन् सम्वत् नहीं दिया हुआ है परन्तु लेख व पृष्ठ मात्रा के आधार पर १५०० और १६०० ई० के बीच की लिखी ज्ञात होती है।	४—शिलालेख विक्रम सम्वत् १५४५ शक सम्वत् १४१० (२४ आपरेल, १४८८ ई०) का लिखा हुआ है।
५—राजविनोद महमूद बेगडा के शासन-काल (१४५८ से १५११ ई०) में ही रचा गया था। अथवा, जैसे कि ऊपर अनुमान लगाया गया है १४६३ से १४६९ के बीच में लिखा गया था।	५—शिलालेख भी महमूद बेगडा के शासन काल में ही उसके राज्यारोहण के समय से लगभग ३० वर्ष बाद १४८८ ई० में लिखा गया था।
६—राजविनोद सरस्वती वन्दना से आरम्भ होता है। प्रथम सर्ग को सुरेन्द्र सरस्वती-सम्वाद नाम दिया गया है। वास्तव में, सम्पूर्ण काव्य ही सरस्वती के द्वारा अभिगीत है। 'महमूदपातसाहे अभिनववर्णने प्रसक्ता सरस्वती सरसपदानि व्यतानीत् ॥३२॥ स० ४।	६—शिलालेख भी काश्मीरवासिनीदेवी अर्थात् सरस्वती की वन्दना से प्रारम्भ होता है। (डा० साँकलिया का नोट एपि० इंडिका जन० १९३८ पृ० २१३)। डा० साँकलिया का कथन है कि यह देवी ब्राह्मी अथवा सरस्वती प्रतीत होती है। राजविनोद में भी सरस्वती को 'ब्राह्मि' नाम से सम्बोधित किया है। (पद्य २ सर्ग २रा)
७—राजविनोद में दिया हुआ बेगडा का वंशानुक्रम इस प्रकार है— मुदफ्फर, महम्मद, (१) अहम्मद, महम्मद, (२) महमूद। यह वंशानुक्रम मुसलमान इतिहासकारों के आधार से भिन्न है।	७—शिलालेख में दिया हुआ वंशानुक्रम भी इस प्रकार है— मुदाफर, महमद, (१) अहमद, महम्मद, (२) महमूद। यह वंशानुक्रम भी मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा दिये हुये वंशानुक्रम से भिन्न है।
८—राजविनोद के दूसरे सर्ग के ३० पद्यों में महमूद के पूर्वजों के पराक्रम का वर्णन	८—शिलालेख में कुल २६ पद्य है जिनमें से पहले ६ पद्यों में तो महमूद के पूर्वजों

उदयराजकृत राजविनोद	दोहाद का शिलालेख
है। शेष सर्गों में स्वयं महमूद के पराक्रमों (१४५८ से १४६९ ई० तक) का वर्णन है।	का वर्णन है और शेष २० पद्यों में महमूद के राज्यकाल में १४५८ ई० से १४८८ ई० तक की घटनाओं का वर्णन है।
९—प्रथम सर्ग के तीसरे पद्य में कवि ने लिखा है कि "पूजोपहाराय मयोपनीतं कवित्व पुष्पाञ्जलिरेष तस्य ।" इससे विदित होता है कि महमूद की कृपा प्राप्त करने के लिये (सम्भवतः) उसके दरबार में प्रवेश पाने के लिये ही यह काव्य लिखा गया था।	९—शिलालेख की रचना का प्रकार प्रायः राजविनोद के समान ही है। ऐसा प्रतीत होता है कि राजविनोद के कर्ता ने ही बहुत समय तक सुलतान की कृपा का उपभोग कर चुकने के बाद इसकी रचना की थी। शिलालेख में बहुत से ऐसे पुरुषों और स्थानों का उल्लेख है जिनका राजविनोद में वर्णन नहीं है। अतः स्पष्ट है कि यह राजविनोद के रचना काल से शिलालेख के समय (१४८८ ई०) तक की घटनाओं का वर्णन उसी कवि ने इस लेख में किया है।
१०—राजविनोद में महमूद के पूर्वज अहमद को अहमदेन्द्र लिखा है। (प० ५ व ६)	१०—शिलालेख में भी अहमद को अहमदेन्द्र लिखा है। (पद्य ८)
११—राज विनोद सर्ग ३ पद्य १८ में महमूद द्वारा पावागढ़ पर आक्रमण करने का वर्णन है— "यस्य प्रतापभरपावकसङ्गमेन बध्दस्य पावकगिरेः शिखरान्तरेषु। प्रक्षरत जज्जरसुधाविधराणि भस्म राशिप्रभाभि रिपवो निजमन्दिराणि ॥	११—शिलालेख में पावकदुर्ग पर (नवम्बर १४८४ ई०) चढ़ाई का उल्लेख भी किया है— "जित्वा पावक (दुर्ग) पित्राण्ड्य प्रतापतापूर्व ॥१०॥ महमूदमहीपालप्रतापेनैव पावकेन। प्रविश्य ज्वालितं सर्व वरिवृन्द पतङ्गवत्॥११॥ जीवनं तत्पति (बद्धवा) दुर्ग नीत्वा महाबल। चकार तत्पुरे राज्यं महमूदमहीश्वरः ॥१२॥ डा० साँकलिया ने लिखा है कि पावागढ़ लेने के लिये अहमद का प्रयत्न असफल हुआ था। (एपि० इण्डि० जन० १९३८ पृ० ३२१)

उदयराजकृत राजविनोद	दोहाद का शिलालेख
१२—मुदफ्फर के पुत्र महमद के विषय मे वर्णन करते हुए राजविनोद (सर्ग २ प० १०) मे नन्दपद और पल्लिवन का उल्लेख है — "आद्याप्यहो नन्दपदाधिनाथा भल्लूकवत्पल्लिवने भ्रमन्ति" ॥६॥ फिर, नन्दपद के राजाओ के विषय मे लिखा है — 'विभिन्नप्राकारसौधस्फुरद्देहमाला:' यहाँ 'विभिन्न प्राकार' पद से विदित होता है कि पल्लिवनान्तर्गत नन्दपद मे उस समय कोई किला भी था । यहाँ मुदफ्फर के पुत्र महम्मद के समय के पल्लिवन मे तात्पर्य्य है ।	१२—दोहाद शिलालेख के पद्य १८ मे पल्लिदेश का उल्लेख है । इस देश पर बेगडा सुलतान के मुख्य मन्त्री इमादल का शासन था— "पल्लीदेशाधिकारं च पुण्यं पुण्यमतिस्तदा दुष्टारिहृदये राज्यं दुर्गमेनं चकार वै ॥१८॥" डा० साँकलिया का मत है कि गोवरा तालुका में पाली नामक स्थान ही पल्लि देश है । पल्लीवन और पल्लिदेश एक ही है । यहाँ बेगडा के समय के पल्लि देश से तात्पर्य है ।
१३—राजविनोद मे 'गायासदीन' उपाधि का प्रयोग महमूद बेगडा के पिता महम्मद के लिए हुआ है.— "गायासदीन इति साहि महंमदेन्द्र."	१३—दोहाद शिलालेख के पद्य ७ में—"श्री ग्यास (दीन) प्रभो अन्वये साह श्री महमूद वीर नृपति' जात" लिखा है । यह भी महमूद के पिता ही की उपाधि है, महमूद की नही, जैसाकि पद्य पढने मे प्रतीत होता है । महमूद को सिक्को और लेखो मे 'नासिर उद्दुनियाँ वा-उद्-दीन' (ससार और धर्म का रक्षक) लिखा है । अहमद (१) के पुत्र महमद (२) को भी सिक्को में गायासउद्दीन लिखा है । (एपि० इन्डि० जन० १९३८ पृ० २१६)

इस प्रकार दोहाद के शिलालेख और राजविनोद काव्य की तुलना करने से हम नीचे लिखे निष्कर्षो पर पहुँचते है —

(१) प्रयागदास का पुत्र उदयराज महमूद बेगडा (१४५८-१५११ ई०) का हिन्दू राजकवि था ।

(२) उदयराज ने यह सप्तसर्गात्मक 'राजविनोद महाकाव्य' सस्कृत मे लिखा है और इसमें महमूद बेगडा व उसके पूर्वजो का वर्णन है । यह काव्य बेगडा के राज्य के पहले दस वर्षो (१४५८-१४६९) मे लिखा गया था ।

(३) इसके बाद भी दो दशकों तक यह महमूद के दरबार में ही रहा और उसके पूर्वजों व उसके पराक्रमों के वर्णन में अभिरुचि रखता रहा।

(४) राजविनोद और दोहाद के शिलालेख की तुलना से यह धारणा बनती है कि यह शिलालेख इसी कवि की पूर्व रचना की संक्षिप्त और सम्पूर्ण आवृत्तिमात्र है।

'एपिग्राफिआ इण्डिका' जनवरी, सन १९३८, भाग २४ अंक ४ में यह लेख इसके मूल सम्पादक डाक्टर एच० डी० सांकलिया की टिप्पणी सहित प्रकाशित हुआ है जो बहुत महत्त्वपूर्ण है। उक्त लेख को ज्यों का त्यों एवं डाक्टर सांकलिया की टिप्पणी का अनुवाद, आवश्यक टिप्पणियों सहित, इसी पुस्तक में पृष्ठ ७३ में प्रकाशित किया जा रहा है।

जैसा कि ऊपर सूचित किया गया है इस काव्य की एकमात्र प्राचीन हस्तलिखित प्रति बम्बई सरकार के संग्रहालय की सम्पत्तिरूप है जो पूना के भाण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट में सुरक्षित है। इस प्रति के कुल २८ पत्र हैं। इसके लिखे जाने का कोई समयोल्लेख प्रति में नहीं दिया गया है। इससे यह तो निश्चित नहीं कहा जा सकता कि यह किस समय में लिखी गई होगी परन्तु प्रति की जीर्ण शीर्ण अवस्था देखते हुए प्रतीत होता है कि यह प्रायः रचनाकाल से बहुत पीछे लिखी हुई नहीं है, और यह तो निश्चित ही है कि उसी शताब्दी में लिखी हुई तो अवश्य है। इसको किसी राम नामक लिपिकार ने अपने आत्मज के पठनार्थ लिखा है। यह कथन अन्तिम उल्लेख से ज्ञात होता है। पाठकों के अवलोकनार्थ, प्रति के अन्तिम पत्र का चित्र भी अन्यत्र दिया जाता है जिससे प्रति की लिपि आदि का साधारण परिचय मिल सकेगा। प्रति का पाठ प्रायः शुद्ध है। पूरे काव्य में कोई ४५ ही स्थल ऐसे दृष्टिगोचर होते हैं जो अशुद्ध कहे जा सकते हैं। इससे मालूम होता है कि लिपिकार श्रीराम स्वयं अच्छा संस्कृत का विद्वान् होगा।

महमूद बेगड़ा गुजरात के सुलतानों में प्रसिद्ध और लोकप्रिय सुलतान हुआ है। सभी हिन्दू अथवा मुसलमान इतिहास लेखकों ने समान रूप से इसकी प्रशंसा लिखी है। इन्हीं के आधार पर अंग्रेज इतिहासकारों ने भी इसके इतिहास पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला है। मूलतः यह सुलतान राजपूत वंश का था और इसके पूर्वजों ने किस प्रकार सत्ता हाथ में लेकर गुजरात का स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया इसका विवरण 'मीराते सिकन्दरी' 'मीराते अहमदी' 'तवारीखे मोहम्मदशाही' कामिसरियट की 'हिस्ट्री ऑफ गुजरात' व किन्लॉक फार्बस कृत 'रासमाला' आदि पुस्तकों के आधार पर संक्षिप्त रूप में 'वंश परिचय' शीर्षक लेख में अंकित किया गया है। इस लेख में आवश्यक पाद टिप्पणियों के साथ राजविनोद महाकाव्य के वे श्लोक भी उद्धृत किए गए हैं जिनसे कुछ-कुछ ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जायगा कि राजविनोद महाकाव्य केवल साहित्यिक विनोद न होकर अपना ऐतिहासिक महत्त्व भी रखता है।

इस महाकाव्य के कर्त्ता कवि उदयराज के विषय में अभी और अधिक विशद परिचय प्राप्त नहीं है। इति को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि यह सुलतान का समकालीन

कवि था। सम्भव है, उसके दरबार मे भी उसे स्थान प्राप्त हो। प्रस्तुत काव्य के द्वारा कितनी ही ऐतिहासिक घटनाओं व महमूद के चरित्र पर तो प्रकाश पडता ही है, साथ ही अपनी कृति के लिए समयानुसार विषय चुनकर सस्कृत काव्य परम्परा की शृखला में एक कडी जोडने का श्रेय भी कवि को अवश्य ही प्राप्त है।

इस कृतिके इस प्रकार सपादन और प्रकाशन मे राजस्थान पुरातत्त्वमन्दिर के सम्मान्य संचालक आचार्य श्रीजिनविजयजी की ही प्रेरणा और मार्ग-दर्शन मुख्यत कारणभूत है, अत इनके प्रति आन्तरिक कृतज्ञभाव प्रकट करना अपना परम कर्त्तव्य मानता हूँ।

यदि मध्यकालीन इतिहास के विशेषज्ञ इस ऐतिहासिक काव्य से अपनी गवेषणा में कोई सहायता प्राप्त करके इतिहास के तथ्यो पर अधिक प्रकाश डाल सकेंगे तो इसके प्रकाशन का श्रम सफल समझा जा सकेगा।

गोपालनारायण



•

महमूदबेगड़ा का वंश-परिचय

गुजरात के राजपूत सुलतानों का मूलपुरुष जिसने इस्लाम धर्म अंगीकार किया था उसका नाम सहारन था। बाद में उसकी उपाधि व उपनाम वजीर-उल-मुल्क हुआ। वह टाँक (तक्षक) जातीय सूर्यवंशी क्षत्रिय* था इसीलिए गुजरात के इतिहास में इसके वंशजों का 'राजपूत सुलतान' नाम से उल्लेख किया गया है।

भगवान श्री रामचन्द्र जी से कितनी ही पीढियों बाद मुहुस हुआ। उसी के कुल में क्रम से कुलभ, नावल, भूक्त, मडन, भुलाहन, नीलाहन, त्रिलोक, कुँअर, वरसप, हरीमन, कुँअरपाल, हरीन्द्र, हरपाल, क्रिन्द्रपाल, हरपाल और हरचन्द हुए। सहारन हरचन्द का पुत्र था और थानेश्वर के पास एक गाँव में रहता था। उसके छोटे भाई का नाम साधु था। ये दोनों भाई जमींदारी का काम करते थे।

एक बार दिल्ली के बादशाह मुहम्मद तुगलक के काका का लड़का शाहजादा फीरोजशाह शिकार को निकला और अपने साथियों से बिछुड़ कर सहारन के गाँव के पास जा पहुँचा। उस समय सहारन, उसका छोटा भाई साधु और दूसरे राजपूत एक जगह बैठे हुए थे। एक राजपूत ने फीरोज के पैर में राजचिह्न पहचान लिया। सहारन और साधु उसे अपने घर ले गए और उसका आगत स्वागत किया। साधु की बहन ने उसे शराब पिलाई और उसी की लहर में फीरोज ने अपना परिचय दे दिया। साधु की बहन और फीरोज की शादी हो गई। तदनन्तर, ये दोनों भाई फीरोजशाह के साथ दिल्ली चले गये और इसलाम धर्म को ग्रहण कर लिया। बादशाह ने सहारन को वजीर उल मुल्क का खिताब दिया। वजीर उल-मुल्क के जफरखाँ और शमशेर खाँ नामक दो लड़के हुए। जफर खाँ ही आगे चल कर मुजफ्फर खान के नाम से इस वंश का गुजरात का प्रथम शासक हुआ।

बादशाह के कहने से सहारन और साधु ने कुतुब उल आफताब हजरत मुखदुम जहानिआँ से इसलाम धर्म की दीक्षा ली थी। सहारन का पुत्र जफर खाँ भी इन्हीं महात्मा का शिष्य था। एक दिन हजरत के मठ पर कुछ फकीर इकट्ठे हुए। उस समय महात्मा मुखदुम के पास खाने पीने का कुछ भी सामान नहीं था। जफर खाँ को यह बात मालूम थी। वह तुरन्त ही अपने घर से व बाजार से मिठाइयाँ आदि ले आया और सभी फकीरों को भोजन करा दिया। फकीरों ने तृप्त होकर जोर से 'अल्लाहो अकबर' का नारा लगाया। जब मुखदुम जहानिआँ को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने जफर खाँ को बुलाकर प्रसन्नता पूर्वक कहा 'जो तुमने फकीरों को भोजन कराकर तृप्त किया है उसके बदले में मैं तुम्हें सम्पूर्ण गुजरात की हुकूमत प्रदान करता हूँ।' इस प्रकार जफरखाँ को फकीर का वरदान प्राप्त हुआ।

---

*वंशस्सहस्रांशुभवो जगत्यां जागत्यसौ राजभिरर्चनीय ।
मर्णोपमो यत्र विलावनीण श्रीमान् साहि मुदफ्फरेन्द्र ॥१॥ राजविनोद-सर्ग २

हिजरी सन् ७६३ (१३६१ ई०) में यह खबर आई कि गुजरात के सूबेदार मुकर्रर खाँ ने जो रास्ती खाँ के नाम से प्रसिद्ध था, बलवा कर दिया। उसी वर्ष के रबीउल-अव्वल महीने की दूसरी तारीख को सुलतान मोहम्मद ने जफर खाँ को एक लाल तम्बू बख्शीश किया और निज़ाम मुकर्रर खाँ को दण्ड देने के लिए गुजरात की तरफ भेजा। उसी महीने की चौथी तारीख को सुलतान मोहम्मद जफर खाँ को विदा करने के लिए होज़खास पर गया और उसके पुत्र तातार खाँ को अपने पास रखकर पुत्रवत् पालन करने का वचन दिया।

हिजरी सन् ७६४ (१३६२ ई०) में सनहुमन नामक ग्राम के पास जफर खाँ और मुकर्रर की मुठभेड हुई और इस लड़ाई में जफरखाँ विजयी हुआ। निजाम युद्ध में मारा गया और जफर ने पाटण में प्रवेश किया।

सन् ७६५ हिजरी में खान खम्भात[1] की तरफ गया और मुसलमानी रीतिके अनुसार गुजरात को अपने आधीन कर लिया।

हिजरी सन् ८०६ (ई० स० १४०३) में मुजफ्फरशाह ने तातार खाँ को गद्दी सौंप दी और उसको नासिरउद्दीन मोहम्मद शाह की पदवी धारण कराई। वह स्वयं आशावल कसबेमें आकर रहने लगा और सब झंझट छोड दिया।

सुलतान मोहम्मदशाह इसी वर्ष के जमादिउल आखिर महीने में आशावल कसबे में तख्त पर बैठा। एक सप्ताह बाद ही उसने नाँदोल[2] के हिंदुओ पर चढ़ाई की और उनको हराया। फिर, उसने अपने लश्कर को साथ लेकर दिल्ली की ओर कूच किया। यह खबर सुनकर इक़बाल खाँ के मन में बहुत संताप उत्पन्न हुआ[3]। परन्तु शअबान

(१) समुद्गिरन् कच्छमहीपु येन डिण्डीरपाण्डूनि यशासि खड्ग।
स्फूर्जद्द्विपच्छोणितपङ्कलिप्त प्रक्षालित पश्चिमवारिराशौ ॥३॥
रा० वि० सर्ग २

(२) यस्य प्रसिद्धैर्द्विरदैर्विभिन्नप्राकारसौधस्फुरदट्टमाला।
अद्याप्यहो नन्दपदाधिनाथा भल्लूकवत् पल्लिवने भ्रमन्ति ॥६॥
रा० वि० सर्ग २।

(३) तवारीख मोहम्मदशाही मे लिखा है कि फीरोज़शाह के पुत्र सुल्तान मोहम्मद की मृत्यु के बाद दिल्ली मे एक बडा विद्रोह हुआ। प्रत्येक विद्रोही सरदार दिल्ली का तख्त प्राप्त करना चाहता था।......इसी बीच मे दिल्ली का राज्य कार्यभार एक वकील (प्रतिनिधि) के रूप मे इकबाल खाँ के हाथ में आया। उस समय तातार खाँ पानीपत मे था उसको जीतने के लिए इकबाल खाँ पानीपत को रवाना हुआ। तातार खाँ अपना सब सामान किले मे रखकर लडाई के लिए तैयार हुआ और दिल्ली में घेरा डाला। तीसरे दिन इकबाल खाँ ने पानीपत का किला जीतकर तातार खाँ के सामान पर अधिकार कर लिया। तातार खाँ ने गुजरात से लश्कर लाकर दिल्ली पर चढाई करने का इरादा किया इसलिए वह अपने बाप से आकर मिला। इकबाल खाँ का वैर और दिल्ली का तख्त उसके मन से दूर न हुए। इकबाल खाँ भी उससे सशङ्क रहता था। निम्नांकित पद्य मे सम्भवत. मल्लखान से इकबालखा का ही तात्पर्य है —

के महीनेमें तातार खाँ की तबीयत एकदम बिगड़ गई और अच्छे अच्छे वैद्यों के दवा करने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ। अन्त में, तातार खाँ की मृत्यु हो गई और उसका शव पाटण में लाकर दफनाया गया।

गुजरात की हकीकत जानने वाले लोगों का कहना है कि कुछ दिखावटी मित्रों के रहने से तातार खाँ ने अपने पिता जफर खाँ को कैद कर दिया था और स्वयं मोहम्मद-शाह का नाम धारण करके गद्दी पर बैठ गया। कुछ दिनों बाद उसके पास रहनेवाले जफरखाँ के हितचिन्तकों ने उसे जहर दे दिया। इसीलिए लोग उसको 'खुदाई शहीद' (The Martyred Lord) कहते हैं। इससे भी प्रतीत होता है कि उसकी मृत्यु स्वाभाविक रूप से नहीं हुई थी।

सुलतान मोहम्मद की मृत्यु के बाद जफर खाँ फिर गद्दी पर बैठा। राज्य के नौकर चाकर सब उसके आधीन हो गए और उसने भी सबको आश्वासन दिया।

प्राचीन इतिहास लेखकों ने लिखा है कि सुलतान मोहम्मद की मृत्यु के बाद राज्य के बड़े बड़े अमीरों और अधिकारियों ने इकट्ठे होकर जफर खाँ से प्रार्थना की कि बादशाह के वंश में दिल्ली के शासन को सम्हालने वाला अब कोई नहीं रह गया है और वहाँ पर गड़बड़ी फैल रही है। गुजरात के शासन जैसे बड़े कार्य को सम्हालनेवाला आपके सिवाय अन्य पुरुष दिखाई नहीं देता है। अतः समस्त प्रजा का यह मत है कि आप गुजरात का राजच्छत्र धारण करें। इससे सबको आनन्द होगा। ऐसी इच्छा रखने वालों की प्रार्थना पर (?)बीरपुर ग्राम में हि० स० ८१० (१४०७ ई०) में सुलतान मोहम्मद की मृत्यु के तीन वर्ष और सात महीने बाद जफर खाँ ने राज्यछत्र धारण करके मुजफ्फरशाह नाम धारण किया।[1]

इस प्रकार सुलतान का पद धारण करने के पश्चात् मुजफ्फरशाह ने मालवा में धार के हाकिम अलपखान (दिलावरखाँ के पुत्र) को आधीन करने के लिए चढ़ाई की और उसको कैद करके उसके देश का शासन नुसरत खाँ को सौंप दिया।

इसी बीच में खबर मिली कि जवानपुर के सुलतान इब्राहीम ने दिल्ली पर अधिकार करने की नीयत से कन्नौज के आगे लड़ाई का निशान रोप दिया है। उस समय दिल्ली के तख्त पर सुलतान मोहम्मद का पुत्र महमूद था। उसकी सहायता करने के लिए मुजफ्फर-शाह ने दिल्ली की तरफ कूच किया। यह खबर सुनकर सुलतान इब्राहिम वापस जवानपुर चला गया। सुलतान मुजफ्फर ने उसका पीछा किया और फिर अपनी

उदित्वरा यस्य वेमौ जगत्या सहस्रभानुप्रतिमं प्रतापं।
यो मन्त्रमानाम्यमुलूम मिद्रप्रस्यम्यमुद्रजितवान् द्विपन्तम् ॥८॥
रा० वि० सर्ग २।

(१) दिल्लीपुराद् गूर्जरदेशमेत्य दधार यो मूर्ध्नि सितातपत्रम् ॥२॥
रा० वि० सर्ग २।

राजधानी को लौट आया। उस समय वह धार के पूर्व शासक अलपखाँ को अपने साथ लेता आया था।

अलपखाँ एक वर्ष तक कैद में रहा। इसी बीच में उसी के एक उमराव मूसा खाँ ने, जो माँडू का हाकिम था, मालवे के थोडे से भाग पर अधिकार कर लिया। इस पर अलपखाँ ने अपने हाथ से एक अर्जी लिखकर मुजफ्फरशाह के पास भेजी कि मेरे एक अधीनस्थ उमराव ने मालवे के कुछ हिस्से पर कब्जा कर लिया है, यदि आप मुझे इन वेड़ियो से मुक्त करके उपकार की कैद में डाल दें तो थोडे ही समय में मालवे पर पुनः अधिकार प्राप्त करके अपनी शेष आयु आपके गुलाम की तरह विताऊँगा। सुलतान ने उसपर कृपा करके मुक्त[1] ही नही कर दिया वरन् अपने पुत्र अहमदखाँ को लश्कर देकर सहायता के लिए उसके साथ भी भेजा। मूसाखाँ में सामना करने की शक्ति कहाँ थी? वह भाग गया और शाहजादा अलपखाँ को गद्दी पर विठा कर वापस आया।

मुजफ्फरशाह ने हिजरी सन् ८१२ (ई० १४०९) में कुम्भकोट के हिन्दुओ क विरुद्ध खुदावन्द खाँ की सरदारी में फौज भेजी जो विजयी होकर वापस आई।

मुजफ्फरशाह की मृत्यु के विषय में तवारीख बहादुरशाही में इतना ही लिखा है कि सुलतान की मृत्यु हि० स० ८१३ (ई० स० १४१०) में हुई। कुछ जानकार लोग इस वृत्तान्त के विषय में इस प्रकार कहते है कि आशावल कसवे के कोलियो ने सुल्तान की सत्ता को स्वीकार नहीं किया और घाट वाट पर लूट पाट करने लगे। मुजफ्फरशाह न एक हजार सिपाही साथ देकर अहमदखाँ को उन्हें दबाने के लिए भेजा। अहमदखाँ ने शहर से वाहर निकल कर विद्वानो को बुलाया और उनसे प्रश्न किया कि 'एक शख्स किसी दूसरे शख्श के वाप को विना कुसूर मार डाले तो उससे बाप के मारने का बदला लेना धर्मानुकूल है या नही?" सभी विद्वानो ने कहा "बदला लेना ठीक है।" विद्वानो की यह सम्मति एक कागज पर लिखाकर अहमदखाँ ने अपने पास रक्खी। दूसरे दिन वह अपने सवारो सहित शहर मे दाखिल हुआ और सुलतान को कैद करके मार डाला। सुलतान ने मरते समय अहमदखाँ को कुछ शिक्षाए दीं, जो इस प्रकार है:—

"पुत्र! तुमने इतनी जल्दी क्यो की? कुरान में लिखा है कि मृत्यु तो अन्त में आवेगी ही—एक घड़ी पहले या पीछे। मेरी इन शिक्षाओ पर ध्यान रखना। इनसे तुझे लाभ होगा।

जिन लोगो ने तुझे यह काम करने के लिए उकसाया है उनसे दोस्ती मत रखना वरन् उनको मार डालना क्योकि दगावाज का खून हलाल (उचित) है।

शराव पीने का शौक विलकुल मत करना क्योकि शराव के प्याले में दुःख के समुद्र का तूफान रहता है।

---

(१) मुमोच वन्दीकृतमल्पखानमनल्पवीर्य वलवत्तरो यः।
वध्यास्ततो मालवराजवन्दिमोक्षपदाख्य विरुद वहन्ति ॥४॥ रा० वि० सर्ग २।

शेख मलिक और शेर मलिक को मार डालना क्योंकि ये राज्य में बखेडा करने वाले ह ।

तू हमेशा कृपावन्त रहना । यदि तू अपने ही सुख में डूबा रहेगा तो देश में सुख चन नहीं रह सकेगा ।

गरीब दरवेशों (सन्तों) की फिकर रखना क्योंकि प्रजा के बल पर ही राजा ताज धारण किए रहता ह ।

प्रजा मूल ह और सुलतान वृक्ष ह । हे पुत्र ! मूल ही से वृक्ष मजबूत होता ह । इसलिए जहा तक हो सके वहाँ तक प्रजा से बिगाड नहीं करना चाहिए । हे पुत्र ! यदि ऐसा करोगे तो तुम अपनी ही जड काट डालोगे ।'

इसके थोडी ही दर बाद सुलतान इस क्षणभंगुर ससार को छोडकर चल बसा[1] । यह घटना सफर महीने के अन्तिम दिनों में हुई । उसको पाटण शहर के किले के अन्दर कब्र में दफनाया गया ।

मुजफ्फरशाह के बाद उसका पौत्र सुलतान मोहम्मद का पुत्र अहमदशाह— सुलतान अहमद नासिरुद्दीन अबुलफत अहमदशाह का पद धारण करके हिजरी सन ८१३, तारीख १४ रमजान के महीने में गद्दी पर बठा । उस समय उसकी आयु २१ वष की थी ।

अहमदशाह के गद्दी पर बठते ही उसके चचेरे भाई फीरोज खा ने अपना हक प्रकट किया और भडोंच में अपनेआपको सुलतान घोषित कर दिया । परन्तु अहमदशाह ने कुछ समय के लिए उसके विद्रोह को दबा दिया । इसके बाद सुलतान ने आशावल[2] ग्राम की जलवायु को अपने अनुकूल मानते हुए वहींपर १४१२ ई० में एक नगर बसाया जो उसीके नाम पर अहमदाबाद कहलाया[3] । आशावल ग्राम भी इस बडे नगर का ही एक हिस्सा बन गया । अहमदाबाद उसी समय से गुजरात के बादशाहों की राजधानी रहता आया ह ।

---

१ मुजफ्फरशाह की मत्यु २७ जनवरी सन् १४११ ई० को हुई । रासमाला पृ० ८२ ।

२ आशावल ग्राम आशा नामक भील के नाम पर बसा हुआ था । यहा पर कण सोलकी ने - कर्णावती पुरी बसाई थी । अलबेरूनी ने भी ४ शताब्दी पूव यशावल नगर का जिक्र किया ह ।

३ अहमदाबाद का कोट हि० स० ८१६ (१४१३ ई०) म बन कर तयार हुआ था । कहत ह कि इस नगर की नीव रखन में अहमद नाम क चार व्यक्तियो का हाथ था । एक, कुतुबुल मुशायख शेख अहमद खत्तु दूसरा सुलतान अहमद, तीसरा शेख अहमद और चौथा मुल्ला अहमद । पिछले दोनों व्यक्ति बहुत विद्वान थे ।

राज विनोद में अहमदशाह द्वारा नगर बसाए जान का कोई वणन नहीं ह ।

उसी वर्ष के अन्त में फीरोज़ खाँ ने फिर राजगद्दी का दावा किया और मोड़ासा के स्थान पर अपना झण्डा खड़ा किया। ईडर का राव रणमल भी उसके साथ हुआ परन्तु शाह ने रूपनगर स्थान पर उनको परास्त कर दिया और राव व फीरोज़ खाँ प्राण बचाकर पहाड़ियों में भाग गए। थोड़े दिन बाद राव में और फीरोज़ खाँ में भी अनबन हो गई और रणमल ने उसके हाथी और घोड़े छीन कर शाह को भेंट कर दिए।

मालवा के सुल्तान हुशंगशाह ने गुजरात के शत्रुओं को आश्रय दिया तथा इस देश पर १४११ ई० व १४१८ ई० में हमले किये परन्तु शाह ने उसको हर बार परास्त कर दिया। अहमदशाह ने भी १४१९ ई० में मालवा पर हमला किया और हुशंगशाह को भागकर माँडू के किले में शरण लेनी पड़ी[1]। १४२२ ई० में अहमदशाह ने फिर मालवा पर आक्रमण किया परन्तु वह माँडू के किले पर अधिकार करने में सफल न हुआ।

हि० स० ८१७ (१४१५ ई०) में अहमदशाह को गिरनार का किला देखने की इच्छा हुई इसलिए उसने विद्रोहियोंको उसी दिशा में खदेड़ा। उस समय तक सौराष्ट्र के किसी भी राजा ने मुसलमानों के आगे सिर नहीं झुकाया था इसलिए सोरठ के राजा पर शेर मलिक को आश्रय देने का बहाना बना कर शाह ने उस पर आक्रमण कर दिया। हिन्दू राजा ने सामना तो किया परन्तु मुसलमानों की युद्धप्रणाली से अनभिज्ञ होने के कारण वह जल्दी ही हार गया और भाग खड़ा हुआ। शाह ने गिरनार के किले तक उसका पीछा किया। इसके बाद कुछ वार्षिक कर देना स्वीकार करलेने पर वह अहमदाबाद लौट गया। रास्ते में उसने सिद्धपुर के देवालयों को नष्ट करके बहुत सा धन व जवाहरात प्राप्त किए।

गुजरात के बलशाली राजाओं के अतिरिक्त छोटे छोटे सरदारों को भी वश करने व उनसे कर वसूल करने में अहमदशाह को खूब प्रयास करना पडा था। ये लोग अपने अपने किलों में छुप जाते थे और जंगलों में भाग जाते थे इसलिए इनसे कर वसूल करने में बहुत कठिनाई पड़ती थी। अन्त में शाह ने इन पर वार्षिक कर नियुक्त कर दिए और इनकी जमीनें व किले इनको वापस कर दिये।

१४२६ ई० में शाह ने फिर ईडर पर विजय प्राप्त करने की इच्छा की। वह जानता था कि ईडर के राज्य पर अधिकार रखना उसके काबू से बाहर की बात थी। वह यहाँ का किला कभी भी न ले सका था; इसलिए उसने यहाँ के रावों पर आतंक जमाने के लिए हाथमती नदी के किनारे एक विशाल किला बनवाना शुरू किया। यह किला ईडरगढ़ पर झुके हुए पर्वत शिखरों पर से स्पष्ट दिखाई पड़ता था। बादशाह ने इसका नाम अहमदनगर रक्खा। तत्कालीन ईडर का राव पूँजा तो

---

१ "हुशङ्गशाहेरधिवासदुर्गमाक्रामता मण्डपमाग्रहेण।
येनोच्चकैराचकृषे करेण पदे पदे मालवमण्डलश्री ॥११॥" रा० वि० सर्ग २.

एक खडडे में गिरकर मर गया और उसके पुत्र नारायणदास ने चादी के तीन लाख टक वार्षिक कर देना स्वीकार करके सधि करली [1]। परन्तु दूसरे ही वर्ष १४२८ ई० में वह सधि टूट गई और अहमदशाह ने १४ नवम्बर को वह किला जीत लिया। वहाँ पर उसने एक विशाल मसजिद भी बनवाई।

इसके बाद (८३५ हि०, १४३१ ई०) दक्षिण के बहमनी सुलतान, सालसेट, माहिम और बम्बई द्वीप पर सुलतान ने विजय प्राप्त की। दिव, घोघा और खम्भात के द्वीप भी गुजरात के इस सुलतान के अधिकार में थे। कितनी ही बार गुजरात की विजयिनी सेना इन द्वीपों से सोने चादी और जरकशी के कपडे व जवाहरात लेकर घर लौटी थी।[2]

अहमदशाह की मृत्यु ४ जुलाई सन १४४३ ई० को अहमदाबाद नगर में हुई और उसको जामा मसजिद के सामने दफनाया गया।

गुजरात के सुलतानो में अहमदशाह को बहुत प्रजाप्रिय और न्यायी सुलतान के रूप में याद किया जाता है। एक कवि ने उसके लिए लिखा है कि "हे राजा! तेरे न्यायपूर्ण समय में किसी मनुष्य को फरियाद करने की आवश्यकता नहीं पडी[3]।" वह कविता प्रेमी और गुणग्राहक था।

अहमदशाह के बाद उसका पुत्र मुहम्मदशाह गद्दी पर बैठा। यह बहुत विलासी[4] था और राजकाज में विशेष रुचि नहीं रखता था। इसमें बादशाह के पदयोग्य बुद्धि भी नहीं थी, परन्तु वह बहुत उदार[5] था इसीलिए उसको लोग 'जरबख्श' कहते थे[6]।

गद्दी पर बैठते ही उसने ईडर पर चढाई की। राव कुछ दिनो तक तो इधर उधर पहाडियो में छिपता रहा बाद में उसने अपने अपराधो के लिए क्षमा मॉंग ली। १४४६ ई० में सुलतान ने चम्पानेर[7] के रावल गगादास पर चढाई की और उसको हराकर किले में भाग जाने के लिए बाध्य किया। परन्तु गगादासने बाद में मालवा के खिलजी सुलतान को अपनी सहायता के लिए राजी कर लिया

(१) फरिश्ता।

(२) इन सब घटनाओ का उल्लेख राजविनोद में इस श्लोक में किया गया —
विभज्य दुर्गाणि निहत्य वीरान् हठान महाराष्ट्रपतिं विजित्य।
जग्राह ग्लावग्सारजातमनर्गलय स्ववलवलीयान् ॥१२॥ रा० वि० सर्ग २

(३) कुर्वन्तु गर्व बहवोऽश्यगवमुर्व्यीदवरा श्रीगुणगौरवेण।
अहम्मदेन्द्रस्य जनानुरागसौभाग्यलेश न परे लभन्त ॥१३॥ रा० वि० सर्ग २

(४) रूपश्रियेव विजित ममभूत् मनाम् श्रीमहम्मदनराधिपतेरनङ्ग।
अस्य श्रिय खलु जगज्जयिनाऽपि तस्य वीक्ष्यैव तत्क्षणममु विवशीवभूवु ॥१६॥
रा० वि० सर्ग २

(५) रा० वि० १७,१६ सर्ग २, (६) मीरात सिकन्दरी।

(७) रा० वि० १८, स० २

तब इस नवीन शत्रु के सामने मुहम्मदशाह न टिक सका और बुरी तरह हारकर लौट गया[1]। थोड़े ही समय बाद हि० स० ८५५ (ई० १४५१-५२) के मोहर्रम मास की २०वीं तारीख को उसकी मृत्यु हो गई।[2]

मुहम्मदशाह के बाद हि० स० ८५५ (१४५१ ई०) के मोहर्रम मास की ११ वीं तारीख को उसका बड़ा शाहजादा कुतुबउद्दीन तख्त पर बैठा। उसी समय उसे मालूम हुआ कि राजधानी से कुछ ही मील की दूरी पर मालवा के सुलतान की सेना आ पहुँची है इसलिए आगे बढकर उसका सामना किया। मालवा के महमूद खिलजी को वापस लौटना पडा और कुतुब की जीत हुई। इसके बाद इन दोनो सुलतानो ने मिलकर हिन्दुओ के विरुद्ध युद्ध-योजना करते रहने की प्रतिज्ञा की और मेवाड़ के राणा कुम्भा के राज्य को आपस में बांट लेने का मनसूबा किया।

मुजफ्फरशाह के भाई का वशज शम्स खा उस समय नागौर का स्वामी था इसलिए उसने राणा के विरुद्ध सहायता करने के लिए कुतुबशाह से प्रार्थना की। शाह ने अपनी फौजें उसकी सहायता के लिए भेजीं परन्तु राणा ने उन्हें बुरी तरह हरा दिया। इस पर कुतुबशाह फिर नागौर की तरफ स्वयं रवाना हुआ और मेवाड के अधीनस्थ सिरोही के राजपूतो को जीत लिया। फिर वह पहाडी मार्ग से कुम्भलमेर के किले की ओर बढ़ा परन्तु बीच ही में राणा ने उस पर आक्रमण कर दिया। इसके बाद राणा में और कुतुबशाह में सन्धि हो गई।

अब, मालवा के सुलतान ने कुतुबशाह को फिर भडकाया और चम्पानेर के स्थान पर राणा के राज्य को आपस में बांट लेने की सधि पर हस्ताक्षर किए। दूसरे वर्ष, कुतुबशाह ने फिर आबूगढ को जीत लिया। वहाँ कुछ फौज छोड़कर वह सिरोही पहुँचा और एकबार फिर राणा से सधि हो गई। अगले वर्ष १४५८ ई० में राणा ने फिर नागौर पर चढाई की। बहुत देर करके कुतुबशाह उसका सामना करने के लिए रवाना हुआ और जय प्राप्त करता हुआ कुम्भलमेर की तरफ बढ़ा परन्तु उसको बीच ही में रुकना पड़ा। इसके थोड़े ही दिनो बाद वह अहमदाबाद लौट गया और मर गया।

कुतुबउद्दीन के बाद हिजरी सन् ८६३ (१४५८-५९) के रजब महीने की २३ वीं तारीख को अहमदशाह का पुत्र दाऊद गद्दी पर बैठा। परन्तु वह बिलकुल अयोग्य सिद्ध हुआ[3] इसलिए गुजरात के अमीरो व उच्च राज्याधिकारियो ने निर्णय किया

---

(१) रासमाला (२) अथवा उसको जहर दे दिया गया। देखो रासमाला, मीराते सिकन्दरी, तवारीख अहमदशाही।

३ राजविनोद मे कुतुबुद्दीन और दाऊद का कोई वर्णन नही है। दाऊद का नाम न होने का तो कारण स्पष्ट है क्योकि उसने केवल ७ ही दिन राज्य किया परन्तु कुतुबुद्दीन ने तो ८ वर्ष के लगभग राज्य किया था और मेवाड के राणा व मालावा के सुलतान से युद्ध करके उसने कीर्तिलाभ भी किया था। अन्य हिन्दू एव मुसलमान इतिहासकारो ने उसका उल्लेख किया है। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि कुतुबुद्दीन फतहखाँ

कि मुहम्मदशाह के पुत्र फतहखां को गद्दी पर बिठाना चाहिए क्योंकि उसमें बादशाह होने के गुण भी पाए जाते हैं और आकृति में भी वह भव्य है।

फतहखां महमूदशाह के नाम से हि० स० ८६३ (१५१० ई०) के शअबान मास की पहली तारीख, रविवार के दिन अहमदाबाद में तख्त पर बैठा। उस समय उसकी अवस्था तेरह वर्ष की थी।[1] यही महमूदशाह आगे चल कर महमूद बेगडा के नाम से प्रसिद्ध हुआ और यही राजविनोद काव्य का चरित्र नायक है।

तख्त पर बैठने के थोडे ही दिन बाद कुछ अविचारशील सरदारों ने वजीर ईमादउल मुल्क के साथ झगडा करके उसको मार देने का षडयन्त्र किया। परन्तु, सुलतान ने धीरज और चतुराई से ऐसी व्यवस्था की कि सब विद्रोह शांत हो गया और इसके बाद में वजीर के विरुद्ध सर उठाने की किसी भी सरदार की हिम्मत न पडी।

सन १४६७ ई० में महमूद ने सोरठ पर चढाई की परन्तु इस बार उसको विशेष सफलता नहीं मिली इसलिए उसने बहुत से जवाहरात और नकदी की भेंट लेकर राव से शत्रुता बन्द कर देने की आज्ञा दे दी[2]।

(महमूद बेगडा का पहला नाम) का सौतेला भाई था और शुरू से ही उससे द्वेष रखता था। फतह खां की माता सिन्ध के बादशाह जाम जाम हून की पुत्री थी। उसका नाम बीबी मुघली था। उसकी दूसरी बहन बीबी मिरघी थी। पहले उनके पिता ने बीबी मिरघी की शादी गुजरात के सुलतान मुहम्मदशाह के साथ और मुघली की हजरत कुतुबुल आफताब के पुत्र हजरत शाह आलम के साथ करने का निश्चय किया था। परन्तु बीबी मुघली अधिक सुन्दरी थी इसलिए मुहम्मदशाह ने अपनी सत्ता और द्रव्य के दबाव से उसकी शादी अपने साथ करवाली। बीबी मिरघी का विवाह हजरत शाह आलम के साथ हो गया। मुहम्मदशाह की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन के व्यवहार से असन्तुष्ट होकर मुघली अपने पुत्र फतह खां को लेकर शाहआलम के आश्रय में आकर रही। कुछ समय बाद बीबी मिरघी की मृत्यु हो गई और मुघली ने शाहआलम के साथ पुनर्विवाह कर लिया। इस प्रकार फतहखां का पालनपोषण व शिक्षा दीक्षा हजरत शाह आलम ही ने किया। बीबी मुघली ने अपनी सेवाओं से प्रसन्न करके उनसे फतहखां के लिए गुजरात के तख्त का वरदान भी प्राप्त कर लिया था। कुतुबखां ने कई बार फतह खां को मार देने के प्रयत्न किए परन्तु हजरत ने उसकी हर बार रक्षा की। राजविनोद महमूद की प्रशस्ति में उसके आश्रित कवि द्वारा रचा हुआ काव्य है अतः इसमें कुतुब का उल्लेख जानबूझ कर नहीं किया गया है। कवि ने तो यहां तक किया है कि कुतुबुद्दीन ने राणा कुम्भा पर जो विजय प्राप्त की थी उसका श्रेय भी अपने वर्णनीय आश्रयदाता महमूद को ही दे दिया है। वास्तव में राणा कुम्भा और महमूद बेगडा में किसी युद्ध का होना इतिहास में नहीं पाया जाता है। (स)

(१) मीराते सिकन्दरी

(२) रासमाला।

परन्तु, इससे उसको संतोष नही हुआ और वह फिर गिरनार पर हमला करने का बहाना ढूँढने लगा । दूसरे ही वर्ष उसे बहाना मिल भी गया ।

राव माण्डलिक राजचिन्हो को धारण किए हुए किसी मन्दिर में पूजा करने के लिए गया । जब महमूद को यह समाचार मिला तो उसे वह सहन नहीं कर सका और तुरन्त चालीस हजार फौज लेकर राव को शिक्षा देने के लिए रवाना हो गया । राव में इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह मुसलमानो का सामना करता इसलिए उसने मुँहमाँगा कर दे दिया और राजचिह्न भी सुलतान को भेंट कर दिए । परन्तु, यह सब व्यर्थ हुआ और परम शूरवीर पृथ्वीराज चौहान का यह कथन कि 'एक वार उड़ाई हुई मक्खी की तरह शत्रु भी फिर फिर कर वापस आता है' उस पर ठीक ठीक लागू हो गया । उसी वर्ष के अन्त में महमूद ने सोरठ पर फिर चढाई कर दी । राव ने अपनी प्रजा को सकट से बचाने के लिए फिर मुँहमाँगा धन देना चाहा परन्तु महमूद ने उसे इसलाम धर्म स्वीकार करने के लिए बाध्य किया । राव ने कुछ उत्तर न देकर किले के दरवाजे बन्द कर लिए और महमूद ने घेरा डाल दिया । अन्त में, राव ने देखा कि उसके दुःखो का अन्त नहीं है तो उसने किले की चाबियाँ सुलतान को सौंप दी और उसके कहने के अनुसार कलमा पढ़ लिया । (१४७० ई०)[1]

इस विजय के अनन्तर महमूद ने विभिन्न प्रातो से बहुत से सय्यदो और विद्वानो को सोरठ में बसने के लिए बुलाया और एक नगर भी बसाया । इस नगर का नाम मुस्तफाबाद पड़ा । कहते हैं, यह नगर बहुत जल्दी ही तैयार होकर राजधानी की समानता करने लगा था । वर्ष का कुछ भाग महमूद यही बिताता था ।

जब वह इस नए नगर के भवनो का निरीक्षण कर रहा था उसी समय यह समाचार मिला कि कच्छ के निवासियो ने गुजरात पर आक्रमण कर दिया है इसलिए वह उधर चढ चला और बहुत जल्दी ही उनको अपनी आधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य कर लिया । इसके अनतन्र महमूदशाह ने सिन्ध के जाटो और बलूचियो पर चढ़ाई की और सिन्धु नदी तक देश के अंतरग में घुसता चला गया । ये घटनाए ई० स० १४७२ में हुई ।[2]

सिन्ध की चढाई के बाद महमूद ने जगत (द्वारका) और शङ्खोद्धार (बेट) द्वीप के सरदारो पर चढाई की । इसका कारण यह बतलाया जाता है कि मौलाना मोहम्मद समरकन्दी ने सुलतान के पास आकर द्वारका व बेट द्वीपके ब्राह्मणो की शिकायत की और महमूद ने उधर चढाई कर दी । उसने द्वारका की बहुत सी

---

(१) मीराते सिकन्दरी के लेखक का कहना है कि रावने सुलतान के कहने से इसलाम धर्म स्वीकार नही किया था वरन् एक फकीर का चमत्कार देखकर ऐसा किया था । उसे यह बोध देने वाले रसूलाबाद के पीर शाहआलम थे ।

(२) कॉमिसरियट्—हिस्ट्री आफ गुजरात, भा० १ (१९३८), पृ० १३०

इमारतों व मूर्तियों को तुड़वा दिया । इसके बाद वहाँ एक मसजिद बनवाने के विचार से चार महीनों तक फौज को रोके रहा । तदनन्तर, शङ्खोद्धार द्वीप पर चढाई की । वहा के राजा भीम ने २२३ बार युद्ध किया परन्तु अन्त में महमूद का बेड़ा पार उतर गया और बहुत से राजपूत मारे गए । एक छोटीसी नाव में बैठकर भागता हुआ भीम पकड़ लिया गया और अहमदाबाद में लाकर मार दिया गया ।[1]

सन १४७९ ई० की बरसात में सुलतान अहमदाबाद की तरफ गया और शरद ऋतु में मुस्तफाबाद आकर रहने लगा । वहाँ आस पास के जंगलों में वह शिकार के लिए निकलता था । कुछ दिनों बाद वह फिर अहमदाबाद आ गया । एक बार वह शिकार खेलता हुआ अहमदाबाद से ईशानकोण में बारह कोस की दूरी पर वात्रक नदी तक जा पहुँचा । वहा उसे ज्ञात हुआ कि लोग कभी कभी लूट पाट कर लेते हैं इसलिए उसके मन में विचार आया कि इस स्थान पर एक नगर बसाया जावे और उसका नाम महमूदाबाद रक्खा जावे । उसी समय नगर की नींव रख दी गई और बहुत जल्दी ही यह बन कर तयार हो गया ।

इसके बाद ही हि० स० ८८५ (ई० स० १४८०) में कुछ मुसलमान सरदारों ने महमूद को पदभ्रष्ट करके उसके पुत्र अहमद (मुजफ्फर) को तख्त पर बिठाने का षड्यन्त्र रचा । सुलतान ने उनका ध्यान बटाने के लिए चम्पानेर पर चढाई करने के विषय में उनसे मन्त्रणा की । परन्तु, वे उसकी बातों में न आए । अतः चम्पानेर की चढाई कुछ समय के लिए स्थगित रही । बाद में १४८२ ई० में उसने फिर चम्पानेर पर आक्रमण करने की तयारियाँ की । परन्तु, उसी समय उसका ध्यान सूरत के दक्षिण में बलसाड के जहाजियों की ओर गया जिनका प्रभाव इतना बढ गया था कि वे केवल व्यापार ही नहीं करते थे प्रत्युत उनकी ओर से उसके राज्य पर भी हमला होने की आशका होने लगी थी । महमूद ने खम्भात में एक बेड़ा इकट्ठा किया जिसमें तीरदाज व बन्दूकें तथा तोपें चलाने वाले सभी लोग थे । यह बेड़ा जहाजों में चढ़कर रवाना हुआ । शत्रुओं के पैर उखड़ गए और सुलतान के बेड़े ने उनका पीछा किया । कुछ देर युद्ध होने के बाद वे मल्लाह और उनके वाहन पकड लिए गए । इसी वर्ष के अन्त में उसने चम्पानेर पर चढ़ाई कर दी ।

हिजरी सन ८८७ (१४८२ ई०) में समस्त गुजरात व चम्पानेर में वर्षा बहुत कम हुई थी । उसी समय सुलतान की फौज का विशेष अफसर मलिक असद अपने लश्कर के साथ चम्पानेर दुर्ग के पास जा पहुँचा । रावल ने भी किले से

(१) द्वारका और बट द्वीपों पर महमूद ने हि० स० ८७८ (ई० स० १४७३) में विजय प्राप्त करके मलिक तोघान को वहाँ का सूबेदार नियुक्त किया और उसको फर्हतुल् मुल्क का अलकाब दिया ।

बट का राजा भीम १४७५ में मौलाना समरकन्दी के कहने के अनुसार नगर में चारों तरफ घुमाकर टुकड़े टुकड़े करके मार दिया गया (मीराते सिकन्दरी)

वाहर आकर युद्ध शुरू किया। मलिक की हार हुई और सरकारी हाथी, कुछ घोड़े और सभी सिपाही मारे गये। यह खवर सुनकर सुलतान को वहुत क्रोध आया और उसने चम्पानेर पर पूर्ण विजय प्राप्त करने का निश्चय किया।

जव चम्पानेर के रावल[1] ने सुना कि महमूद उसपर हमला करने आ रहा है तो पहले तो वह आवेश में आकर निकल पडा और सुलतान के मुल्क में आग लगाने लगा व मार काट करने लगा। परन्तु, फिर कुछ सोच विचार कर उसने सन्धि का प्रस्ताव कर दिया। महमूद किसी भी शर्त पर सन्धि करने को राजी न हुआ और अन्त में मुसलमानी सेना ता० १७ मार्च १४८३ ई० को काली के पर्वत की तलहटी में जा पहुँची। रावल ने एक वार फिर सन्धि के लिए प्रार्थना की परन्तु उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। अन्त में उसने पूर्ण साहस के साथ सामना करने का निश्चय किया। मुसलमानी सेना नें घेरा डाल दिया और राजपूतों ने उन पर आक्रमण चालू कर दिए। कई वार मुसलमानो के छक्के छूट गए परन्तु अन्त में विवश होकर रावल को अपने पुराने सहायक मालवा के सुलतान गियासुद्दीन से सहायता माँगनी पडी और वह उसका साथ देने के लिए रवाना भी हो गया। परन्तु, इतने ही में महमूद ने उस पर चढ़ाई कर दी और वह समय अनुकूल न देखकर मालवा लौट गया। महमूद भी अपने घेरे पर चम्पानेर लौट आया।

अपना घेरा चालू रखने का आशय जानते हुए सुलतान ने वहीं एक मसजिद वनवाई और सुदृढ घेरा डाल दिया। अन्त में मुसलमान लोग किले के इतने नजदीक पहुंच गए कि उन्हें उस गुप्त मार्ग का भी पता चल गया जिससे राजपूत लोग नहाने-धोने व पानी आदि लेने के लिए वाहर आया करते थे। इसके वाद उन्होंने किले की पश्चिमी दीवार तोड़ डाली और उस मार्ग पर अधिकार कर लिया। यह घटना सन् १४८४ ई० के १७ नवम्वर की है। अव किले पर गोलावारी शुरू हुई और उधर राजपूतो ने जौहर की तैयारियाँ की। चिता तैयार हुई और उसमें रानियाँ, दासियाँ, धन दौलत आदि सभी कुछ स्वाहा हो गए[2]। इसके वाद पावागढ़ के रक्षक राजपूत केसरिया वस्त्र पहन कर वाहर आए और रणभूमि में मृत्यु प्राप्त की। चम्पानेर का रावल और उसका प्रधानमत्री डूगरशी जीवित पकड़ लिए गए। महमूद ने अपनी विजय के स्मारक-स्वरूप वहीं महमूदावाद नामक नगर वसाया। रावल और डूँगरशी के घाव अच्छे होने पर उन्हें इसलाम धर्म

(१) रावल गगादास का पुत्र जयसिंह, फरिश्ता ने इसका नाम वेनीराय लिखा है। हिन्दू दन्तकथाओ में यह 'पताई रावल' के नाम से प्रसिद्ध है। (देखो रा० ब० गो० ही० ओझा कृत मेवाड का इतिहास)।

(२) राजविनोद में पावक गिरिका यह वर्णन महमूद के पिता महम्मद के समय में होना वताया गया है–

"यस्य प्रतापभरपावकसगमेन दग्धस्य पावकगिरे शिखरान्तरेपु।
प्रैक्षन्त जर्ज्जरसुधाविधुराणि भस्मराशिप्रभाभि रिपवो निजमन्दिराणि ॥
रा० वि० सर्ग २ १८

ग्रहण कर लेने को कहा गया परन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस पर सुलतान ने उनको मरवा दिया।

भाट ने इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है —

सवंत पंदर प्रमाण, एकताली संवतसर,
पोस मास तिथि त्रीज, वढेहु वार रवि सुदन,
मरजिया पटभूप, प्रथम वेरसी पडीजे,
जाडेचो सारंग, करण,, जेतपाल कहीजे।

सरवरियो चंद्रभाण, पताहु काज पिंडज दियो।
महमुदावाद मेहराण, लघु कटक सर पावो लियो।

सन १४६४ ई० में दक्षिण के बहमनी राज्य के विद्रोही बहादुर गिलानी नामक सरदार ने गुजरात के कुछ व्यापारिक जहाजों को लूट कर माहिम द्वीप पर अधिकार कर लिया। महमूद ने उसके विरुद्ध जल व स्थल सेनाएं भेजीं और बहमनी के सुलतान के पास भी एक ऐलची द्वारा पत्र भेजा। उसने तुरंत गिलानी पर चढाई करदी और उसे पकड कर मार डाला। गुजरात के मनुष्यों व वाहनों को मुक्त करके वापस भेज दिया गया।

दूसरे वर्ष महमूद ने वागड और ईडर[1] पर चढाई की और वहाँ के राजाओं से भारी भेंट वसूल करके महमूदाबाद (चम्पानेर) लौटा।

सन १५०७ ई० में महमूद फिर हमारे सामने जल सेनापति के रूप में आता है। कुछ यूरोप निवासियों ने समुद्र पर अधिकार जमा रक्खा था और गुजरात के किनारे बस जाने की इच्छा से कुछ बन्दरगाहों पर कब्जा कर लिया था। तुर्की बादशाह बजाजत द्वितीय का जहाजी कप्तान पन्द्रहसौ आदमियों का बेडा लेकर गुजरात के किनारे आ पहुँचा। उधर महमूद व उसके अन्य सेनापति भी आ पहुँचे। इस लडाई में मुसलमानों की विजय हुई और पुर्तगालियों का झण्डेवाला जहाज, एडमिरल डान लारेन्जो अलमीडा व १४० मनुष्य नष्ट हुए।

सन १५१० ई० में महमूद पाटण गया। यह उसकी अन्तिम यात्रा थी। उसने वहाँ के बडे बडे आदमियों को बुलाकर उनसे भेंट की। फिर वह अहमदाबाद लौट आया और तीन महीनों तक बीमार रहा। इसी बीच में उसने अपने पुत्र खलील खाँ को बुलवाया और उसकी अंतिम सलाम लेकर हिजरी सन ६१७ (१५११ ई०) के रमजान महीने की तीसरी तारीख सोमवार को वह इस असार संसार को छोडकर चल बसा। उसे सरखेज में दफनाया गया था जहाँ पर उसकी कब्र अब तक मौजूद है।[2]

---

(१) उस समय ईडर पर राव भान का पुत्र सूरजमल राज्य करता था।

(२) मारात अहमदी। फरिश्ता ने लिखा है कि उसकी मृत्यु हि० स० ६१७ के रमजान महीने की दूसरी तारीख मंगलवार को हुई थी। उस समय उसकी आयु ७० वर्ष ११ महीने की थी। उसने ५५ वर्ष १ महीना और दो दिन राज्य किया।

अहमदावाद के सुलतानो में महमूदशाह, यदि सबसे महान् नहीं तो अत्यन्त लोकप्रिय अवश्य हुआ है। जैसे हिन्दू सम्राट् सिद्धराज के विषय में कितनी ही किम्वदनियाँ और अद्भुत कथाएं प्रचलित हैं वैसे ही इसके विषय में भी कितनी ही बातें प्रसिद्ध है। महमूद की शारीरिक गठन, शूरता, वल, न्याय, परोपकार, इसलाम पर दृढ आस्था, नियम पालन में दृढता और विचारशक्ति की श्रेष्ठता का समानरूप से वखान हुआ है। उसकी 'वेगडा' उपाधि के वारे में कुछ लोगो का कहना है कि जिस वैल के सीग दाए वाँए लम्बे (एक आदमी दूसरे से मिलते समय हाथ वढाए इसतरह) हो उस वैल को हिंदी में वेगडा कहते हैं; सुलतान की मूछें इसी तरह की थी इसलिए लोग उसे वेगड़ा कहते थे। दूसरा मत यह है कि सुलतान महमूदने जूनागढ और चम्पानेर के दो किले जीते थे इसलिए वह (वे-दो; गढा-किला) वेगड़ा (दो किलो का विजेता) कहलाता था।[1]

कहते है कि, वह वहुत खाने वाला था और इतने बडे राज्य का स्वामी और राजवैभव में रहनेवाला होने पर भी उसकी जठराग्नि वहुत प्रवल थी। वह कला प्रेमी था और इमारतो का उसे वहुत शौक था। गुजरात की मुसलमानी इमारतो में से अधिकांश के साथ महमूद वेगडा का नाम सम्वद्ध है। 'मुश्तफावाद और महमूदावाद (चम्पानेर) के अतिरिक्त वात्रक नदी के किनारे उसने अपने नाम से एक और शहर वसाया था जिसके चारो ओर कोट खिचवाकर अच्छी अच्छी इमारतें वनवाई थीं। इसी नदी के किनारे पर उसने एक उत्कृष्ट महल वनवाया था जिसके अवशिष्ट अब तक वर्तमान है।[2] वह इन्ही तीन नगरो में से एक में प्रायः वना रहता था परन्तु गरमी के दिनो में जव मतीरे (तरवूज) पक जाते हैं तव अहमदावाद अवश्य जाता था। मीराते अहमदी के कर्ता ने आगे चलकर लिखा है कि गुजरात देश में जितने शहरो, कसवो और गाँवो में फलो के पेड़ है वे सव महमूद के समय में लगाए हुए हैं।[3]

मीराते सिकन्दरी मे लिखा है कि अपनी वीमारी की अवस्था मे उसने फरमाया कि शाहजादा खलील खा को वुलाओ। परन्तु, वह आकर पहुचा इससे पहले ही हि० स० ९१७ के मुवारक रमजान महीने मे सोमवार के दिन दोपहर की नमाज के वक्त इस फानी दुनिया को छोड कर अनन्त धाम के लिए विदा हो गया।....उस समय उसकी उम्र ६७ वर्ष और तीन महीने की थी।

कॉमिसरियट-हिस्ट्री आफ गुजरात भा० १ पृ० २०७ मे लिखा है कि उसकी मृत्यु २३ नवम्वर १५५१ ई० को हुई। उस समय वह अपने ६७ वे वर्ष मे था।

(१) फरिश्ता।

(२) मीराते अहमदी (१८५६ ई०)

(३) शाखोटै कुटजैश्च शाल्मलिवनैश्च्छन्नाश्च या भूमय-
स्तत्राशोकरसालवाल-वकुलै रम्या कृताः वाटिकाः।
आक्राता. किटिकोटिमर्क्कटकुलैर्ह्यक्षव्यक्षैश्च या-
स्तत्रानेन पुराणि पुण्यजनतापूर्णानि क्लृप्तानि च ।। २४ ।। रा वि सर्ग।

जहाजों लड़ाइयाँ लड़ने के कारण उसकी प्रसिद्धि यूरोपीय देशों तक फैल गई थी। मिस्टर एल्फिन्स्टन ने लिखा है कि इस बादशाह के विषय में तत्कालीन प्रवासियों के बड़े भयानक विचार थे। Bartema (बार्टिमा) और Barbosa (बार्बोसा) दोनों ही में उसका विस्तारसहित वर्णन किया गया है। एक यात्री ने उसके शरीर की बनावट के विषय में भयंकर वर्णन लिखा है। उसके असाधारण मात्रा में भोजन करने और उसके शरीर में विष होने के बारे में दोनों ही लेखक सहमत हैं। विषैला भोजन करते करते उसके शरीर में इतना विष फैल गया था कि यदि कोई मक्खी उड़ती उड़ती आकर बैठ जाती तो तुरंत मर जाती थी। सत्तावान् मनुष्यों को दण्ड देने की उसकी साधारण रीति यह थी कि पान खाकर उन पर पीक की पिचकारी मार देता था। बटलर ने "खम्भात के राजा की बात" लिखी है जिसमें उसका नित्य का भोजन दो जहरी साँप और एक जहरी मेंढ़क लिखा है। मीराते सिकन्दरी में लिखा है कि साधारण भोजन के अतिरिक्त १५० सोन केले व गुजराती तौल का सवा मन खाना उसके नित्य के भोजन में सम्मिलित थे। रात को सोते समय दो बड़े बड़े भगोने पूओं व बड़े भुजियों के भरे हुए उसके पलंग के दोनों ओर रख दिए जाते थे। जब तक नींद न आती वह इधर उधर करवट लेकर उनको खाता रहता था। बीचमें नींद खुलजाने पर भी वह उन्हें खाने लगता था। वह प्रायः कहा करता था कि यदि वह बादशाह न होता तो उसकी जठराग्नि किस प्रकार शान्त होती ?

मीराते सीकन्दरी में इस सुलतान के चरित्र एवं राज्य प्रबन्ध के विषय में जो विवरण लिखा है वह इस प्रकार है—

"यहाँ यह बात प्रकट करना है कि यह सुलतान गुजरात के सुलतानों में सब से उत्तम था। न्याय में, धर्म में, संग्राम में, इस्लाम धर्म के नियमों का पालन करने में, बाल्य यौवन, और वृद्धावस्था में सदैव एकसार उत्तम बुद्धि रखने में, शारीरिक सामर्थ्य में और उदारता में अद्वितीय था। इतने बड़े राज्य वैभव और महान देश का स्वामी होते हुए भी उसकी पाचन शक्ति बहुत प्रबल थी।

(इसके राज्य में) "गुजरात देश में एक नई स्फूर्ति आई जो कितने ही समय पूर्व तक न आई थी। सेना सुव्यवस्थित थी और प्रजा निरुपद्रव थी। साधु-सन्त स्थिर चित्त से भजन में व्यस्त रहते थे और व्यापारी अपने व्यापार और लाभ से प्रसन्न थे। देश में सर्वत्र शान्ति थी और चोरों का भय नहीं था। सोने की थैली लिये हुए अकेला आदमी पूर्व से पश्चिम तक घूम आता है। हे सम्राट ! तेरे भय से संसार की सभी दिशाएं निर्भय हैं। इस प्रकार किसी को पुकार करने की आवश्यकता ही न पड़ती थी।"

"सुलतान की आज्ञा थी कि कोई अमीर अथवा सैनिक अधिकारी युद्ध में मारा जाय या स्वाभाविक रीति से मर जाय तो उसकी जागीर उसके पुत्र को दी

जाय, यदि उसके पुत्र न हो तो जागीर का आधा भाग उसकी पुत्री को दे दिया जाय, यदि पुत्री भी न हो तो उसके आश्रितो के लिये ऐसा प्रबन्ध कर दिया जाय कि उनको जीवन-यापन में किसी प्रकार का कष्ट न मिले। कहते हैं कि एक बार एक मनुष्य ने आकर कहा कि अमुक अमीर मर गया है और उसका पुत्र उस पद के योग्य नहीं है। सुलतान ने कहा कि वह पद उस लड़के को अपने योग्य बना लेगा। इसके बाद ऐसी बातों में किसी को कुछ कहने का साहस न पड़ा।

इस सुलतान के समय में प्रजा सुखी थी इसका कारण यह था कि अकारण ही अत्याचार करके किसी जागीरदार की जागीर नहीं छीनी जाती थी और सरकार द्वारा निश्चित लगान ही ले लिया जाता था। जब सुलतान महमूद शहीद के समय में कार्यकर्ता मन्त्रियों ने देश की उपज की तपास की तो ज्ञात हुआ कि उस समय देश में पहले से दशगुनी उपज अधिक होने लगी थी और गावो में कोई भी किसान निर्धन नहीं था। व्यापारियो को लुटेरों की कोई चिन्ता न थी क्योंकि व्यापार के सभी मार्ग सुरक्षित थे और सुलतान के राज्य में चोर की उत्पत्ति ही न होती थी। साधु-सन्त शान्ति से रहते थे क्योंकि सुलतान स्वयं इस मान्य-वर्ग का शिष्य एवं भक्त था। वह प्रति वर्ष इनकी जागीरें बढ़ाता रहता था और इसके अतिरिक्त भी सन्तो की इच्छानुसार उन्हें अनुदान दिया करता था। यात्रियो के लिये उसने बड़ी-बड़ी धर्मशालाएँ बनवाईं और स्वर्ग के समान सुन्दर पाठशालाओं तथा मसजिदो का निर्माण कराया। सुलतान बड़ा न्यायी था और उसके राज्य म किसी को हानि पहुंचाने का किसी का साहस न होता था। उसके विषय में एक कविता में लिखा है कि "अपराधियो पर तुम्हारा ऐसा आतङ्क छाया हुआ है कि कोई कबूतर पकड़ने के लिये बाज नहीं छोड़ सकता है"।

छोटे बड़े सभी वर्गों के लोगो का मत है कि महमूद बेगड़ा जैसा बादशाह गुजरात में पहले नहीं हुआ और न्याय में तो उस के बाद भी कोई समानता न कर सका। उसने जूनागढ का किला, सोरठ देश, चाँपानेर का किला तथा और आसपास के प्रदेशो को जीतकर वहां पर हिन्दू रीति-रिवाजों को नष्ट कर दिया और इसलामी रीति-रिवाजों को प्रचलित किया, इसलिये कयामत तक जो भी कार्य इन प्रदेशों में होंगे वे उसी के नाम लिखे जावेंगे। उसका पौत्र बहादुरशाह यद्यपि देश जीतने में उससे बढ कर हुआ तथापि अनुभव में वह सुलतान महमूद को नहीं पा सकता था। सुलतान तो इन दोनों ही बातो में बढ़ कर था।

"युवा प्रतिभाशाली और भाग्यवान् वह ऐसा था कि वैभव में युवक और युक्ति प्रयुक्ति में प्रौढ़ था।"

"जिस समय यह सुलतान यहां राज्य करता था उसी समय खुरासान में सुलतान हुसेन मिर्जा राज्य करता था और बेनमुन वजीर मीरअली उसके प्रधान मंत्री

के पद पर सुशोभित था। मुल्लां तथा मनोहर कार्यकर्ता के स्थान पर मौलाना जामी प्रतिष्ठित थे जो ईश्वरीय मार्ग एवं मोक्ष प्राप्ति के परम साधन ज्ञान में अनुभवी थे। उसी समय दिल्ली के तख्त पर सुलतान सिकन्दर बहलोल लोदी विराजमान थे। उनके वजीर परम बुद्धिमान और दूरदर्शी जोयान बहलोलखां लोदी थे। उसी समय मांडू के तख्त पर सुलतान महमूद खिलजी के पुत्र सुलतान गयासुद्दीन बठे थे जिनके शासन और उदारता की ख्याति चारों ओर फल रही थी। उसी समय दक्षिण की गद्दी पर सुलतान महमूद बहमनी वतमान था। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कितने ही वर्षों बाद सुलतान महमूद गजनवी की आत्मा सलतान महमूद बेगडा के रूप में अवतार लेकर आ गई थी क्योंकि उसके सभी काय उतने ही प्रतिष्ठित थे जितने कि उस महान् सुलतान के थे।"

"कहते है कि जिस दिन सुलतान महमूद गद्दी पर बठा उस दिन उसके जमाई सुदावन्द खां ने जो बडा विद्वान और वक्तत्व कला में निपुण था, सुलतान के हाथ में दीवान हाफिज की पुस्तक देकर शकुन देखने के लिये प्रार्थना की। ज्यों ही सुलतान ने पुस्तक खोली अनायास उसमें इस आशय की कविता निकली "अरे जिसके शरीर पर बादशाही का जलवा आ रहा है और जिसके नमूने के दो मोतियों से बाद शाही झलक रही है।'

"इस सुलतान के राज्य में कभी अनाज महँगा नहीं हुआ। प्रत्येक चीज सस्ते मूल्य पर प्राप्त होती थी। गुजरात के लोगों का कहना है कि गुजरात में ऐसी सस्ताई कभी नहीं देखी थी। चगेजखां मुगल की तरह इसकी सेना ने भी कभी पराजय का अनुभव नहीं किया था। सदा नई-नई विजय इसको प्राप्त होती थी। सुलतान ने एक आदेश जारी किया था कि सेना के आदमियों में से कोई ऋण न ले। उनके लिये सरकारी कर का कोई अंश अलग निर्धारित करके रख दिया जाता था जिसमें से सिपाही लोग आवश्यकतानुसार रकम उधार लेते थे और वापस जमा करा दिया करते थे। इस प्रबन्ध से व्यापारी लोग अवश्य ही कुछ संकट में पड गये थे और इसलिये वे उसकी आलोचना करते हुये उसे बुरा कहा करते थे। सुलतान बारम्बार कहा करता था कि जो मुसलमान ब्याज खाता है वह धर्म-युद्ध में नहीं टिक सकता। इसी कारण परमात्मा उसे युद्ध में विजयी करता था।"

"ईश्वर की कृपा से गुजरात में आम, अनार, रायण, जामुन नारियल, बेल और महुआ आदि के अनेक जाति के पेड प्रचुरता से मिलते है ये सब इसी महाप्रतापी सुलतान के सतप्रयत्नों के फल है। प्रजा में जो कोई अपनी भूमि में पेड़ लगाता था उसको सहायता दी जाती थी। इसी कारण जनसाधारण में बागों की रचना करने व पेड़ लगाने की प्रवत्ति बढ़ गई थी। इस सम्बन्ध में कहा जाता है कि सड़क पर या किसी झोपड़ी के आगे लगाया हुआ पेड़ देख कर सुलतान

अपने घोड़े को रोक लेता और पेड़ लगानेवाले से पूछता कि इस वृक्ष को पानी कहा से लाकर पिलाते हो। यदि वह पानी का स्थान कहीं दूर पर बतलाता तो सुलतान कृपापूर्वक वहीं कुँआ खुदवा देता और पेड़ बडा होने पर लगानेवाले को इनाम देता। फिरदौस बाग जो ५ कोस लम्बा और १ कोस चौड़ा है इसी सुलतान का लगवाया हुआ है। गआवान बाग भी जो स्वर्ग की समानता करता है इसी के समय में तैयार हुआ था। इसी प्रकार जब वह किसी खाली दुकान या मकान को देखता तो वहां के अधिकारी या नौकरो से इसका कारण पूछता और तुरन्त ही उसको आबाद करने का प्रबन्ध करता था। इस प्रकार 'जो दाखिल होता है वह सही सलामत हैं' इस कुरान की आयत के अनुसार प्रजा उसके राज्य में सुखी थी।'

अनेक लड़ाइयो में विजयलाभ प्राप्त करने से उसकी वीरता व भवनो तथा बाग बगीचो से उसके कला-प्रेम का तो परिचय मिलना ही है, परन्तु कवि उदयराज विरचित प्रस्तुत राजविनोद काव्य से उसके चरित्र का एक और पहलू भी सामने आता है (जिसको प्रायः हमारे इतिहासकार विशेष महत्त्व नहीं दिया करते है); वह यह है कि वह कविता प्रेमी भी था। अवश्य ही, कट्टर मुसलमान होते हुए भी, संस्कृत में निगुम्फित उसके इस यशोगान ने उसके मूलतः हिन्दू हृदय को परम सन्तोष प्रदान किया होगा।

राजविनोद काव्यकी आदर्शभूत प्रतिका अन्तिम पत्र

कवि-उदयराजविरचित

राजविनोदमहाकाव्यम् ।

॥प्रथमः सर्गः॥

॥ ॐ नमः सरस्वत्यै ॥ श्री जगत्कर्त्रे नमः ॥

जगत्कर्त्ता विजयते करुणावरुणालयः ।
राजरूपेण रमते यः प्रजानुग्रहेच्छया ॥१॥

राजन्यचूडामणिमत्युदारमाशास्महे श्रीमहमूदसाहिम् ।
कलानिधेर्यस्य पद श्रयेते सरस्वती श्रीश्च समानमेव ॥ २ ॥

एतच्चरित्रे क्व लभेत पार पदे पदे हन्त मतिः स्खलन्ती ।
उदारकीर्त्तेर्महमूदसाहेस्तावद्गुणानेव गुरूकरोमि ॥ ३ ॥

अमुष्य राज्ञः परमेश्वरस्य पूजोपहाराय मयोपनीत ।
कवित्वपुष्पाञ्जलिरेष रम्य सन्तस्तदामोदभर भजन्तु ॥ ४ ॥

उत्कपमालक्ष्य सदैव लक्ष्म्या सौभाग्यलाभान्महमूदसाहे ।
उत्सङ्गमुत्सृज्य पितामहस्य सरस्वती क्ष्मावलय प्रपन्ना ॥ ५ ॥

प्रष्टु क्वचित् केलि [पृ० १B] परा तनूजा चतुर्भुजस्येव दिशश्चतस्र ।
विधेर्निदेशात् प्रथमो दिगीश सहस्रमक्ष्णामदिशत पथिव्याम ॥ ६ ॥

क्षणादथ क्षोणितल विगाह्य मधुव्रतानामिव पङ्क्तिरक्ष्णाम् ।
पौरन्दरी श्रीमहमूदसाहे पद्माकरे राजपुरेऽवतीर्णा ॥ ७ ॥

वीथीषु वीथीषु च राजधान्या द्वारे नरेन्द्रस्य च मन्दिरेषु ।
श्रेणी सुरेन्द्रस्य दृशा व्यराजद् व्यालम्बिता वन्दनमालिकेव ॥ ८ ॥

दिवस्पतेर्नेत्रसहस्रमाला दीपावलिश्रीभवने भ्रमन्ती ।
आरात्रिक ससदि कुर्व्वतीव प्राप्ता मुदा श्रीमहमूदसाहे ॥ ९ ॥

सद्वृत्तिस्यपदक्रमा परिलसत्सर्वानुमेयोदरा
मीमासाद्वयसुन्दरस्तनभरा तत्त्वार्थवादानना ।
वाग्देवी वरनव्यकाव्यरचनागाङ्गारिणी प्रेक्षिता [पृ० २A]
सुत्राम्णा महमूदसाहनृपतेर्विद्वत्सभामाश्रिता ॥१०॥

व्राह्मि ! ब्रह्मसभां सुभापितरसत्यागेन रूक्षानना
 कृत्वा क्रीडसि भूतले किमिति सा शक्रेण पृष्टाऽब्रवीत् ।
सुत्रामन् महमूदसाहिनृपतेर्विद्याविदा संसदि
 स्वच्छन्दप्रसरत्कवित्वलहरी त्यक्तु कथं शक्यते ॥११॥

इन्द्र: कि कमलापति किमथवा किं वा रतेर्वल्लभ:
 शृङ्गार किमु मूर्तिमानिति वुधैस्सोल्लासमालोकित. ।
चञ्चच्चामरवीजित सुमहच्छत्रेण विभ्राजित
 सोऽय श्रीमहमूदसाहिनृपति. सिहासने राजते ॥१२॥

औदार्य परमस्य शौर्यमतुल गाम्भीर्यमुख्यान् गुणान्
 प्रेक्ष्य श्रीमहमूदसाहनृपतेराश्चर्यमासेदुपाम् ।
केपां वा विदुपा दधीचिररर्चि धत्ते न चित्ते चिर
 कर्ण. कर्णकटुत्वमेति [पृ०२B] भवति प्रायो वलिर्विस्मृत: ॥१३॥

पूर्णोऽन्य सुरवेनव फलभरैर्भुग्नाश्च कल्पद्रुमा-
 स्ते चिन्तामणयो दृपद्गुरुतया योग्यास्तुलारोहणे ।
श्रीरश्रीमहमूदसाहनृपते' सत्पात्रकोटिम्भरे-
 र्जातं दानगुणेन सम्प्रति यतो याञ्चाविमुक्त जगत् ॥१४॥

चिन्तामणेर्लोचनमाश्रिता श्री कर च कल्पद्रुमदानशक्ति. ।
वाणी विलासेन च दोग्धि कामान् जिष्णोर्जगत्यां महमूदसाहे ॥१५॥

उच्चैर्द्विपद्भूधरलक्षपक्षच्छेदैककर्त्तु शतकोटिभर्त्तु ।
संलक्ष्यते श्रीमहमूदसाहेराखण्डलत्व क्षितिमण्डलेऽपि ॥१६॥

यशोभरै. श्रीमहमूदसाहेर्वसुन्धरायां कुमुदावदातै. ।
उदस्य दोपाकरमव्जजन्मा विधित्सतां चन्द्रमसा सहस्रम् ॥१७॥

प्राच्या प्रतीच्यामपि दिग्यवाच्यामुच्चैरुदी [पृ०३A] च्यामुदय दधान ।
प्रतापभानुर्महमूदसाहे करोति निर्वैरितम समस्तम् ॥१८॥

श्रीचन्द्रहासो महमूदसाहे सृजत्यहो वैरिशिरासि राहून् ।
तेपा यशश्चन्द्रमस. प्रतापभानोश्च सर्व्वग्रहणे रणेपु ॥१९॥

सोत्तालपात रिपुकन्धरासु तूर्यस्वनैस्ताण्डविता रणेपु ।
कृपाणयष्टिर्महमूदसाहेर्यश प्रसूनाञ्जलिमातनोति ॥२०॥

प्रवर्तित दक्षिणवामभागयोर्जवेन पश्यद्भिरलक्षितक्रमम् ।
धनुर्हि शार्ङ्गं महमूदभूपतेर्व्यनक्ति युद्धेपु चतुर्भुजश्रियम् ॥२१॥

वलीयसा श्रीमहमूदभूभुजा हता हि ये हेतिभिराहवेऽहिता ।
विभिद्य ते मण्डलमशुमालिनो गतास्स्वराखण्डलदृष्टचण्डता ॥२२॥

अक्ष्णा जिघृक्षति सहस्रकर सहस्रमस्मात् सहस्रकरता च सहस्रनेन ।
श्रीपा [पृ० ३ B] तसाहमहमूदनृपप्रयाणे रेणुव्रजे दिशि दिशि प्रविजृम्भमाणे ॥२३॥

किं भास्करोऽयमुदयाचलमध्यवर्ती जम्भारिरभ्रमुपति किमथाविरूढ ।
इत्थ वदन्ति समुद्,महमूदमाह दृष्ट्वा विशिष्टमतयो वरवारणस्थम ॥२४॥

दुर्नीतिदावदहन निजमण्डलाग्रधाराजलैश्शमयता सकलावनीयम् ।
एतेन सान्द्रकरुणाम्बुघनेन काम सम्पत्तिभिस्सपदि पल्लवितेव भाति ॥२५॥

मुक्तोज्ज्वलाभिरभित किलशातकुम्भघागभिरग्रकरपल्लवसम्भृताभि ।
पट्टाभिषेकसमये स्वयमेव राज्ञा प्रेम्णा घनेन महिषीव सुधाभिषिक्ता ॥२६॥

लीना क्वचित्क्वचिदपि प्रकटीभवन्ती भ्रान्त्वा जगज्जडतयाधिपयोधिखिन्ना ।
साऽह प्रकाशमधुनाऽधिगताऽस्मि लोके विद्याविवेकरसिकस्य सदस्यमुष्य ॥२७॥ [पृ०४A]

इति निगद्य सुपद्यमनोरम सुचरित महमूदमहीपते ।
शतमखाभिमुखी किल भारती पुनरवोचदिद मधुर वच ॥२८॥

श्रीमान् माहिमुदप्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात श्रीमहमूदसाहिनपतिर्जीयात् तदीयात्मज ॥२९॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरवक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे राजविनोदे महाकाव्ये सुरेन्द्रसरस्वतीसम्वादो नाम प्रथमस्सर्ग ॥

॥ द्वितीयः सर्गः ॥

वशस्सहस्रांशुभवो जगत्या जागत्यसौ राजभिरर्च्चनीय ।
वर्णोपमो यत्र किलावतीर्ण श्रीमान् पुरा माहिमुदप्फरेन्द्र ॥ १ ॥

लीनस्य वार्द्धौ[1] वलिकालभीत्या कृष्णस्य साहाय्यचिकी[पृ० ४ B]र्षयेव ।
दिल्लीपुराद् गूर्ज्जरदेशमेत्य दधार यो मूर्द्ध्नि सितातपत्रम् ॥ २ ॥

समुद्गिरन् वच्छमहीप् येन डिण्डीरपाण्डूनि यशासि खड्ग ।
स्फूर्जद्द्विपच्छोणितपङ्कलिप्त प्रक्षालित पश्चिमवारिराशौ ॥ ३ ॥

(१) वार्द्धि–वारिधि–समुद्रम् ।

विलङ्घ्य वारानिधिमेकवीरो लङ्कामिव द्वीपमगात् कपीन्द्र ।
तत्स्पर्द्धयेवोग्रतरञ्चचार द्वीपेषु सप्तस्वपि यत्प्रताप. ॥ ४ ॥

मुमोच वन्दीकृतमल्पखानमनल्पवीर्यं वलवत्तरो य. ।
वंश्यास्ततो मालवराजवन्दिमोक्षपदाख्य विरुद वहन्ति ॥ ५ ॥

तस्यात्मजस्साहिमहम्मदोऽभूद् यस्य क्षमाभोगपुरन्दरस्य ।
औदार्य्यसूर्येण जगत्यजस्त्र व्यदारि दारिद्र्यमयं तमिस्रम् ॥ ६ ॥

दधार शस्त्र न रिपुर्न मित्र यस्मिन् दधत्यायुधमेकवीरे ।
पूर्वस्तत[पृ० ५ A]स्सङ्गरभङ्गभीतेरन्यत् पुनस्तस्य बलप्रतीते. ॥ ७ ॥

उदित्वरो यस्य बभौ जगत्यां सहस्रभानुप्रतिम. प्रताप. ।
यो मल्लखानाख्यमुलूकमिन्द्रप्रस्थस्थमुद्वेजितवान् द्विषन्तम् ॥ ८ ॥

यस्य प्रसिद्धैर्द्विरदैर्विभिन्नप्राकारसौधस्फुरदट्टमाला. ।
अद्याप्यहो नन्दपदाधिनाथा भल्लूकवत् पल्लिवने भ्रमन्ति ॥ ९ ॥

तस्मात् समुद्रादिव पूर्णचन्द्र. श्रीमानभूत् साहिरहम्मदेन्द्र. ।
निरस्तदोपावसरैरशोभि ज्योत्स्नोज्ज्वलैर्यस्य जगद् यशोभि ॥१०॥

हुशङ्गसाहेरधिवासदुर्गमाक्रामता मण्डपमाग्रहेण ।
येनोच्चकैराचकृषे करेण पदे पदे मालवमण्डलश्री. ॥११॥

विभज्य दुर्गाणि निहत्य वीरान् हठान् महाराष्ट्रपति विजित्य ।
जग्राह [पृ० ५ B] रत्नाकरसारजातमनर्गलैर्य स्वबलैर्बलीयान् ॥१२॥

कुर्वन्तु गर्वं वहवोऽप्यखर्व्वमुर्व्वीश्वरा श्रीगुणगौरवेण ।
अहम्मदेन्द्रस्य जनानुरागसौभाग्यलेशं न परे लभन्ते ॥१३॥

आनन्दन सुमनसामथ नन्दनोऽभूद् भाग्यश्रियां निधिरहम्मदपातसाहे: ।
गायासदीन इति साहिमहम्मदेन्द्र क्षोणीभुजां मुकुटघृष्टपदारविन्द. ॥१४॥

सूर्यो दिवैव कुरुते जगति प्रकाश कान्ति शशी वितनुते नियतं निशायाम् ।
श्रीमन्महम्मदनराधिपते पृथिव्यां दृष्ट प्रतापयशसोर्युगपत्प्रचार ॥१५॥

रूपश्रियैव विजित. समभून् मनोभू. श्रीमन्महम्मदनराधिपतेरनङ्ग. ।
अस्त्र स्त्रिय खलु जगज्जयिनोऽपि तस्य वीक्ष्यैव तत्क्षणममु विवशी वभुवु. ॥१६॥

यो भारतस्य [पृ० ६ A] भरतस्य च सम्प्रयोगादुच्चैरजायत नयेऽभिनये प्रवीण ।
वीरो रणे वितरणे च विशिष्टशक्ति. कर्णार्जुनावपि जिगाय जगत्प्रसिद्धौ ॥१७॥

यस्य प्रतापभरपावकसङ्गमेन दग्धस्य पावकगिरेः शिखरान्तरेषु ।
प्रेक्षन्त जर्जरसुधाविधुराणि भस्मराशिप्रभाणि रिपवो निजमन्दिराणि ॥१८॥

नित्यप्रसादपरिवर्द्धितहृष्ययोगा सम्मानदस्य महता महितापवर्तु ।
यस्य प्रभो कनकवेत्रधरा पुरस्तात् क्षोणीभुजोऽपि परिचारकता प्रपन्ना ॥१९॥

तस्यात्मज किल महम्मदपातसाहे श्रीमानय विजयते महमूदसाहि ।
रागेण गूर्जरभुवाऽप्युपसेव्यमानो धारापुरीकरपरिग्रहसाग्रहो य ॥२०॥

पूर्वविशिष्टमतिभिर्विहिता क्षितीन्द्रैर्येषा प्रसाधनवि[पृ० ६ B]धौ बहुधा प्रयत्ना ।
दुर्गाण्यनेन सहसा प्रभुणा स्वशक्त्या भग्नानि तानि बलवद्रिपुरक्षितानि ॥२१॥

पाणौ चकास्ति महमूदनरेश्वरस्य खड्गो रणे विभजनाक्षरपट्ट एष ।
प्रत्यर्थिने दिशति यद्भुवमर्थिदैन्य प्रत्यर्थिवैभवमिहार्यिजनाय दत्ते ॥२२॥

एतच्चमूचरतुरङ्गमचक्रमार्थं क्षमामण्डल खलु कुलाचलक्लृप्तसीमम् ।
अधि विलङ्घ्य दहति द्विषतो विमुक्तमर्यादमस्य जगति प्रभग्न प्रताप ॥२३॥

शाखोटै कुटजैश्च शाल्मलिजनैश्छन्नाश्च या भूमय-
स्तत्राशेषरसालवालबकुलैरम्या कृता वाटिका ।
आक्रान्ता किटिकोटिमर्कटकुलैर्हयक्षऋक्षैश्च या-
स्तत्रानेन पुराणि पुण्यजनतापूर्णानि क्लृप्तानि च ॥२४॥

उद्दण्डस्फुटपुण्डरीकरुचिरच्छाया पर विस्फुरद् [पृ० ७ A]
वीचीचामरवीजिता परिसरत्सद्वाहिनीसङ्गता ।
राजन्ते स्थिरकम्बुकुम्भमकरे कोशै समृद्धा सदा
कासारा क्षितिपा इवास्य नृपतेर्हंसोल्लसत्कीर्तय ॥२५॥

सौन्दर्ये मकरध्वजप्रतिनिधि दाने च कर्णोपम
चातुर्ये रघुनन्दनेन सदृश भीमेन तुल्य रणे ।
वाचा सिद्धिषु वाक्पते समधिक लीलासु लक्ष्मीवर
भर्तार महमूदसाहमनघ वाञ्छन्ति नित्य प्रजा ॥२६॥

आलोकोद्यतलोकयाधिमदाऽऽनन्दोर्म्मिसवर्द्धन
दर्पाढ्य प्रसरत्प्रतीपनृपतिध्वान्तौघविद्ध्वसनम् ।
वीरश्रीमहमूदसाहनृपते शश्वद् धृत मूर्द्धनि
श्वेतच्छत्रमुदित्वर विजयते पूर्णेन्दुशोभाधरम् ॥२७॥

उच्चैरङ्कुशता विभर्ति वलिना या सर्व्वदा मौलिषु
प्रत्यर्थिक्षितिपालमूर्द्ध[पृ० ७ B]सु पुनर्या चक्रवद् भ्राम्यति ।
मान्यानां महतां च शेखरपदे मालेव या भ्राजते
वीरश्रीमहमूदसाहनृपतेराज्ञा जगद् रक्षति ॥२८॥

मर्य्यादां न विलङ्घयन्ति निधयो वारामवारोर्म्मय-
श्चन्द्रार्क्कावुदयास्तकालनियम नैवाप्यतिक्रामतः ।
यस्याज्ञावशतश्चरन्ति परितस्तारा निरालम्बने ।
सोऽयं श्रीमहमूदसाहमवतात् कर्त्ता जगत्तारक ॥२९॥

इत्याशीर्वचनपरम्परा. सृजन्ती वाग्देवी विरचितनव्यकाव्यबन्धा ।
शिष्याय त्रिदशगुरो पुरोगताय व्याकर्त्तुं पुनरुदयुङ्क्त राजचर्य्याम् ॥३०॥

श्रीमान् साहिमुदप्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद. ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात. श्रीमहमूदसाहिनृपति[पृ० ८ A]र्जीयात् तदीयात्मज. ॥३१॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरबक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे
राजविनोदे महाकाव्ये वंशानुसङ्कीर्तनो नाम द्वितीय. सर्गः ॥

॥ तृतीयः सर्गः ॥

उच्चैस्तरा कुञ्जरगर्जितेन प्रहृष्यमाणो हयहेषितेन ।
सान्द्रेण नादेन च दुन्दुभीनां प्रबुद्ध्यतेऽसौ समये नरेन्द्र ॥ १ ॥

उल्लासयन्त्यो रहसि स्वरेण वीणाक्वणैस्सम्वदतानुरागम् ।
सौभाग्यवत्योऽस्य विलासगीतै प्राभातिकं मङ्गलमाचरन्ति ॥ २ ॥

आलोकनीयं घनपक्ष्मलाभ्या विलोचनाभ्यामलिमञ्जुलाभ्याम् ।
मुखारविन्दं स्वयमाश्रिताऽस्य प्रबोधलक्ष्मीर्मुदमादधाति ॥ ३ ॥

प्राभातिकाचारविधौ जलेन प्रक्षालितं वीक्ष्य मुखं नृपस्य ।
सरोरुहं मुञ्चति नाम्बुवासं शशी पुनर्मज्जति वारि[पृ० ८ B]राशौ ॥ ४ ॥

सुवर्णवर्णेऽस्य विगेपमङ्गे कवर्ण्यराग. कुरुतेऽधिवर्ण्यम् ।
अलङ्कृतानेन कुरङ्गनाभि. श्रीखण्डकाश्मीरविलेपनश्री. ॥ ५ ॥

विलासिनं श्रीमहमूदसाहे सद्भिः सभायामभिशोभितायाम् ।
कर्पूरवासैः ककुभो मुखानि ताम्बूलयोगः सुरभी करोति ॥ ६ ॥

मृणालसूत्रैरिव निर्म्मितं यद् अयं नवीनैर्मृदुलं महीन्द्रः ।
वासः शरच्चन्द्रमरीचिगौरमङ्गस्य तन्मण्डनमाबिभर्ति ॥ ७ ॥

विश्लेष्य पूर्णाविपुषः प्रयत्नात् त्वष्ट्रेव पूर्वं घटितं मयूखैः ।
रत्नप्रभाभूषितदिग्विभागमयं महीन्द्रो मुकुटं बिभर्ति ॥ ८ ॥

परिस्फुरत्कुण्डलपद्मरागप्रभाङ्कुरैरञ्जितमास्यमस्य ।
स्मिताशुलेशैर्हसतीवगूढं बालारुणस्पृष्टसरोजलक्ष्मीम् ॥ ९ ॥

अलं विशालं नृहरेर्विभाति वक्षःस्थलं श्रीमहमूदसाहे । [पृ० ९ A]
लक्ष्मीर्यदालिङ्ग्य सदा सहारं मुदा करोति प्रमदाविहारम् ॥१०॥

अयं भुजाभ्यां स्फुरदङ्गदाभ्यामाश्लिङ्गिनाभ्यां चतुरङ्गलक्ष्म्या ।
विराजते श्रीमहमूदसाहिः साम्राज्यमुद्राङ्कितपाणिपद्मः ॥११॥

पादारविन्दं महमूदसाहेः श्रियोऽधिवासं वयमानमामः ।
दारिद्र्यसन्तापनुदे सदैव यदातपत्रीक्रियते धरित्र्या ॥१२॥

आत्मानमादर्शतले मलीलमालोकयन्तं महमूदसाहिम् ।
मुह्यन्ति साक्षात् मदनावतारमुदीक्ष्यमाणा मदिरायताक्ष्यः ॥१३॥

आसीनमष्टापदपीठपृष्ठे राजानमेनं नयनाभिरामम ।
नीराज्य नार्यो नवरत्नदीपैर्मुक्ताक्षतैः सस्पृहमर्चयन्ति ॥१४॥

एवं सदान्तःपुरसुन्दरीभिर्मुदा प्रसन्नो वरिवस्यमानः ।
बहिः सभाजस्थितराज [पृ० ९ B] लोकविलोकनेच्छां सफली करोति ॥१५॥

सिंहासनं श्रीमहमूदसाहे सहेलमारोहति राजसिंहे ।
जयेतिशब्दः प्रसरन् पुरस्ताज्जनस्य कर्णोत्सवमातनोति ॥१६॥

सहस्रपत्रं ध्रुवमातपत्रं शिरस्युदारं महमूदसाहेः ।
सुवर्णकुम्भश्रितकर्णिकाश्रि चकास्ति गारुत्मद् दण्डनालम् ॥१७॥

तपः पुराऽप्यत याभिरिन्दोरखवस्य सम्पर्कमवाप्य भाभिः ।
एताश्चलच्चामरचारुभावाम्नरेन्द्रचन्द्रं परिवीजयन्ति ॥१८॥

आलोकमात्रादपि सर्वलोकानाह्लादयन्तं कमनीयकान्तिम् ।
नेच्छन्ति के द्रष्टुमिमं नरेन्द्रं सतां सभापर्वणि पूर्णचन्द्रम् ॥ १९ ॥

सिंहासनस्थस्य पदारविन्दं दूरान् नमत्यस्य नरेन्द्रवृन्दम् ।
तत्पीठभूमौ विलुठत्युदारा तन्मौलिमाणिक्यमयूखधारा ॥ २० ॥

निरङ्कुशत्वेन मदातिरेका [पृ०१०A] नोज्झन्ति ये स्वैरविहारदर्प्पम् ।
स्थिता निषिद्धा महमूदसाहेर्द्वारि गजेन्द्रा इव ते नरेन्द्रा ॥२१॥

समं समास्थाय नरेन्द्रवृन्दैरकुण्ठकण्ठं मधुरं पठन्तः ।
वैतालिकाः श्रीमहमूदसाहं छन्दोविदः ससदि संस्तुवन्ति ॥२२॥

उपायनानामपि लक्षकोटी राजन्यकोटीरमणेः[1] पुरस्तात् ।
दृक्पातमात्रेण कृतप्रसादा यदृच्छयैवार्थिजना लभन्ते ॥२३॥

यतो यतो भूमिभुजोऽवतीर्णं प्रसादपूर्णं खलु दृक्तरङ्ग ।
ततस्ततः ससदि रत्नमालालक्ष्येण लक्ष्मीर्भजते विशाला ॥२४॥

आकर्ण्यते कर्णविशेषवर्ण्यात् सुवर्णवर्षान् महमूदसाहे ।
प्रागेव सिद्धार्थमनोरथत्वाद् देहीति कस्यापि न दीनशब्दः ॥२५॥

कवीश्वराणां महमूदसाहेर्द्वारि प्रसादाधिगता द्विपेन्द्राः ।
दानाम्बुना कीर्त्तिसरोजि [पृ०१०B] नीनां स्फुटैर्मृणालैरिव भान्ति दन्तैः ॥२६॥

कवित्वरूपेण महाकवीनां कीर्त्तिः स्फुरन्ती महमूदसाहेः ।
विगाहते राजसभान्तराणि सुधाभिषेकोत्सवमावहन्ति ॥२७॥

सिंहासने भाति नरेश्वरोऽसौ व्याप्नोति तेजोमहिमाऽस्य विश्वम् ।
कोशः श्रयत्यस्य कृपाणयष्टिरानामयं रक्षति दिक्षु चक्रम् ॥२८॥

आक्रम्य दिग्दशकचक्रमपाकरिष्णोरन्धं तमो गगनमूर्द्धिन गतस्य पूष्णः
दृग्गोचरे चरति कोऽपि न भूतले यस्तुल्यो रणे वितरणे महमूदसाहे ॥२९॥

उच्चैः प्रतापदहनं समरे प्रदीप्यज्जुह्वन् मुहुर्त्रहलगात्रवकीर्त्तिलाजान् ।
रत्नाकरोचितसमुज्ज्वलमेखलाया वीरः करग्रहमयं कुरुते धरायाः ॥३०॥

उल्लासयन् श्रियममुष्यकरः समुद्रः सान्द्राः प्रदा [पृ० ११ A] नलहरीरभितो बिभर्त्ति ।
यास्तन्वते दशदिगन्तरसैकतानि मुक्ताफलैरिव यशोभिरलङ्कृतानि ॥३१॥

इति दशशतनेत्रस्यापि देवी समक्षं क्षितिशतमखकीर्तिं कुर्व्वती ब्रह्मपुत्री ।
व्यलसदिह कटाक्षश्रेणिभृङ्गानुयातैः स्मितकुसुमसमूहैः पूजयन्ती समाजम् ॥३२॥

---

(१) कोटीर—किरीटः

श्रीमान् साहिमुदफ्फरस्समजनि श्रीगूज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत साहिस्ततोऽहम्मद ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मज ॥३३॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरवक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे राजविनोदे महाकाव्ये सभासमागमो नाम तृतीय सर्ग ॥[पृ० ११ B]

॥चतुर्थः सर्गः॥

भूयोऽप्यभाषत सुभाषितभावपूर्णा सा पूर्णचन्द्रवदना त्रिदशेन्द्रमेवम् ।
राज्ञोऽस्य वेत्रधरदत्तपदावकाशान् देशाधिपान् सदसि पश्य कृतप्रवेशान् ॥ १ ॥

देशस्य यस्य महिमानमिवोपगातु गङ्गा विराजति सहस्रमुखी भवन्ती ।
वङ्गस्य तस्य नृपति प्रणति विधत्ते प्राचीपयोनिधिनिमर्पितरत्नपाणि ॥ २ ॥

मुक्ताफला यमललारकसन्निभानि व्यक्तेन्दुखण्डशुचिशुक्तिपुटार्पितानि ।
अस्येश्वरस्य यशसा तुलया धृतानि राशीकरोति पुरत प्रणिपत्य पाण्ड्य ॥ ३ ॥

स्त्रीणा विचित्रवरवेशविभूषणानामग्रे निधाय शतक हरिणेक्षणानाम् ।
आराधयत्यमुमनङ्गजिदङ्गरूपमङ्गाधिप मरसनृत्यममुत्कलोऽस्मौ ॥ ४ ॥

निर्गच्छता प्रविशता मुहु[पृ०१२A]रङ्गदेभ्यो हीरैश्च्युतं क्षितिभुजा भुजघट्टनेन ।
द्वारप्रदेशमतिदृश्यममुष्य पश्यन् मान जहाति किल रत्नपुराधिराज ॥५ ॥

आयाति मत्यरलयैव कलिङ्गनाथ श्रीगूज्जरक्षितिपते प्रतिहारभूमौ ।
उद्दामधामिकमहूतरहंमियूथदानद्रवप्रसरपङ्किलविच्छिलायाम् ॥ ६ ॥

अश्रान्तमेव समरेषु कृतश्रमा ये प्रागेव साम्प्रतममुष्य सभाङ्गणस्था ।
तेऽमी त्रिलिङ्गसुभटा नटता प्रपन्ना प्रोद्दण्डताण्डवकला परिदर्शयन्ति ॥ ७ ॥

भक्त्या न लङ्घयसि राघवसेतुसीमा लङ्कापति तदपि यस्तनुते सशङ्कम् ।
सोऽप्यस्य पश्य चरणौ शरण प्रपन्न कर्णाटप सम्पढौकितहेमकूट ॥ ८ ॥

मुक्ताचलेन्द्र पयोधिनिवेशबाधामुर्व्यामवज्ञयगभीर[पृ०१२B]नया चरद्भि ।
ऐरावतप्रतिबलैर्रजनीन्द्रमेन दत्तावलै भजति सिंहलभूमिपाल ॥ ९ ॥

चेष विशेषरुचिर दधनादरेण हस्तारविन्दसमुदञ्चितचामरेण ।
राजा विराजतितरा परिहृष्यमानो(णो) गोष्ठीषु दक्षिणनृपेण विचक्षणेन ॥१०॥

एतस्य चण्डभुजदण्डपराक्रमेण निश्शेषखण्डितरणाङ्गणगौण्डभाव. ।
सर्व्वस्वमेव निजजीवितरक्षणाय दण्डं समर्प्पयति माल्वमण्डलेशः ॥११॥

य पार्थिव. पृथुतर खलु कुम्भकर्ण. कर्णेन वर्णमुचितं सहते तुलाया. ।
सोऽयं करोति महमूदनृपस्य सेवां दण्डे वितीर्णवरभूरिसुवर्णभार' ॥१२॥

य. कामरूप इति देशपति' प्रसिद्धो न क्षोभ्यते परबलैर्ध्रुवमानमस्य ।
अस्याग्रतो विलुठति प्रभुशक्तियोगाद् आकृष्ट एष विनिवेदि [पृ० १३ A] तरत्नदण्ड. ॥१३॥

एतस्य केलिवनराजिविहारलाभाद् गन्तु न राजवनमिच्छति मागधेन्द्रः ।
न स्तौति पुष्पामयमण्डपवासयोगाद् भोगाय पुष्पपुरवासमपि प्रकामम् ॥१४॥

यद्देशमेत्य सरितौ परिपप्वजाते जह्नो सुता च यमुना च तरङ्गदोर्भि. ।
सोऽयं प्रयागपतिरुज्ज्वलशातकुम्भकुम्भै पयो वहति पेयममुष्य राज्ञ. ॥१५॥

य शूरसेन इति शूरतया प्रसिद्धो देशोऽस्ति तस्य पतिरेष विशेष शूरः ।
क्ष्माचक्रवर्त्तिमुकुटस्य समीपवर्त्ती सेनाधिपत्यमधिगत्य जयत्यरातीन् ॥१६॥

पार्श्वे चरन् हरिचरित्रकथाप्रसङ्गात् कोटिम्भरेर्महम्मदक्षितिपालसूनो ।
कृत्येषु नित्यमधिकृत्य पद हि राज्ञां विज्ञापना वितनुते मथुराधिनाथ. ॥१७॥

एतस्य सम्प्रति मुदप्फरपातसाहेर्वंशै[पृ० १३B]कभूषगमणेश्चरणेऽवनम्र. ।
ढिल्लीपुरीपरिदृढोऽप्यभिमानगाढा प्रौढि परित्यजति निर्ज्जितकान्यकुब्ज ॥१८॥

एतत्समाजमणिमण्डितवेदिकायामालोकयन् घनविलेपनमेणनाभे. ।
नेपालमण्डलपति' शिथिलीकरोति स्वस्या क्षितेरपि तदाकरताभिमानम् ॥१९॥

इन्द्रोऽसि वीर वरुणोऽसि वसुप्रदोऽसि लोकेश्वरोऽप्यसि' पुरारिमुरारिमूर्त्ति ।
इत्थं हि साहिमहमूदनृपस्य साक्षात् काश्मीरमण्डलपतिस्तनुते प्रशसाम् ॥२०॥

वीर स्वयं समिति विद्विषतां निहन्ता प्रख्यातपौरुषमशेषधनुर्द्धरेषु ।
आरोहणे चितविचित्रतुरङ्गमाणा सवाहनाविधिषु सिन्धुपतिं नियुङ्क्ते ॥२१॥

लक्ष्मेण शार्ङ्गधनुषामपि वाजिना च तेजस्विना समुपढौकितभागधेय. ।
अस्याग्रतो भवति गूर्ज्जर[पृ० १४ A]पातसाहेरानम्रमौलिरधिप किल मुद्गलानाम् ॥२२॥

एतस्य साहिमहमूदनृपस्य सर्व्व सर्वंसहेश्वरतयाधिकवर्द्धितर्द्धेः ।
स्पर्द्धेत कस्तुलनया मलयाद्धिमाद्रिमस्ताचलादुदयभूमिधरं च यावत् ॥२३॥

सिंहासने महति तिष्ठति चक्रवर्ती यस्मिन् विशिष्टमणिदर्पणदर्शनीये ।
पार्श्वस्थराजपरिषत्प्रतिबिम्बिताङ्गी साक्षाद् बिभर्त्ति पदमस्य निजोत्तमाङ्गे ॥२४॥

अस्यावनीन्द्रतिलकस्य[1] सभा कवीना केषा न चेतसि चमत्कृतिमावहन्ति ।
वक्त्रारविन्दनिवहेषु समुल्लसन्त स्वच्छन्दमि दुरुचयो वचसा विलासा ॥२५॥

अस्य प्रभोर्वितरणार्जित[2]कणकीर्तेर्विद्वज्जना प्रणयदृष्टिकृतप्रसादा ।
पट्टाम्बरैश्च मुकुटैश्च समप्रतिष्ठामम्भावना सदसि भूप [पृ० १४ B] तिभिर्लभन्ते ॥२६॥

रागेण सुस्वरतया प्रगुणेन हा हा हू हूपहासपटुसद्गमकप्रयोगा ।
गीतानि गायनवराश्चरितैरुदारैर्गायन्ति गुम्फितपदानि महीमघोन ॥२७॥

अन्योन्यमुष्टिहतिवक्रितपृष्ठदेशा पादाभिघातपरिघट्टितहृत्कपाटा ।
खेलन्त्यनर्गलभुजार्गलदुर्निवारा कौतूहलाय बलिन पुरतोऽस्य मल्ला ॥२८॥

भाति प्रसृत्वरतरं परितो जनौघैर्विभ्राजमानबहुरत्नसमृद्धिमद्भि ।
क्षोणीसहस्रनयनस्य महान् समाज पूर्णस्तरङ्गनिवहैरिव वारिराशि ॥२९॥

स्वच्छन्दमेव निजमन्दिरभूमिवासु य य प्रदेशमभिलष्य पद दधाति ।
सभ्या प्रतापनिधिमेनमनुव्रजन्त सर्वत्र तत्र किरणा इव विस्फुरन्ति ॥३०॥

अमृतममरनाभिदृष्टिभि [पृ० १५ A] प्रीतियोगा मुहुरपि बहुमान भावयन् भृत्यवर्गम् ।
विशति मधुरगीतैरेष नृत्योत्सवाय रचितसदुपचार मन्दिर सुन्दरीभि ॥३१॥

इति किल महमूदसाहेरभिनववैभववर्णने प्रसक्ता ।
पुनरपि पुरहूतकौतुकाय सरसपदानि सरस्वती व्यतानीत् ॥३२॥

श्रीमान् साहिमुदप्फरस्समजनि श्रीगुज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजा गायासदीनाख्यया
ख्यात श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मज ॥३३ ॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरवकमपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे
राजविनोदे महाकाव्ये सर्वावसरो नाम चतुर्थ सर्ग ॥
श्री कल्याणमस्तु लेखक पाठकयो ॥श्री॥ [पृ०१५ B]



(१) सभायवी० इति प्रतौ । (२) वितरणार्जित० इति प्र० ।

॥ पञ्चमः सर्गः ॥

इतो मृदङ्गध्वनिना मृगीदृशो मुहुर्वहन्त्योऽभिनयाय विभ्रमम् ।
रणज्झणन्नूपुरसूचितागमा विशन्ति सङ्गीतकरङ्गमण्डपम् ॥१॥

सुगन्धिनानाकुसुमस्रजाभरैः प्रक्लृप्तमुद्दिश्य विलासमण्डपम् ।
समापतन्तः परितो मधुव्रताः सृजन्ति झङ्कारमनोहरा दिशः ॥२॥

समीरणो रङ्गभुवः समुल्लसन् विलेपिता या घनयक्षकर्दमैः ।
सभाजनं भावयतीव सौरभैः कृतार्थयिष्यन्निव गन्धवाहताम् ॥३॥

समन्ततोऽपि प्रसृतः नृपालये प्रकृष्टकृष्णागरु[1]धूपसञ्चयम् ।
गवाक्षमार्गैर्नियता मुहुर्वहिर्नभस्वना वासितमम्बरं महत् ॥४॥

तमो नुदत्यो निजभूषणस्फुरन्मणिप्रभाभिः परितः पुरन्ध्रयः ।
नृपस्य नीराजनमङ्गलोत्सवं सृजन्ति सायंतनदीपमालया ॥५॥

उदारशृङ्गारमनोहराकृतिर्विभाति राजा कनकासनस्थितः ।
स्फुरत्सुप[पृ० १६A]र्णोपरि सन्निपेदुपः श्रयन्मुरारेरनुरूपतामिव ॥६॥

समं समन्तात् परिवृत्य वल्लभं विभान्त्यमूश्चन्द्रमिवोडवः स्थिताः ।
विलोचनैरञ्चितविभ्रमैस्स्त्रियः कृतोपहारा विकचोत्पलैरिव ॥७॥

इमाः प्रकृत्यैव परं मनोरमा पुनर्विचित्राभरणैर्विभूषिताः ।
तथा च नृत्याभिनयार्थमुत्सुकाः कथं न रामा रमयन्ति मानसम् ॥८॥

अमुक्तया पाणितलादपि क्षणं रहस्यसख्येव निबद्धरागया ।
कलं क्वणन्त्या वरवीणयाऽनया प्रवीणया राजमनो विनोद्यते ॥९॥

जितं हि वादित्रगतेऽपि वेणुना स्वयं निधायाधरपल्लवेऽनया ।
यदेष रागातिशयेन मुग्धया स्वकण्ठमाधुर्यमिवोपशिक्ष्यते ॥१०॥

दिगन्तरालेषु नरेन्द्रमन्दिराद् विजृम्भते सान्द्रमृदङ्गनिस्वनः ।
अमुं समभ्यस्यति गर्जितच्छलाद् वलाहकस्ताण्डवयन् शिखण्डिनः॥११॥ [पृ० १६B]

कलावतीयं मधुरेण गायति स्वरेण संवासितरागमूर्च्छनम् ।
निजं मनो मञ्जुलकांस्यतालजस्वनैरिवोज्जागरयन्त्यनुक्षणम् ॥१२॥

इयं मुखाम्भोरुहसौरभार्थिनी विलासिनीनां मधुपावलिर्मुहुः ।
मनोरमालप्तिषु गीतिषु श्रुतेः करोति हुङ्कारभरेण पूरणम् ॥१३॥

---

(१) गुरु इति प्र० ।

अऽङ्कृत षोडशभि पदैरिय समग्रसूडक्रमगानपण्डिता ।
प्रबन्धमेलारयमखण्डलक्षण विचक्षणा गायति भूपते पुर ॥१४॥

पदैरुदारैर्विरुदै स्वरैरपि स्फुटैश्च पाटैरतिहर्षवर्द्धनम् ।
अमुष्य राज्ञ कलकण्ठभाषिणी कुतूहलाद् गायति हर्षवर्द्धनम् ॥१५॥

प्रियेण वृत्तै स्वयमेव निर्मितै स्वय च कण्ठाभरणीकृतैरियम् ।
शुचिस्मिता गायति वीणया सम मनोरम रागकदम्बक मुदा ॥१६॥

इय विशन्ती नवरङ्गमङ्गना स्फुरत्प्रसूनै परिपूरिताञ्जलि ।[पृ० १७ A]
प्रियस्य सौन्दर्य्यविनिर्जितात् स्मरात् स्वय ग्रहीतैरिव भाति मार्गणै ॥१७॥

समुल्लसन्ती करपल्लवश्रिया स्मितेन तन्वी कुसुमानि तन्वती ।
इय कटाक्षभ्रमरोपशोभिता मनोभुव कल्पलतेव नृत्यति ॥१८॥

विधाय विश्राम्यति नृत्यमेकिका परानुसन्धानपरा च नृत्यति ।
समानसौन्दर्यविशिष्टयोर्द्वयोर्विविच्यते नैव परापरक्रम ॥१९॥

समानलावण्यवयोविभूषणा प्रतन्वते लास्यविलासमङ्गना ।
इमा सुसङ्गीतकलाकुतूहलात् करोति मन्ये बहुरूपविभ्रमम् ॥२०॥

प्रदर्शयन्त्यो वदनै सुधानिधे स्फुट वपुर्व्यूहमुदारकान्तिभि ।
धार्यैदधत्यश्च कुशेशयश्रिय विवृण्वते भावमपूर्वमङ्गना ॥२१॥

यथाङ्गहारैर्हरिणेक्षणा क्षणान् नव नव विभ्रति विभ्रमोदयम् ।
तथातिदर्पादधुना पुरद्विषो जयाय सज्जीभवतीव मन्मथ ॥२२॥[पृ० १७ B]

गतानि लीलाललितानि शिक्षितु नितम्बिनीना चरणाब्जमङ्गतै ।
मरु क्वणद्भूमणिहसकावलिच्छलेन हसैरभिरम्यते मन ॥२३॥

समुच्चयैर्भूषणरत्नरोचिषा स्फुट दधाना परिवेषमुज्ज्वलम् ।
नतभ्रुवो बिभ्रति नेत्रवासमस्तिरस्करिण्यन्तरिता इव भ्रमी ॥२४॥

समीरणै पल्लवलालनोद्गतै प्रसक्तनृत्यश्रमवारिहारिभि ।
करोति रङ्गाङ्गणकेलिवाटिका वधूजनाना व्यजनौचितीमिव ॥२५॥

प्रियस्य सङ्गीतरसे मनो मनाक् प्रसक्तमाकर्पति चारुहासिनी ।
इय चलच्चामरचारुदोलता समुल्लसत्काञ्चनकङ्कणक्वणै ॥२६॥

प्रहृष्टरोमाञ्चसमुच्छ्वसत्तरस्तनद्वयाभोगविगाढकञ्चुकम् ।
इय सुनेत्रा प्रियपाणिनार्पित बिभर्ति रत्नावलिचारुचुम्बकम् ॥२७॥

स्वयं प्रसन्नेन कुचावलङ्कृतौ प्रियेण हारेण नितान्त हा[पृ० १८ A]रिणा ।
अतीव तुङ्गौ पृथुलौ सुमध्यमा सखीजने साक्षिणि का न मन्यते ॥२८॥

करे गृहीता मणिकङ्कणार्प्पणे प्रियेण तन्वी तनुकम्पमात्मन. ।
मरुच्चलाना चतुरा विनुह्नुते मुहुर्लतानामभिनीय विभ्रमम् ॥२९॥

इत. प्रफुल्लेन नवाम्वुजन्मना सरोजिनी भानुमिवोपतस्थुपी ।
विभाति वाला प्रसृतेन पाणिना प्रमादयन्ती प्रियमूर्मिकाकृते ॥३०॥

इत कवित्वै प्रतिभावती प्रभुं नवैर्नवैस्तोपयति प्रतिक्षणम् ।
स्फुट पठन्ती किल तानि पञ्जरे करोति कीरावलिरस्य कौतुकम् ॥३१॥

जयेतिशब्द समुदीरयन्त्यमी कलाविदो मङ्गलसूचक मुहु ।
नरेन्द्रलक्ष्मीर्निनदेन दन्तिना तमेव संवर्द्धयतीव सम्मदात् ॥३२॥

यो दत्तवानिह हि भूरि सुवर्णवर्पि-
कर्णाय कुण्डलयुग जगदकदीप. ।
सोऽय प्रसारितकर. किल सुप्रभातं
कुर्वन्नृपस्य पुरत प्रतिभाति भानु ॥३३॥ [पृ० १८ B]

इत्यस्य साहिमहमूदनृपस्य गेहे सङ्गीतकेलिपु शतक्रतुमालपन्ती ।
वीणाक्वणैरिव विरञ्चिसुतावचोभिश्चित्ते चमत्कृतिमवत्त समाजभाजाम्॥३४॥

श्रीमान् साहिमुदप्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद. ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात. श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मज. ॥३५॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरबक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे
राजविनोदे महाकाव्ये सङ्गीतरङ्गप्रसङ्गो नाम पञ्चमः सर्गः ॥



॥ षष्ठः सर्गः ॥

अथ विकस्वरवारिरुहेक्षणा शरदिव स्फुटकाशसिताशुका ।
पुनरवोचत हृममृदुस्वना सुरपतिं प्रति वागधिदेवता ॥१॥
अयमनर्गलबाहुबलोद्धत प्रयतते परचक्रजिगी[पृ० १९ A]षया ।
वसुधयापि नृपा धनिनो न किं न विजयेन विना तु यशस्विन ॥२॥
भजति मन्त्रमशेषविशेषवित प्रकृतिभि सुकृती कृतनिश्चयम् ।
अभिमत सकृदुद्यमिनामपि स्फुरति मन्त्रबले खलु सिद्‌ध्यति ॥३॥
करगतैव सदा परखण्डने प्रखरतर्कमतेरिव वादिन ।
विजयसम्पदमुष्य सुनिश्चिता समरसंसदि विक्रमशालिन ॥४॥
भुजबलेन विनिर्ज्जितभूतल प्रतिबलो न हि कश्चिदमु प्रति ।
निजचमूरमुनातिगरीयसी परिजनप्रणयेन पुरस्कृता ॥५॥
क्षितिभृत कटके गणना कृता सुभटकोटिषु मुख्यतया स्थिते ।
करिषु यूथशतैरथ पट्टविनिभिहयवरेषु रथेषु च मण्डले ॥६ ॥
अगणित नितरन्यसनीपताववितरत वसु वैश्रवणोपमे ।
हसति गूर्ज्जरवीरवसुधरा न नगरी न विभीषणपोषिताम् ॥७॥[पृ० १९ B]
असिषु निर्मलितेषु शरासनेष्वधिगुणेषु तथा कवचेषु च ।
ध्रुवमभेद्यतरेषु रणैषिणा प्रकटयत नवीनमिवादरम् ॥८॥
स्मरति य मनसा तदुपस्थित मपदि वस्तु पुराकृतसंग्रहम् ।
भवति भूमिपतेरतिवल्लभ किमिह भाग्यवत खलु दुर्ल्लभम् ॥९॥
नरपतेर्बहुमानपदे स्थिता प्रकृतय पुरत समुपस्थिता ।
निजनिजाधिकृतिप्रतिवादरा अवहिताद् बहुमेयमसन्विता ॥१०॥
क्षितिपतौ विजयाय यियासति प्रसृमर पटुदुदुभिसम्भव ।
ध्वनिरदैनितरा परिपूरयन् गिरिदरीर्मुखरीकृतदिङ्मुख[१] ॥११॥
सकलभूवलयस्य पुरन्दर प्रचरणाम्बभृतामतिसुन्दर ।
विलसदभ्रमुवल्लभवन्धुर समधिरोहति सम्प्रति सिन्धुरम् ॥१२॥
विदितवीरमहत्त्वपुरस्सर जय जयेति [पृ०२०A] गिर पृथिवीश्वरम् ।
चटुलचारणवन्दिजनेरिता श्रुतिगता सुखयन्ति समन्तत ॥१३॥

---

(१) स्मिमुख इति प्र० ।

दिशि दिशि द्विषतामतिदुस्सहो वहिरसावुदयन्निजमन्दिरात् ।
अधिकदीप्तिधरा समुदीक्ष्यते दिनकर शरदम्बुधरादिव ॥१४॥

नरपतेरनुकारितया श्रिया स्फुटतर बहुरूपगुणाश्रयै ।
अवनिपैर्मदनैरिव सङ्गत चलति चारुबल मकरध्वजै ॥१५॥

अथ सुमङ्गललम्भितगोपुरो निविशतेऽनतिदूरतरे पुर ।
उपवनेऽनुगतैर्वहुशोऽभित पुरजनै प्रणयादुपशोभित ॥१६॥

अरुणरागभरस्फुरिताम्बर प्रततरश्मिसहस्रमवेक्षते ।
इह भुवोऽविभुवो नवमण्डप दिनकृते. प्रतिरूपमिवोदितम् ॥१७॥

सितपटप्रभवै. शरदम्बुदप्रतिभटै कटकस्य निवेशभू ।
हिमगिरेरिव सानुभिरुन्न[पृ० २०A]तैरुपचिता क्व न राजति मण्डपै ॥१८॥

विजयिन कटकेऽस्य महीपते प्रकटितैर्निशि दीपसहस्रकै. ।
प्रतिहता विजनेषु विजृम्भिता रिपुपुरेषु घना तमसाभरा ॥१९॥

अमृतकुम्भमिवैन्दवमण्डल क्षितिभुज सुरराजदिगङ्गना ।
अभिमुख कुरुते ध्रुवमुच्चकैरुदयपर्व्वतमौलिसमर्पितम् ॥२०॥

क्रीडाविचित्रनवनाटककौतुकेन निद्रा दृशो प्रियतमामपि वञ्चयित्वा ।
कं वा न वीरकटके रमयत्युदारा वाराङ्गनेव रजनी शिशिरप्रगल्भा ॥२१॥

प्राच्या हरित्यरुणसङ्गमपाटलिम्ना व्यक्तेन लक्षितविभातनिशाविभागा ।
आराधयन्ति महमूदनराधिराज वैतालिका सुललितैर्वचसां विलासै ॥२२॥

यन्मङ्गलं पुररिपोर्गिरिजाविवाहे लक्ष्म्या स्वयम्वरविधौ च जनार्दनस्य ।
श्रीपातसाहमहमूदनरेन्द्र नित्य [पृ०२१ A] लाभात्तदस्तु रणमूर्द्ध्नि जयश्रियस्त ॥२३॥

कान्ता नितान्तरतकेलिभरेण खिन्ना द्रागेव तल्पमिव नोज्झितुमिच्छतीयम् ।
व्योम्नस्तल नृपविचक्षणदीर्घयामा रात्रि स्फुरद्विरलतारकपुष्पहारा ॥२४॥

अस्माभिरेतदनघ तव गीयमानमाकर्णयन्निव यश श्रवणाभिरामम् ।
चन्द्र कुरङ्गमधुना परिहर्तुमिच्छुर्नातिद्रुत प्रमितकान्तिरपि प्रयाति ॥२५॥

यावत्कथाभिरनुनीय कथ कथञ्चित् कान्त प्रियां नयति मन्मथबाणवश्यम् ।
तावच्छ्रुते. कटु रटत्यनुवेलमुच्चैर्वैरीभवँस्तरुणयोरिव ताम्रचूड ॥२६॥

प्राचीमुखं भ्रमवशात् परिचुम्ब्य किञ्चिद् रागादिवाम्बरवशात्त्ववलम्बमान ।
दूरात् प्रसारयति सम्प्रति पद्मिनीना प्राणाधिप किल करान् परिरम्भहेतो ॥२७॥

उत्कण्ठया निशि भृश विरह विषह्य तीरान्तरेषु सरस सरस रसन्ति । [पृ० २१B]
राजन् परस्परवितीर्णमृणालनाला येतानि हन्त मिथुनानि रथाङ्गनाम्नाम् ॥२८॥

प्राभातिकेन पवनेन हिमागमेऽपि भूय प्रबोधितमहाविरहानलार्च्चि ।
त्वद्वैरिणामविरलैर्जगदेकवीर सिञ्चति लोचनजलैर्हृ दय तरुण्य ॥२ ॥

श्रीमण्डपे तव नवारुणभाविशिष्टमाञ्जिष्ठमाञ्जिमनि मङ्गलगायनीनाम् ।
नि श्वाससौरभगुणेन मुहुभ्रमन्तो वीणारवमधुकरा नृप सम्वदन्ते ॥३०॥

दन्तावलेष्वधिकृता युधि योधमुख्यान् ग्रामाय चाटुभिरमून् प्रतिबोधयन्ति ।
धीरा पराभवमपि प्रणयात् सहन्ते मानोज्झिता न नृपसम्पदमाद्रियन्ते ॥३१॥

अयो यमत्सरभृतो नवम दुरासु क्षुण्णोदरासु खुरलीखुरलील्यैव ।
चेतो हरन्ति मधुर नृप हेषमाणा प्राभातिकाय यवसाय हयास्त्वदीया ॥३२॥

नाद समुल्लसति [पृ० २२ A] मदल्झल्लरीणा सेवार्थराजकसमाजनिवेशशंसी ।
राजन मुखानि घनमङ्गलभूरिभेरीमाङ्कारभाञ्जि ककुभामभितो भवन्ति ॥३३॥

इति मधुरवचोभिर्मागधैस्स्तूयमान क्षितिपतिशतचूडारत्ननीराजिताङ्घ्रि ।
दिनकर इव भूयस्तेजसा वर्द्धमानो महमदनृपसूनु स्वा सभामभ्युपैति ॥३४॥

एव निगद्य वचसामभिदेवता सा सानन्दमुल्लसितकुन्दसमानहासा ।
एतत्समाजकविराजकुल कटाक्षैरालक्षितप्रचलषट्पदलक्षणीयै ॥३५॥

श्रीमान् साहिमुदफ्फरस्समजनि श्रीगूर्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मज ॥३६॥

॥इति श्रीमहाराजाधिराज-जरबक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे-
राजविनोदे महाकाव्ये विजययात्रोत्सवो नाम षष्ठ सर्ग ॥
[पृ० २२ B]

॥ सप्तमः सर्गः ॥

प्रकामं सुश्रूषौ सति चरितमस्य श्रुतिसुखं
नृपं स्वेनाशेन श्रितवति सुरेन्द्रे प्रभवता ।
दधाना सान्निध्यं सदसि महमूदक्षितिपते
कवीना वाग्गुम्फैर्मुदमुदवहत् सा भगवती ॥१॥

एका सैन्यपरम्परा तव पुरो विन्ध्यं विलङ्घ्यापरा
प्रालेयाद्रितटीरतीत्य झटिति प्राची दिश गाहते ।
वीर श्रीमहमूदसाहनृपते धावन्ति सार्द्धं मृगै-
स्तन्मध्ये परिपन्थिनो निपतिता स्थातुं न यातुं क्षमा. ॥२॥

दिक्चक्रवन्वपरपत्तिपरम्पराणा पृष्ठानुयातगजवाजिरथव्रजानाम् ।
मध्ये पुर सरभटैस्तव मृग्यमाणा भ्राम्यन्ति हन्त हरिणैस्सह वैरिणोऽपि ॥३॥

त्रस्यन्ति यान्ति परिवृत्य विलोकयन्ति सङ्घीभवन्ति च विघटय्य दिशो व्रजन्ति ।
मृग्यश्च वीररिपुराजमृगीदृशश्च चेष्टा समा दधति चापभृत पुरस्ते ॥४॥

पृष्टे भ [पृ० २३ A] व द्भयवशाद् रिपव स्वनारीराक्रोशिनी पथि विहाय पलायमाना ।
वीर त्वदीयकटकेन पुरो निरुद्धास्तास्वेव निस्त्रपतया पुनरापतन्ति ॥५॥

प्राणास्तृणानि गणयन्ति रणेषु शूरा लोकापवादमिति लाघवद त्यजन्ति ।
रुष्टे नृप त्वयि परैर्वदनेर्ऽप्पितानि प्राणावनात् खलु गुरूणि कृतान्यरीणाम् ॥६॥

विख्यातवीरवरदर्प्पहरप्रचण्डदोर्द्दण्डकुण्डलितदुर्द्धरचापदण्ड ।
आखण्डलत्वमखिलक्षितिमण्डलस्य सिह निहसि सरुप पुरुपैकसिह ॥७॥

मुक्ताफलैरविरलत्वदसिप्रहारै कुम्भस्थलात् प्रतिगजस्य समुच्छलद्भि ।
हृष्टातिपौरुषभरात् तव वीरबाह्वोर्वर्द्धापन प्रकुरुतेऽभिमुखी जयश्री. ॥८॥

प्रतिनृपगजसिहत्रासजाग्रद्रयाणा जनयति हरिणा [पृ० २३ B] ना श्रेणिराश्चर्यमेषा ।
क्षितिगतिमपहाय त्वच्छरै पार्श्वलग्नैरुपहितनवपक्षे वान्तरिक्षे चरन्ती ॥९॥

हयखुरहतभूमीरेणुसछिन्नभानौ नभसि धृतपयोदभ्रान्तयोऽमी मयूरा ।
ध्वनिभिरतिगभीरैस्त्वद्यशोदुन्दुभीना नृपवर तरुखण्डे तन्वते ताण्डवानि ॥१०॥

चलदचलनिभाना व्यूहभाजामिभाना प्रकटयति समन्तात् कुम्भसिन्दूरपूर ।
अभिनवदिनभर्तुस्त्वत्प्रतापस्य वीर प्रसरदुदयसन्ध्यारागसौभाग्यलक्ष्मीम् ॥११॥

त्वत्सेनातुरगावलीखुरपुटैरुद्धूलिताभिर्ध्रुवं
धूलीभि स्थलता गता पथि भृश लुप्ता न नद्य. कति ।

वीर श्रीमहमूदसाहनृपते त्वत्कुञ्जराणां पुन-
　　र्दानोद्रेकलसत्प्रवाहनिवहैः पूर्णा न जाता क्वचित् ॥१२॥

राजन् स्यन्दनमण्डलानि बहुधाऽऽत्र[पृ० २४ A]त्तभ्रमं विभ्रति
　　क्रूरा सर्पति कोटिशश्च सुभटा कुर्वन्ति नक्रोचितीम् ।
कल्लोलश्रियमावहन्ति तुरगा द्वीपोपमा दन्तिनो
　　मज्जन्ति द्विषतां कुलानि बुलिना त्वत्सैन्यवारानिधौ ॥१३॥

धावत्तावकवाजिराजिखुरलीक्षुण्णक्ष्मामण्डली
　　धूलीव्रातनिपातपीतसलिले सद्यः स्थलत्वं गते ।
वीर श्रीमहमूदसाहनृपते त्वत्तोऽधुना तोयधौ
　　भूयः सेतुपथप्रबन्धचकितो लङ्कापतिः शङ्कते ॥१४॥

पश्य तो बहुरूपिणामभिनयं त्वद्वैरिणः स्वेच्छया
　　वीर श्रीमहमूदसाह सहसा घाटी*भिरावेष्टिता ।
न्यक्षाकारभृतोऽथ मर्कटमुखा केचिच्च कापालिका
　　योगिद्वेषभृतो नटैर्निजगृहान् निर्यान्ति नियन्त्रणम् ॥१५॥

त्यक्ता शृङ्खलिता द्विपा परिहता वाहोत्तमा सयता
　　मञ्जूषा [पृ० २४ B] समुपेक्षिता समणयः कोशालये सागले ।
पुत्रश्चाभिमुखं प्रकीर्णविपणा नो वीक्षिता एव तैः
　　सर्वस्वार्पणतत्परैस्तव परैः स्वं रक्षितुं जीवितम् ॥१६॥

त्रुट्यद्भिर्मणिमेखलागुणशतैर्हारैश्च कण्ठच्युतै[1]
　　विस्रस्त[2]रवतंसकैः प्रतिपदं भ्रष्टैः पुनर्नूपुरैः ।
कान्तारेऽपि पथि प्रसाधनविधिर्वित्तैरग्रतो
　　नाथ त्वत्परिपन्थिनां कुलवधूवर्गैः समारभ्यते ॥१७॥

अद्रेः कन्दरमाश्रयन्ति रिपवस्तं मन्दिरं मर्कटा-
　　स्ते दुःसस्तरशायिनः परममी दोलासु केलीपराः ।
ते भ्राम्यन्ति वनान्तरेषु विहरन्त्युद्यानमालास्वमी
　　स्वामिंस्त्वद्भुजविक्रमेण जनितं तद्भाग्यमप्यन्यथा ॥१८॥

आरोहन्ति गिरिं विशन्ति विपिनं भ्राम्यन्ति दिक्प्रान्तरे
　　पारावारमहो तरन्ति परितो द्वीपान्त[पृ० २५ A]रं यान्ति च ।

---

* घाटी धाड इति लाके ।

(१) कण्ठच्युत इति प्रतौ । (२) विस्रस्तैरिति प्रतौ ।

यत्र त्वद्भयतो व्रजन्ति रिपवो वीर प्रताप स्फुट
तत्रैव प्रकटीभवन् हठवशान् मन्येऽग्रतो धावति ॥१९॥

त्वद्विद्वेषिपुरेषु दावहुतभुग्ज्वालावली जृम्भते
लुम्पन्ति क्षितिमम्बर हयखुरैरुद्धलिता धूलय. ।
हेलाखेलकुतूहलादिव भटा. कुर्व्वन्ति कोलाहलं
स्वक्षतजौघरागसलिलैर्नश्यन्ति ते शात्रवा . ॥२०॥

आविद्धा. परित शिलीमुखशतै रक्तप्रसूनोद्गिर-
श्शाखाखण्डभृत परिच्छदभरैर्दूरान्तरे वर्ज्जिता. ।
लक्ष्यन्ते न वनान्तरे त्वदरयो राजेन्द्र सेनाचरै-
स्तुल्याकारतया वसन्तसमये लीना पलाशद्रुमैः ॥२१॥

किमपि विरमद्दानोद्रेका सरस्स्ववगाहनै
शिशिरसमयप्रान्ते राजेन्द्र भद्रगजास्तव ।
कमलवनिकास्त्य[पृ० २५ B]क्त्वा सद्य कटेषु निपातिना-
मिह मधुलिहा झङ्कारौघैर्वहन्ति मद मुहु ॥२२॥

अतिवलतया निर्मथ्नन्तो द्विपा युधि यूथपान् विविधनगरीसौधाट्टालप्रपातसमुद्यता: ।
उपवनतरुश्रेणीरुच्चैर्विचूर्णयितु क्षमास्तव कथमिमे राजन् मत्ता नदन्ति न दन्तिन ॥२३॥

रिपुजनपदाक्रान्तौ धारा समुत्पतनक्रिया प्रतिगजघटाकुम्भद्वन्द्वप्रहारविधौ पुन. ।
धरणिवलय जेतु राजन् परिक्रमणे दिशा कटकसुभटैरध्याप्यन्ते हयास्तव मण्डलीम् ॥२४॥

असमसमरक्रीडावेगान्मुहुर्विजितश्रमा पवनरयमप्युच्चैरेते निर्वर्त्तितुमुद्धता. ।
नृप तव हया क्षोणावातैरुदग्रखुराञ्चलैर्विजयकमलामागसन्ति त्वदीयकरे स्थिताम् ॥२५॥

न दक्षिणनृप क्षण भजति मेदपाटो मुद न विन्दति न माद्यति स्वहृदये स ढिल्लीपति. ।
धराधर तवाधुना समरचण्डिमव्याहत करोति न च डम्बर स खलु गौडचूडामणि ॥२६॥

अखण्डि रणचण्डिमा झटिति मण्डपक्ष्मापतेरलुण्टि पुटभेदन खलु गरिष्टमाष्टाभिधम् ।
अवन्धि गजवन्धिराडवधि दुर्द्धरो विन्ध्यराडमाथि मथुराधिपो नृप भवद्भटैरुद्भटै ॥२७॥

वङ्गा के क इमे त्रिलिङ्गसुभटा केऽमी महाराष्ट्रजा.
के वा मालव-मेदपाटकुनृपा कर्णाटकीटाश्च क ।
वीर श्रीमहमूदसाहनृपते त्वज्जैत्रयात्रोत्सवे
नि,साणध्वनिधौङ्कृतैरपि चमत्कुर्युर्दिशामीश्वरा ॥२८॥

सेवन्ते चरणौ शकक्षितिभुजो दत्ते च गौडेश्वर
कन्यारत्नमखण्डदण्डमपरे कर्णाट-लाटादय ।

त्यक्त्वा लुण्टितदे[पृ० २६ B]शकोशविषयो द्राग् दुर्गमानग्रहं
　　राजन् जीवितमात्रलाभमधुना कांक्षत्यसौ मालवः ॥२९॥
या शीर्णोपवनेषु दग्धनगरेष्वालोक्य वीचिभ्रमाद्
　　देशेषु द्विपता हठेन हरिणा धावन्ति तृष्णालवः ।
न ह्येता मृगतृष्णिका नृप भवत्तीव्रप्रतापानल-
　　प्लुष्टस्य द्युमणेर्निमज्जनकृते तोयाशया सम्भृता ॥३०॥
भग्नाना समराङ्गणे बलवता वीर त्वया वैरिणा
　　यद् ग्रामेषु पुरेषु याचकजना देशेषु च स्थापिता ।
एतत्ते महमूदसाह चरितं लोकोत्तरं सर्वतः
　　कीर्तिस्तम्भमिषादुदञ्चितभुजा व्याख्याति पृथ्वी स्वयम् ॥३१॥
असमसमरकेलीसङ्गमायासभाजां क्षितिप तव भटानां भग्ननानारिपूणाम्(१) ॥
मलयमरुदिदानीं चन्दनामोदवाही प्रियसुहृदिव मृद्नात्यङ्गमालिङ्ग्य खेदम् ॥३२॥ [पृ० २७ A]
स्फुरति विरहभाजां दुर्महोऽस्य वसन्तस्तरुणजनमनङ्गो बाणलक्षीकरोति ।
इति हि परभृतानां वाक्कुहूकारगर्भा त्वरयति नृप पान्थान् प्रेयसीसङ्गमार्थम् ॥३३॥
कनकशिखरवल्लीमञ्जरीपुञ्जिताग्रैर्नवकिशलयसङ्गात्कृष्टकौशेयशोभैः ।
प्रतिदिशमुपचिन्वन् गूर्जरक्ष्मापलक्ष्मीं रचयति सहकारैस्तोरणानीव चैत्रः ॥३४॥
घनतरमकरन्दैः स्नापिता पल्लवौघैः कलितललितवासा प्रोल्लसद्दिङ्मुखश्रीः ।
स्फुटकुसुमपरागैः सान्द्रकाश्मीररागैर्नृप नवऋतुलक्ष्म्यालङ्कृता गूर्जरक्ष्मा ॥३५॥
अपि बहुतरदूरादुत्सवं लोचनानां वरणशिखरसौधैः केतनैर्वर्द्धयन्ती ।
नृपतुरगरयेण प्रापितासन्नदेशा जनयति मुदमुद्यत्तोरणा राजधानी ॥३६॥ [पृ० २७ B]
　एनां प्रविश्य नगरीं परमर्द्धिपूर्णां द्वारावतीमिव रमारमणः प्रकामम् ।
　नानाविधान्यधिवसन् मणिमन्दिराणि राजन् रमस्व तरुणीभिरुदारमूर्त्ते ॥३७॥
　सम्भाविता करपरिग्रहणेन सम्यक् सौभाग्यमेतु भवता नृप रत्नगर्भा ।
　श्रीपातसाहमहमूद पितेव पुत्रान् प्रेम्णाधिकेन परिपालय भृत्यलोकान् ॥३८॥
　एवं विधानि वचनानि कवीश्वराणां वर्णामृतानि कलयन् नृपचक्रवर्त्ती ।
　सौवर्णवृष्टिभिरघृष्टनवर्णकीर्त्तिः राज्यश्रियाभिमतया रमते प्रकामम् ॥३९॥
　श्रीगङ्गमेऽपि सुविवेकपुरस्कृताया कीर्तिप्रशस्तिकरणादनणीभवन्त्या ।
　आज्ञावशेन वचसामधिदेवताया काव्यं मया विरचितं महमूदसाहे ॥४०॥

---

(१) मुद्गारयग० इति प्र०

प्रयागदासस्य तनूद्भवेन श्रीरामदासेन कृ [पृ० २८ A] ताभियोग ।
व्यधत्त काव्यं महमूदसाहे सदोदयायोदयराजनाम्ना ॥४१॥

[लोका सप्त?] विभान्ति यावदनघा यावच्च सप्तर्षयो
यावद्दीप्यति सप्तसप्तिरमलो यावच्च सप्तार्णवा ।
यावत्सप्तधराधरा पुनरिमा. पुर्यश्च सप्तोत्तमाः
काव्यं श्रीमहमूदसाहनृपतेस्तावज्जनैर्गीयताम् ॥४२॥

श्रीमान् साहिमुदप्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मज ॥४३॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरवक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्र
राजविनोदे श्रीमदुदयराजविरचिते महाकाव्ये
विजयलक्ष्मीलाभो नाम सप्तमः सर्गः ॥



वितरति सता प्रसन्न. सहस्रमयुत च लक्षमथ कोटिम् ।
महमूदसाहनृपति. पूरयति प्रार्थनामेक ॥१॥



श्रीरामेणात्मजपठनार्थमिद पुस्तकमलेपि ॥

[पृ० २८ B]

॥ श्री ॥

महमूद (बेगड़ा) का दोहाद का शिलालेख

(वि० स० १५४५, शक सं० १४१०)

श्री[1]

कास[2]मीरवासिनी देवी नत्वा साहि[3]मुदा [फ] रस्यादौ
वश जगति विशु [द्ध] – – च[4] पातसाहीना (नाम्) ॥ १ ॥

आदौ श्री [गू[5]] जरेशो नृपकुलतिलक [] प्राप्त पु[ण्यै[6]] कदेश[]
श्रीमान् शौर्यादिसारैर्नृपकुलमखिल यो विजित्याधि [त] स्थौ ।
पश्चात् श्रीपत्तनेस्मिन् प्र [त]रगुण ⏑ – – – रकीर्त्तियशस्वी
मानी भूपालमौलिर्वरमुकुटमणि[7]र्वीरविख्यातम् [र्त्ति] ॥ २ ॥

श्रीमान् वीरोऽभवत् शाहिमुदाफरनृपप्रभु ।
तत्पुत्रो वीरवि [ख्या]तो महम्मदमहीपति ॥ ३ ॥

तस्या वये — ⏑ ⏑ — प्रसूत प्रतापसतापितमालवेश ।
वीर सदा श्रीमदहम्मदेन्द्रो राजा महीमडलमडनाय ॥ ४ ॥

य सर्वधर्म्मार्थविचारसारसवज्ञ [शुद्धो नृप] वशजात ।
जित्वा मही मालवकाधिपस्य जग्राह तद्देश[8]धन च पश्चात् ॥ ५ ॥

तस्मात्पुनर्भूमिपति प्रधानवीर [] सदा साहमहम्मदो ऽभूत ।
दाता जगज्जीवनजातकीर्त्ति [यस्य प्रभावो] विदित पथिव्याम् ॥ ६ ॥

साहश्रीमहमूदवीरनृपति श्रीग्याम [दीन] प्रभो-
विख्यात ⏑ ⏑ – [9]उदारचरितो जातो वये वीयवान् ।
यो राज्यादधि [क] ⏑ – प पदवी – – घदामेन[10] वै
कृष्ण विक्रमभूपति च जितवान् शास्त्रार्थसारे गुरुम् ॥ ७ ॥

राज्य प्राप्य निज प्रस[11]न्न [वद]नो दातातिवी [र्या] न्वित
पश्चाद (द्) क्षिणदिक्पति स्वनगरे म – ⏑[12] जित्वा रिपुम् ।

---

(१) यह अक्षर अब बहुत हल्कासा दिखाई पडता ह। इसके पहले सम्भवत स्वस्ति शब्द होगा। (२) काश्मीर होना चाहिए। (३) शुद्ध शब्द शाहि' ह। आगे तीसरे श्लोक में 'शाहि लिखा ह। (४) सम्भवत यहा 'वक्ष्ये पद ह। (५) अब इस अक्षर की 'ऊ की मात्रा ही दिखाई देती ह। (६) पाठ सदिग्ध ह। (७) रेफ यहा णि पर दिया गया ह। (८) तद्देशमधन च ऐसा होना चाहिये। (९) 'स्वगुणर् (?) (१०) दानन' होना चाहिए। (११) यहा स पर अनुस्वार दिया गया ह जो अनावश्यक ह। (१२) सम्भवत 'सङ्ख्ये च ऐसा पाठ हो।

[तप्तो वै]दं (द) मनाधिपस्य सकलं देशं सम भूधरै-
नींत्वा श्रीमहमूदमाहनृपतिश्चक्रे मतिं [रै] वते ॥ ८ ॥

तत्रोत्तुगनगेन्द्रमगतभटान् वीक्ष्यादरेण [स्वय]
युद्धं चाद्भुतविक्रमं [स कृतवान्] भूप स्वसेनाजनै. ।
जित्वा दुर्गमशेषवैरिसहितं यो जीर्ण सज्ञ ⌣–[1]
कीर्तिस्तंभमिद चकार नृपतिस्तद्रैवतं पर्वतम् ॥ ९ ॥

चपक – –[2] पश्चात् सं – – वैरिकुद्ध(ल?)कुद्दाल [.] ।
जित्वा पावक [दुर्गं] पिना रुद्धं प्रतापतापू[3] (वंम्) ॥१०॥

महमूदमहीपालप्रतापेनेव पावकम् ।
प्रविश्य ज्वालित [सर्वं] वैरिवृंदं पनगवत् ॥११॥
जीवंत तत्पतिं ब[द्ध्वा] दुर्गं [नी] त्वा महाबलम् ।
चकार तत्पुरे राज्यं महमूदमहीश्वर [] ॥१२॥

ज्ञात्वा गुणै [] कर्म्मभिरप्युदारैरेत कुलीनं नृपवंशजातम् ।
मुख्यं चकारात्मगृहे महीश स सेवके [भ्यो]विकमानदानैः ॥१३॥
पश्चादि [म] सेवक [मि] कवीरमिमादल कार्यकरं विदित्वा ।
आ – ⌣ – – – ⌣ सदातिशूर सद्वाक्य – – ⌣ ⌣ देशर[4]क्षाम् ॥१४॥
[पा] मीरवंशे नृपतिश्र [धः] न (न.)– – ⌣ मोभूदतुलप्रताप ।
स –हव या सं (सा) नागरीत –स्रूयते – ⌣ ⌣ चारुकीर्त्ति. ॥१५॥
तस्मात् संबलवनेज – – – मखिल क्षितौ – – –( )
मा (मी) प्रतापवान् वीर (रो) विख्यात [] पुण्यकर्मणि ॥१६॥
मह[मू]द महीपालसेवाप्रौढप्रतापवान् ।
दानवीरश्चिर जीयान्मलिकश्रीईमादल ॥१७॥
पल्लीदेशाधिकारं च पुण्य पुण्यमतिस्तदा ।
दुष्टारिहृदये राज्यं[5] दुर्गमेन चकार वै ॥१८॥

[येनादौ] ⌣ ⌣ – – ⌣ धौति [विपुल] गंगोर्मिकल्लोलवत्
पूर्णं पुण्यजलेन सर्व ⌣ ⌣ – – – – ⌣ – – – ⌣ – ।
कासार ⌣ दशोद ण[6] मनसोल्लासेन निष्पादित
सोय वीर इमादले [द्रनृप] तिर्दुर्ग चकारोत्तमम् ॥१९॥

(१) 'सज्ञ पुन' ऐसा होना सभव है। (२) 'द्रग' होगा। (३) इस पद का ठीक ठीक अर्थ नहीं निकलता। पाठ सदिग्ध है। (४) मूलमें 'देशरक्षा' जैसा मालूम देता है। (५) शल्य। (६) 'कासारद्वयमादरेण' यह पाठ हो सकता है।

अहम्मदपुरानन्थ कूपो यस्य विराजते ।
जगज्जीवनदानेन यशोराशिमिवोद्वहन् ॥२०॥
य [ ] श्रीमन्महमू शाहकृपया श्रीचपकाख्ये पुरे
[१]——[को] निविवद्धन नुविपुल तापत्रयो मूलनम ।
मानदन चकार मानममम 'न पुष्कर' भूतले
माय वीर इमादऱ्द्रनृपतिदुर्गं चकारोत्तमम् ॥२१॥
आ पादपतियम्य जयदेवो म – ट ~ [।]
मिर्पतिये लूपजीवशिर [,] स्वयम्[२] ॥२२॥
नत्रागेश [नरि] पून् हृत्वा कृत्वा दिग्विजयोदयम् ।
गायदुग ममजयत् योमौ जीर इमादल ॥२३॥
(गवल) वेग्नेन मवन नदग्रैरिवद त [था]
लि – त्रिमुक्त गोन्कगणं महत्य चूर्णीकृ [तम्]
दुग पू [ण्ग] नगी विजित्य मत्र प्रोद्यत्प्रतापेन यो
धम्मद्द रमिद प्रहाम्महित त – ~ पा – ददौ[३] ॥२४॥
वाग [ज] भूपात्रत्र प्रह [त्य प्रत] ण्डमूमी वग्वालन्कर्ता ।
य पावके पूर्वान [त] द्वभना नि वध्यते चाम्य जयम्य वार्ता ॥२५॥
दनिपद्रे रचिरत दुग वं दु मह ।
श्रीमदिमादलमुखो दान मुदरन्चक्रे ॥२६॥
श्रीनृपविक्रमार्कसमयातीत सवत १५४५[४] वर्षे शाके १४०१०[५] वर्षे प्रवर्तमाने वैशाख सुदि १३ शुभे दिने मलिक श्रीइमादलमलिक दुग उद्धरे [श्रीरस्तु] जे गढ पोलि नी पारी ते नतरी तिस ।



(१) पुष्प'
(२) अथ स्पष्ट नहा है । (३) सम्म कृपाभिन्दी ।
(४) १५४ और ५ के बीच में एक बिन्दु सा दिखाई देता है। समवत पत्थर की खराबी है।
(५) १४ और १० के बीच का बिन्दु अनावश्यक है।

महमूद बेगड़ा के समय का दोहाद का शिलालेख†।

(वि० स० १५४५, शाके १४१०)

मूल लेख के सपादक

डॉ० एच्० डी० सांकलिया, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०,
पीएच्० डी० (लन्दन)

यह शिलालेख प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम, बम्बई में सुरक्षित है। उक्त म्यूजियम के संरक्षको के सौजन्य से प्राप्त लेख की छापो एवं मूल शिला से भी देखकर इस लेख को सर्वप्रथम अभी प्रकाशित किया जा रहा है। पुरातत्व विभाग के क्यूरेटर श्री जी० वी० आचार्य व श्री आर० के० आचार्य ने इस लेख के कुछ अंशो को पढने में सहायता की है अत सम्पादक उनका आभार मानता है। जिस पत्थर पर यह लेख खुदा हुआ है वह ३ फीट ३ इच लम्बा और १ फुट ७ इच चौडा है। कहते हैं कि यह पत्थर दोहाद कस्बे में प्राप्त किया गया था जो बम्बई प्रेसीडेन्सी में बडौदा से उत्तरपूर्व में ७७ मील पर स्थित है। दोहाद पाँचमहाल जिले के सबडिवीजन का एक प्रमुख कस्बा है। दो लम्बी दरारो के अतिरिक्त कई जगह से इस पत्थर की चटखें उतरी हुई है जिनसे इस लेख को पढने में कठिनाई पडती है। कहीं-कहीं इस पर सिन्दूर अथवा और कुछ रंगीन चिकना पदार्थ लगा हुआ है जिससे यह कठिनाई और भी बढ जाती है। इस लेख में कुल २२ पक्तियाँ लिखी हुई है; पहली व अन्त की दो पक्तियो के बहुत से अक्षर बिलकुल घिस गये हैं। प्रत्येक अक्षर प्राय. ½ इच का है।

यह लेख वैशाख सुदी १३ विक्रम सम्वत् १५४५, शक सम्वत् १४१०, का है (सम्भवत. २१ वीं पक्ति के पूर्वार्द्ध में हिजरी सम्वत् और वार का नाम भी खुदा हुआ था जो बिलकुल चटख गया है)। गणना से यह दिन बृहस्पतिवार, २४ अप्रैल १४८८ ई० (हिजरी सन् ८९३ जमादि-उल्-अव्वल) आता है।‡ तिथि के विषय में यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस लेख पर विक्रम सम्वत् तथा शक सम्वत् दोनो ही खुदे हुए है। यह क्रम गुजरात में पाए जाने वाले महमूद के समय के सभी संस्कृत शिलालेखो¶ में

---

† 'एपिग्राफिआ इण्डिका' के जनवरी, सन १९३८ (भाग २४, अक ४) में प्रकाशित।

‡ इण्डियन एफिमरीज, जिल्द ५, पृ० १७८ (एस के पिल्लई)

¶ (बाई हरी) का शिलालेख। इण्डियन एण्टीक्वेरी, जिल्द ४, पृ० ३६८ 'अडालज वाव' शिलालेख 'रिवाइज्ड लिस्ट एन्टीक्वेरियन रिमेन्स बाम्बे प्रेसीडेन्सी' पृ० ३००।

नहीं बरता गया है वरन उसगे भारत के दूसरे लेखो में भी ऐसा ही पाया जाता है। काठिया वाड में प्राप्त *इसी काल के शिलालेखों† पर केवल विक्रम सम्वत ही पाया जाता है।‡

लेख की लिपि देवनागरी है और इस विषय पर विशेष प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है।

शिलालेख की भाषा सस्कृत है और आरम्भ में मङ्गलाचरण व अत में २६ वें पद्य के बाद के अश के अतिरिक्त सम्पूर्ण लेख पद्य में है।

दुर्भाग्य से अत की तीन पक्तिया बहुत ज्यादा घिस गई है और यह ठीक ठीक पता लगाना सम्भव नहीं है कि यह लेख महमूद बेगडा के राज्यकाल में खुदवाया गया था अथवा उसकी स्वय की आज्ञा से उसके कार्यों का इतिहास अकित करने के लिये उत्कीर्ण किया गया था। इन पक्तियो से जो कुछ आशय निकलता है वह इतना ही है कि यह लेख महमूद बेगडा के मुख्यमन्त्री इमादुल मुल्क द्वारा दधिपद्र (दोहाद) के दुर्ग का निर्माण कराए जाने के बाद ही खुदवाया गया था। प्रसगवश इसमें गुजरात के सुलतानो की वशावली, उनके कार्यों और मुख्यत महमूद के वीरकृत्यो का भी वर्णन आगया है। यह पहला ही शिलालेख है जिसमें महमूद बेगडा और उसके पूर्वजो के कार्यों का अर्थात उनकी बनवाई हुई इमारतो व उनकी जीती हुई लडाइयों का विवरण दिया हुआ है।¶

* देखो भाण्डारकर, लिस्ट आफ इसक्रिपशन्स आफ नादर्न इण्डिया (List of Inscriptions of Northen India) स० ७२३ और १९२१, ७३६ और ११२६, ७३७ और ११२७, ७४८ और ११२८, ७४७ और ११२६ ७७३ और ११३० ८७३ और ११३६ ६०१ और ११३८ ६६७ और ११४६।

† देखो रिवाइज्ड लिस्ट Revised List etc पृ० २३६–२४६ २४८–४९, २५१, २५८ २५७ २६१।

‡ इससे पता चलता है कि सवत्सरो का प्रयोग करने की जो प्राचीन रूढि काठियावाड में १३वी शताब्दी के अत तक पाई जाती थी वह बाद में बन्द हो गई थी।

¶ अब तक के प्रकाशित अन्य शिलालेख ये है—अरबी लेख—रिवाइज्ड लिस्ट, एण्टी क्वेरियन रिमेन्स बाम्बे प्रसीडेन्सी पृ० ३०३, ३०६–०७ एक लेख एप्टी० रिपोर्ट A S I १६२७ २८ पृ० १४६ में प्रकाशित हुआ है कहते है कि इसमें गुजरात के उन सुलतानो के नाम दिए है जिनका दोहाद कस्बे को पूर्ण कराने में सम्बन्ध था। हालोल दरवाजा और चापानेर से प्राप्त दो लेख एपि० इन्डो मोस्लि० १६२६ ३० पृ० ४ में प्रकाशित हुए है।

सस्कृत लेख—अडालज रिवाइज्ड लिस्ट पृ० ३१० बाई हरी का शिलालेख Inscription Rev List पृ० ३००, इडियन एण्टी० जिल्द ४ पृ० २६८ जिल्द ४ पृ० २६८।

१५०० ई० तक के सभी लेखो में—चाहे वे मुसलमान शासको के हो अथवा

अहम्मद का पुत्र लिखा है उस प्रकार इनके बारे में स्पष्ट न लिखकर "उनके वंशज" इतना ही उल्लेख किया है। (२) कुतुबउद्दीन और दाऊद के नाम इस सूची में नहीं दिये गए हैं। दाऊद का नाम न देने की बात समझ में आ सकती है, क्योंकि उसने बहुत ही थोड़े समय राज्य किया और वह इस वंश का क्रमानुयायी भी नहीं था, परन्तु कुतुबउद्दीन तो महम्मद का ज्येष्ठ पुत्र था और उसने ७ वर्ष* तक राज्य किया। यद्यपि ७ वर्ष का समय कोई लम्बा समय नहीं कहा जा सकता परन्तु उसका राज्यकाल नगण्य भी नहीं माना जा सकता। इसलिए, इन लेखों में इसका नाम न पाये जाने का कोई कारण† समझ में नहीं आता है। ऐसा हो सकता है कि महमूद के समय के सभी अरबी और संस्कृत के लेखों में मुहम्मद (प्रथम) का नाम उल्लिखित करने का और कुतुबउद्दीन व दाऊद का नाम निकाल देने का कोई विशेष कारण रहा हो, जो अब तक ज्ञात नहीं हो सका है। परन्तु, यह कहना तो संगत नहीं होगा कि उन लेखों के लिये जिन साधनों से जानकारी प्राप्त की गई थी वे इतने विशद नहीं थे जितने कि उन इतिहासकारों की जानकारी के स्रोत जिनको हम जानते हैं। फिर, महमूद में और इन दोनों में इतनी अधिक पीढ़ियों का अन्तर भी नहीं है कि उसके घरेलू आलेखों में उनको सहज ही भुलाया जा सके। वरन्, ऐसे आलेखों में तो उनके विषय में बाहरी लोगों की अपेक्षा और भी अधिक जानकारी की सामग्री मौजूद होनी चाहिये। सम्भवतः विभिन्न इतिहासकारों और लेखों से प्राप्त वंशावलियों में भिन्नता होने का यही कारण हो (कि वे इन सुलतानों के घरू आलेखों पर आधारित नहीं है)।

इस लेख से हमें जो दूसरी जानकारी प्राप्त होती है वह यह है कि इसमें मुजफ्फर शाह को 'मुदाफर नृप प्रभु' लिखा है। इस 'नृप प्रभु' उपाधि से, दिल्ली के बादशाहों‡ की सेवा करते हुए १३९६ ई० में मुजफ्फर द्वारा गुजरात के स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की ओर संकेत किया गया है। इस राज्य की राजधानी पट्टण थी जो प्राचीन काल में गुजरात के चालुक्यों के समय (९६०-१३०० ई०) में अणहिल पट्टण के नाम से प्रसिद्ध थी। दिल्ली के सम्राट् मुहम्मदशाह के सूबेदार की हैसियत से मुजफ्फर द्वारा गुजरात के विद्रोही सूबेदार फरहत-उल्-मुल्क और अन्य पड़ोसी सूबों पर विजय¶ का उल्लेख इस प्रकार किया गया है:—

---

* कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, भा० ३, पृ० ३०१-३०३f, ब्रिग्स-पृ० ३७-४४; फरीदी-पृ० ४१, रास-पृ० १४, २००, ८५१।

† कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया (जि० ३ पृ० ३०१) में लिखा है कि वह बहुत बीमार होकर मर गया था परन्तु यह हो सकता है कि वह सन्देहात्मक दशा में मर गया हो जैसे उसका पिता मुहम्मद मर गया था (ब्रिग्स-जि० ४ पृ० ३६)

‡ विवरण के लिए देखो 'कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया' जि० ३, पृ० २९४-९५

¶ देखो—कैं० हि० इ०, ब्रिग्स-जि० ४, पृ० ४-१०, फरीदी-पृ० ५-७, ९-१०, बर्ड-पृ० १७७

"नृपकुल अखिल यो विजित्य अधितस्थु

मुदाफर के पुत्र महम्मद को केवल 'महीपति' लिखा है। जब तक कोई विशेष वृत्तान्त प्राप्त न हो, इस उपाधि से कोई तात्पर्य नहीं निकलता है। वास्तव में, न तो महम्मद अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ और न इतिहासकारो ने ही उसके विषय में कुछ अधिक लिखा है। अत उसके लिये इस साधारण उपाधि का प्रयोग उपयुक्त ही जान पड़ता है।

महम्मद के बाद अहम्मद हुआ। उसके विषय में लिखा है कि वह 'महीमण्डल' का मण्डन (भूषण) और सब धर्मों, पदार्थों और विचारो को जानने वाला और समझने वाला था। उसने अपने पराक्रम से मालवाधिपति को आक्रान्त ही नहीं किया वरन उसके देश और धन पर भी अधिकार कर लिया। अहमद की इस प्रशस्ति की सत्यता बहुत कुछ इतिहास से प्रमाणित होती है। उसको 'मही–मण्डल मण्डन' इसलिये कहा गया है कि वह गुजरात के पहले बड़े सुलतानो में से था, उसने अपने राज्य को दृढ बनाया और अहमदाबाद शहर बसाया। यह आश्चर्य की बात है कि इस लेख में उसके अन्य महान कार्यों के साथ साथ नगर निर्माण के विषय में कुछ नहीं उल्लेख किया गया है, यद्यपि २० वें पद्य में इस नगर का नाम प्रसंगवश आगया है।

जैसा कि हमें मुसलमान इतिहासकारो से ज्ञात होता है अहमद मालवा के अधिपति हुशङ्गशाह की आखो में चुभता था। सन १४११ व १४१८ ई० में दो बार हुशङ्गशाह ने गुजरात पर आक्रमण* किये परन्तु अहमद ने दोनो ही बार उसे पीठ हटा दिया। इतना ही नहीं, १४१९† ई० में उसने स्वयं मालवा पर चढ़ाई की और हुशङ्ग को हार कर माँडू के गढ में शरण लेनी पड़ी। इसके बाद १४२२ ई० में जब हुशङ्गशाह उड़ीसा पर चढ़ाई करने गया हुआ था तो अहमद ने फिर मालवा पर आक्रमण किया परन्तु माण्डू पर अधिकार करने में सफल नहीं हुआ।‡ अहमदशाह के इन हमलों का कोई विशेष फल न निकला। उसने केवल मालवा प्रान्त को लूटा और बरबाद कर दिया परन्तु उसे अपने राज्य में न मिला सका। प्रस्तुत शिलालेख में उल्लिखित मालवा का ग्रहण करना ऐतिहासिक आधारो पर सिद्ध नहीं होता है।¶

* ब्रिग्स–जि० ४ पृ० १६, १८, फरीदी पृ० १ १५ ब० हि० इ० जि० ३ पृ० २९६ ७

† ब्रिग्स–जि० ४ पृ० २१–२२ फरीदी–पृ० १ –१७

‡ ब्रिग्स–पृ० २२–२५ फरीदी–पृ० १८ ब० हि० इ० जि० पृ० २९६

¶ 'जग्राह तद्देशधन च पश्चात्'—यहाँ 'तद्देशधन' का द्वन्द्व समास करते है तो 'तद्देश च धन च' ऐसा विग्रह होता है। इससे प्रतीत होता है कि उसका देश और धन ग्रहण कर लिए। यदि उसका विग्रह 'तद्देशस्य धन जग्राह' इस तरह किया जाय तो इसका अर्थ उसके देश का धन ग्रहण किया अर्थात् उसके देश को लूट लिया गया होता है।

विवरण के लिए देखिए—ब्रिग्स–जि० ४ पृ० १७, २९, ३० फरीदी–पृ० १८, १७, १९, २१, बह–पृ० १८८ ब० हि० इ०, जि० ३ पृ० २९६–९८।

यह भी विचारणीय है कि इस लेख में अहमद की दूसरी लड़ाइयों* का कोई उल्लेख नहीं है, विशेषत गिरनार के चूडासमा राजा, खानदेश के नासिर और चाँपानेर के राजा का, जिनको उसने १४२२ ई० में अपने आधीन कर लिया था। दक्षिण के बहमनी राजा अलाउद्दीन अहमद के विषय में भी इसमें कोई उल्लेख नहीं है।

अहमद के पुत्र महम्मद के बारे मे इस लेख में विशेष हाल नहीं लिखा है और यह ठीक भी है। यद्यपि ऐसा कहते है कि ईडर के राजा बीर (बैर), मेवाड के राणा कुम्भा और चम्पानेर के राजा गगादास† पर उसने विजय प्राप्त की थी‡ परन्तु कुछ मुसलमान इतिहासकारो ने उसके विषय में लिखा है कि वह कायर था और जब मालवा के सुल-तान महमूद ने उस पर हमला किया तो उसने पीठ दिखा दी थी। उसकी इस कायरता के फलस्वरूप ही कुछ अफसरो के बहकाने से उसकी स्त्री ने उसे विष दे दिया था।¶ उसका एक गुण यह था कि वह उदार§ बहुत था और इसीलिये मुसलमान लोग उसे 'करीम' कहते थे।||

महम्मद के बाद तुरन्त ही महमूद से हमारा परिचय होता है। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है उसके दो पूर्वाधिकारियो के नाम छोड दिये गये है। महमूद का नाम महमूद बेगड़ा (गुजराती बेगडो) अधिक प्रसिद्ध है। प्रस्तुत शिलालेख में उसको वीर योद्धा** लिखा है और आगे चल कर ग्यासदीन का उल्लेख है। यह स्पष्ट नहीं है कि इस उपाधि का प्रयोग महमूद के लिए किया गया है अथवा उसके कुल में उत्पन्न किसी अन्य व्यक्ति के लिए। यदि इसका प्रयोग महमूद के लिए किया गया है तो यह बात कुछ विचित्र सी जान पडती है क्योंकि इस उपाधि का अर्थ है (गियास-उद्दीन) धर्म का सहायक, और सिक्कों†† और लेखों‡‡ में उसके लिए नासिरउद्दीन वा उद्दुनिया अर्थात् 'धर्म और जगत् का रक्षक' लिखा है। अहमद प्रथम के पुत्र मुहम्मद द्वितीय को उसके सिक्को में गियासउद्दीन लिखा है।¶¶

---

* देखिए—कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, जि० ३, पृ० २९८–९९

† देखिए टिप्पणी पृ०

‡ कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३००–०१, ब्रिग्स–जि० ४, पृ० ३५, फरीदी–पृ० २३-२४

¶ ब्रिग्स–जि० ४, पृ० ३६, फरीदी ने यह कृत्य किसी सय्यद का लिखा है, पृ० २६।

§ मीराते सिकन्दरी, पृ २३ पर लिखा है कि उसने 'ज़र बख्श' स्वर्ण-दाता का नाम प्राप्त किया।

|| ब्रिग्स–जि० ४, पृ० ३६, 'करीम अर्थात् दयावान्'। बर्ड–पृ० १९६ "जरबक्स"

** फरिश्ता जि० ४ पृ० ६९–७०

†† सूचीपत्र, गुजरात के सुलतान, पृ० २२

‡‡ एपि इन्डो-मो०, १९२९–३०, पृ० ३-५, रिवाइज्ड लिस्ट, पृ० २५३

¶¶ सूचीपत्र पृ० २२

जिन पंक्तियों में उसके युद्धों का वर्णन किया गया है वे दुर्भाग्य से कई जगह खण्डित हो गई हैं, अतः इन सब घटनाओं का ठीक ठीक पता लगाना कठिन है। आठवें पद्य में दक्षिण दिक्पति और दम्मण के अधिपति के साथ महमूद के सम्बन्धों का वर्णन है (?) रवत तक पृथ्वी पर अधिकार (?) का भी जिकर है। (पद्य के) पूर्व भाग में मालवा के महमूद खिलजी द्वारा १४६२ और १४६३ ई० में*'दक्षिण दिक्पति' निजाम शाह पर चढ़ाई करने के अवसर पर महमूद ने जो सहायता की थी उसका उल्लेख किया गया प्रतीत होता है और अपर भाग में दम्मण के पास पारडी के राजा द्वारा १४६४ ई०† में किए गए आत्म-समर्पण की ओर संकेत है।

रवत अर्थात् जूनागढ के गिरनार पर्वत का उल्लेख करने से महमूद द्वारा १४६६ ई० में उस राज्य पर किए पहले हमले से तात्पर्य है। उस समय वहां के राजा राजमाण्डलिक से महमूद ने कर वसूल किया था और उसे राजचिह्न छोड़ने को बाध्य किया था।‡ आगे पद्य में लिखा है कि महमूद ने उस दुर्भेद्य जूना (जीर्ण) गढ़ को विजय किया और उसकी कीर्ति को चिरस्थायी करने के लिये रवताचल ही विजय स्तम्भ बनाया गया। इससे जूनागढ के किले को पूर्णतया जीत कर दिसम्बर १४७० ई०¶ में सोरठ को गुजरात में सम्मिलित कर लेने की ओर लक्ष्य किया गया है। मुसलमान इतिहासकारों का कहना है कि गिरनार के राजा को फिर आत्म समर्पण करने के लिए दबाया गया तब उसने इस्लाम धर्म को अंगीकार कर लिया और उसको 'खान ए जहान' की उपाधि प्रदान की गई। पहाड़ी की तलहटी में महमूद ने मुस्तफाबाद नामक नगर बसाया और वह नगर भी उसकी राजधानियों में से एक था—साथ ही, वह उसके ठहरने का एक मनचाहा स्थान भी था।§

---

* क० हि० इ० जि० ३ पृ० ३०४ ०५, ब्रिग्स पृ० ४९ ५१, फरीदी पृ० ४० ४२, बेले ने पृ० २०६ पर एक ही लड़ाई का हाल १४६१ ६२ लिखा है। रास पृ० १७

† क० हि० इ०, जि० ३ पृ० ३०५, बेले ने इसका कोई उल्लेख नहीं किया है ब्रिग्स ने पृ० ५१ पर दम्मण का तो उल्लेख नहीं किया है परन्तु १४६५ ई० में गुजरात से कोंकण की चढ़ाई का वर्णन अवश्य किया है फरीदी ने पृ० ४२ पर बडादर पर्वत पर चढ़ाई और एक चट्टानी किले की विजय का उल्लेख किया है। रास ने पृ० १८ पर (Bardu) बरडू विजय का हाल लिखा है। यह एक पहाड़ी पर स्थित है जो दम्मण के सामने दिखती हुई है।

‡ क० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०५, ब्रिग्स के मतानुसार पहला हमला १४३९ ई० में हुआ पृ० ५२, फरीदी (पृ० ५३ ५४) और बेले इस हमले को १४६७ ई० के आस पास हुआ बताते हैं। रास—पृ० १९

¶ क० हि० इ० जि० ३, पृ० ३०५ ०६, पृ० ५५, पृ० ५७ और पृ० २०९ पर १४७२ लिखा है।

§ क० हि० इ० पृ० ३०६ ०७, पृ० ५६, ५७ २०९, २० २५, २६ क्रमशः

पद्य संख्या १०–१२ में बताया गया है कि महमूद ने चम्पक (पद्य ?) अर्थात् वर्तमान (चाँपानेर) को ले लिया, पावक* (पावागढ) को जीत कर वहाँ के शासक को जीवित पकड लिया और उस नगर पर राज्य करने लगा। यहाँ चम्पानेर और इसके किले पावागढ पर अन्तिम विजय के सम्बन्ध में मुख्य मुख्य घटनाओं का पता चलता है। मालवा और गुजरात के बीच में चाँपानेर एक 'राजनैतिक स्थिति' का राज्य था। यहाँ के शासक चौहान शाखा के राजपूत थे और गुजरात के पास यही एकमात्र हिन्दू राज्य था। इसलिए जब कभी मालवा के शासक को गुजरात पर आक्रमण करना होता तो वह पहले चाँपानेर के राजा को बहकाता था अथवा यदि उसी को कोई आपत्ति होती तो वह स्वयं गुजरात प्रदेश में लूट मार करके वहाँ के सुलतानो को तग किया करता था। इस प्रकार, इस राजा और गुजरात के सुलतानो में प्रायः छुटपुट की लडाइयाँ और कभी-कभी बडी लड़ाइयाँ होतीं ही रहती थीं परन्तु महमूद से पहले कोई भी सुलतान पावागढ की जीत कर वहाँ के राजा को काबू में नहीं कर सका था।

उस समय सम्भवत जयसिंह चापानेर† का राजा था और महमूद उसके विद्रोह-पूर्ण कार्यों को अच्छी तरह जानता था परन्तु बहुत समय तक उसके राज्य पर आक्रमण

---

* जयसिंह का वि० स० १५७५ का एक शिलालेख, इण्डियन एण्टीक्वेरी, जि० ६, पृ० ७, रासमाला जि० १ पृ० ३५७ (रॉलिन्सन), बाम्बे गजेटियर, जि० ३, पृ० ३०४, ब्रिग्स, जि० ४, पृ० ६६। आजकल इनके प्रतिनिधि छोटा उदयपुर और देवगढ बारिया के राजा है।

† वि स० १५७५ के लेखानुसार जयसिंह उस समय पावक दुर्ग पर राज्य करता था और शायद महमूद के हमले तक भी वही राज्य कर रहा था। प्रस्तुत शिलालेख के २१ वे पद्य मे जिस जयदेव का नाम आया है वह वास्तव मे जयसिंह ही है क्योकि 'तबकाते अकबरी' (ब्रिग्स् द्वारा सपादित पृ० २१२) और 'मीराते सिकन्दरी' (फरीदी पृ० ५६) मे भी लिखा है कि चाँपानेर के राजा 'जयसिंह' को महमूद ने हराया था। इन नामो मे बहुत समानता है। इसके अतिरिक्त लेख में दिए हुए उसके पूर्वजो के नाम मुसलमान इतिहासकारो द्वारा दिए हुए नामो से मिलते है। यथा—

जयसिंह के १५२५ वि० स० का लेख	मुसलमान इतिहासकार
(१) वीर धवल	(१) वीरसिंह (तबकाते अकबरी) यह सम्भवत अहमदशाह का समकालीन था।
(२) त्र्यम्बक भूप	(२) त्रिम्बक दास (मीराते सिकन्दरी पृ० १४-१७) यह भी अहमदशाह का समकालीन था।
(३) गगराजेश्वर	(३) गगादास (मीराते सिकन्दरी पृ० २४ व ३०) यह कुतुबुद्दीन का समकालीन था

करने का कोई अवसर नहीं मिला। निदान, १४८२ ई० में जब चापानेर के एक पताई* द्वारा पड़ोसी प्रदेश का सूबेदार मलिक सूद मारा गया तो उसे मौका मिल गया। उसके इस काम से नाराज होकर महमूद ने चापानेर पर चढ़ाई की और उस पर अधिकार करके वहां एक मस्जिद बनवाई। पताई ने पावागढ़ में शरण ली और महमूद ने उस किले को घेर लिया। यह घेरा २१ महीनों तक चला और अन्त में चालाकी से किले पर हमला बोल दिया गया। हताश होकर राजपूतों ने (जो अब बहुत थोड़े रह गये थे) स्त्रियों को जीवित जला कर जौहर पूर्ण किया और मरणपर्यन्त मुसलमानों से अन्तिम युद्ध करने के लिये मैदान में आ गए। (इसका उल्लेख शिलालेख में किया गया मालूम होता है) कहते हैं कि और सब राजपूत मारे गये परन्तु राजा पताई और उसका एक मन्त्री डूंगरसी जीवित पकड़े गए। महमूद उनके साहस और वीरतापूर्ण युद्ध करने पर बहुत प्रसन्न हुआ और जब उनके घाव ठीक हो गए तो उन्हें इसलाम धर्म अंगीकार करने के लिये कहा। जब वे इन्कार हो गए तो उन्हें बन्द कर दिया गया और फिर सोचने के लिए समय दिया गया। जब उन्होंने फिर सुलतान के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और मुसलमान न होने का दृढ़ निश्चय प्रकट किया तो पांच* महीने बाद उनको फांसी दे दी गई। इसके बाद महमूद ने महमूदाबाद नगर बसाया और इसके चारों तरफ एक किला बनाया जो जहांपनाह कहलाया।

१३ १४ पद्यों का तात्पर्य यह है कि इस नए जीते हुए प्रदेश पर शासन करने के लिए इमादुल को नियुक्त किया गया।

आगे के कुछ पद्यों में मलिक इमादुल द्वारा पल्लिदेश की विजय और वहाँ पर एक गढ़ी निर्माण कराने का वर्णन है। इमादुल की आज्ञा से बने हुए इसी किले व वहीं पर खुदवाए हुए दो तालाबों का उल्लेख १६ वें पद्य में किया गया प्रतीत होता है। जैसा कि आगे बताया गया है यह पल्लिदेश गोधरा जिले का ही कुछ भाग था न कि राजपूताने का वह जिला जो इस नाम से प्रसिद्ध है।

पद्य संख्या २० में एक कुएं का वर्णन है जो, स्पष्ट है कि, इमादुल द्वारा अहम्मदपुर में खुदवाया गया था। यहाँ अहम्मदपुर से अहमदाबाद का तात्पर्य है न कि अहमदनगर का।

---

* दूसरे इतिहासकारों (जैसे फरिश्ता, ब्रिग्स पृ० ६९) ने उसे 'बनीराय' लिखा है, फरीदी (पृ० ६५ ६७) ने रावल पताई और (पृ० २१२) ने रावल पूर्णई और बर्ड ने 'पॉलिटिकल स्टैटिस्टिकल हिस्ट्री ऑफ़ गुजरात (१८८६ पृ० २११) में राय पताई लिखा है। इससे विदित होता है कि दूसरे चाहमान अथवा चौहान वंश के राजाओं की तरह चांपानेर के राजा भी 'राय' कहलाते थे। वाटसन (इं० एंटि० जि० ६ पृ० २) का यह अनुमान ठीक है कि पताई पावापति का संक्षिप्त रूप है।

* ब० गि० इ० जि० ३ पृ० २०६ १० फरीदी, पृ० ६६ ६७ फरिश्ता जि० ४ पृ० ६६ ७० राय पृ० २३२

इक्कीसवें पद्य में फिर लिखा है कि इमादल ने महमूदशाह की आज्ञा से [चम्पक पुर (चांपानेर ?)] में एक सुदृढ दुर्ग और बावडी बनवाई। यहां दुर्ग से तात्पर्य चांपानेर के चारों ओर की उस बाहरी दीवार और विशेष परकोटे से है जिसको बनवाने के लिए महमूद ने आज्ञा दी थी।*

पद्य सं० २२–२५ में बागुलाधिपति का वर्णन है जिसका नाम जयदेव था (पद्य २२)। इमादल ने उसकी सेना को पूर्णतः पराजित कर दिया था। तेईसवें पद्य में रायदुर्ग विजय का उल्लेख है। यह राय (राजा) का दुर्ग सम्भवतः उसी (जयदेव) राजा का था। चौबीसवें पद्य में फिर किसी किले पर विजय प्राप्त करने का वर्णन है। यहां पर यह स्पष्ट नहीं है कि ये सब पद्य पावागढ के राजा ही के विषय में है जिसका नाम जयदेव था और जिसको पावागढ के शिलालेख का जयसिंहदेव बताया जाता है अथवा बागुलाधिपति जयदेव के विषय में जो पावागढ के राजा से भिन्न व्यक्ति था। पूर्व पक्ष को मान लेने के लिए पद्य २३ में प्रयुक्त 'दिग्विजय' शब्द ही साधक है। सम्भव है पावागढ की विजय को ही 'दिग्विजय' कहा गया हो। क्योंकि इसे अब तक कोई भी गुजरात का सुलतान पूर्ण नहीं कर सका था। फिर, यही एक ऐसा हिन्दू राज्य था जो अब तक स्वतन्त्र बना हुआ था। इस श्लोक में तो कोई सार नहीं है कि चम्पकपुर विजय का उल्लेख एक ही बार किया गया है और फिर नहीं किया गया क्योंकि २५ वें पद्य में फिर 'पावक' का उल्लेख मौजूद है। यह प्रश्न तब तक ठीक-ठीक हल नहीं हो सकता जबतक कि बागुला का पता न लगा लिया जावे। शायद यह उस भू भाग का दूसरा नाम हो जिस पर चांपानेर का राजा राज्य करता था। सम्भव है, पासही के प्रदेश बागड से भिन्न नाम रखने के लिये ही ऐसा किया गया हो अन्यथा यह 'बागलान' हो जो गुजरात और दक्षिण† के बीच में एक छोटी सी राजपूत रियासत था। मुसलमान लेखकों द्वारा बागुला का कहीं उल्लेख नहीं किया गया है।

छब्बीसवें पद्य में, जो ठीक ठीक नहीं पढा जा सका है, दधिपद्र (आधुनिक दोहाद) के सुन्दर किले का उल्लेख है। यह किला इमादल मुल्क द्वारा शक सम्वत् १४१० व विक्रम

---

* बाम्बे गेजे०, जि० १, भा० १, पृ० २४३, बर्ड पृ० २१२, ब्रेले (तबकाते अकबरी, पृ० २१०)। यह विचारणीय है कि यद्यपि 'मीराते अहमदी' का लेखक 'मीराते सिकन्दरी' के आधार पर ही चलता है परन्तु 'सिकन्दरी' में इसका कोई उल्लेख नहीं है। कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० ६१२ और pt 25, Beley (बेले) ने पृ० २१२ पर एक नोट में लिखा है कि 'यह ऊपरवाला 'राजप्रासाद' मालूम होता है। स्पष्ट ही दिखाई पडता है कि ऊपर के किले के अवशेषों की बनावट मुसलमानी ढंग की है। यह महमूद बेगडा द्वारा बनवाया हुआ बताया जाता है जिसने इसका नाम 'मान महल' रक्खा था। देखिए 'बॉम्बे गजेटियर' जि० ३, पृ० १९०

† यह दक्षिण सम्भवतः पल्लिदेश (वर्तमान गोधरा तालुका) के बहुत समीप है।

सम्वत १५४५ में बनवाया गया था । इक्कीसवीं पंक्ति में इमादन मलिक द्वारा किसी खास दिन जीर्णोद्धार कराए जाने का उल्लेख है । यह तिथि और दिन अब नहीं पढे जा सके है ।

इस (२६ वें) पद्य में हमें एक नई ही सूचना मिलती है । किसी भी मुसलमान इतिहासकार ने, दधिपद्र (दोहाद) के दुर्ग के निर्माण अथवा जीर्णोद्धार का श्रेय महमूद अथवा उसके साथियों को जिनके कार्यों का विस्तृत वर्णन मीराते सिकन्दरी* में मिलता है, नहीं दिया है ।

इस शिलालेख में महमूद को १४९० ई० (जब यह उत्कीर्ण हुआ था) तक की सभी महत्वपूर्ण विजयों का उल्लेख है परन्तु इसमें सिंध, जगत और द्वारा (द्वारका) के हमलों को छोड दिया है जो क्रमशः १४७२ और १४७३ ई० में हुए थे ।†

लेख की ११, १३, १५–१७, २० और २१ वीं पंक्तियोंमें क्रमशः (१) इमादल (२) इमादल मलिक (३) 'वीर' इमादल, (४) इमादुल मुल्क और (५) इमादुन मलिक नामक व्यक्ति के कार्यों का उल्लेख है ।

पहली (११वीं) पंक्ति का सन्दर्भ स्पष्ट नहीं है । (इसमें) ऐसा प्रतीत होता है कि उसे (इमादल को) 'देश रक्षा', (सम्भवतः नये जीते हुए चांपानेर राज्य की रक्षा) के लिए नियुक्त किया गया था । दूसरी (१३ वीं) पंक्ति के अनुसार मलिक इमादल ने पल्लिग्राम को जीत कर वहाँ एक किला बनवाया था । तीसरे, उसने चम्पकपुर में एक किला बनाया था । और चौथे इमादुल मुल्क ने दधिपद्र दुर्ग के सम्बन्ध में एक दान किया और अन्त में मलिक इमादल ने अपने अधीनस्थ उसी दुर्ग का (?) जीर्णोद्धार कराया (मलिक ?)

प्रसंग देखने से ये सब कार्य एक ही व्यक्ति इमादुल मुल्क द्वारा सम्पन्न हुए जान पडते है । प्रस्तुत शिलालेख में इन कार्यों का वर्णन 'देश रक्षा' पर नियुक्ति से लेकर संवत् १५१० में दधिपद्र दुर्ग के जीर्णोद्धार तक तिथि क्रमानुसार लिखा गया है ।

यह इमादल मुल्क और इमादुलमुल्क‡ एक ही हो सकता है जो कि प्रधान मन्त्री के समकक्ष ही एक पद होता था । महमूद के समय में इस तरह के तीन¶ इमादुल मुल्क हुए (१) इमादुल मुल्क शा' बान, (२) इमादुल मुल्क हाजी सुलतानी और (३) उसका पुत्र बूद । पहले इमादुलमुल्क ने महमूद की उस षडयन्त्र के विरुद्ध सहायता की जो उसके तख्त पर बैठते समय हुआ था । बूद वह व्यक्ति था जिसकी सहायता से महमूद ने चांपानेर आदि स्थानों पर विजय प्राप्त की और दधिपद्र (दोहाद) का किला बनवाया

---

* देखिये—फरिश्ता पृ० ७८-८८ व पृ० २३८ इतिहासकारों ने इमादुल मुल्क मलिक आईन का नाम लिया है जिसने आईनपुर बसाया । यह अहमदाबाद का बड़ा गुंजान कस्बा है । परन्तु दधिपद्र और दोहाद एक है अतः इस सूचना से विशेष काम नहीं चलता है ।

† ब० हि० इ० जि० २, पृ० २०६ ०७

‡ प्रिन्स ऑफ वेल्स म्यूजियम के श्री जाना के मतानुसार ।

¶ ब० हि० इ० जि० ३ पृ० ३०४ व ३०७

तथा उसका जीर्णोद्धार कराया क्योंकि उसका पिता हाजी सुलतानी चांपानेर की चढाई* के पहले ही मर चुका था ।

इस शिलालेख में अहम्मदपुर, चम्पक (पद्र), चम्पकपुर, दधिपद्र नामक स्थानो, गूर्जर, मालवक, दम्मण और वागूला के अधिपतियों; पावक और जीर्ण (?) दुर्गो तथा रैवतक पर्वत के नाम आये हैं ।

जिस प्रसग में अहम्मदपुर का नाम आया है वह स्पष्ट नहीं है । अधिक सम्भव यही है कि इससे अहमदाबाद ही का तात्पर्य है जिसको अहमदशाह ने प्राचीन नगर आशावाल†के स्थान पर बसाया था । यहाँ पर उसी के बसाये हुए अहमदनगर‡का प्रसंग इसलिये ठीक नहीं बैठता कि महमूद द्वारा वहाँ पर बनवाई हुई किसी भी इमारत का उल्लेख नहीं मिलता है, जब कि अहमदाबाद में उसने चांपानेर विजय करने के बाद ही बहुत-सी शानदार इमारतें,¶ नगर के चारों तरफ एक दीवार व बहुत-सी बुर्जें बनवाई थीं ।

चम्पक (पद्र) अथवा चम्पकपुर ही आधुनिक चांपानेर है जिसके प्राचीन गौरव का इतिहासकारो ने§ बखान किया है । महमूद की बनवाई हुई कितनी ही इमारतों के खण्डहर अब भी चांपानेर में मौजूद है । इनमें से गढ (राज प्रासाद) का परकोटा, बुर्जे, दरवाजे, राहदारी के थाने, मस्जिदें और छतरियां मुख्य है । सबसे बढ कर जामा मस्जिद है।||

दधिपद्र और दोहाद एक ही हैं । इसका शब्दार्थ है 'दधि पर बसा हुआ पद्र (गाँव)। दधि से तात्पर्य है दधिमती नदी जिसके किनारे आजकल दोहाद** बसा हुआ है ।

* कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०९

† कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३००

‡ वर्ड, पृ० १९०

¶ कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० ६१२, जि० ४, पृ० ७०

§ आईन-ए-अकबरी (अबुल फजल) जि० २, पृ० २४१-२४२

|| इस मसजिद और दूसरी इमारतो के लिए देखिए—आर्कियालाजिकल सर्वे, वेस्टर्न इण्डिया, भा० ६, पृ० ४१ (Arch. Surey West India, Vol VI, P 41 and Pts, LVI, LVI II,LXI, and XIV, and C H I. Vol. III, 612-13 and Pt XXV और कैं० हि० इ०, भा ३, पृ० ६१२-१३

** पौराणिक आधार पर इसका नाम दध्येश्वर महादेव के कारण दधिपुर का नगर था । दध्येश्वर महादेव दधिमती नदी पर स्थित हैं । नदी का नाम दधिमती इसलिए पडा कि दधीचि ऋषि यहा पर रहते थे । इन आधारो पर दधिपद्र नाम ही अधिक सगत जान पडता है । दधिपुर नगर तो बाद मे शिव की पुरातनता बताने के लिए नाम रख लिया जान पडता है ।

[इस गाँव का स्थानिक उच्चारण 'देवद' या 'दहिवद' है जो ठीक 'दधिपद्र' का अपभ्रश है । मुसलमानो ने अपने जिह्वा-वैक्लव्य के कारण इसको 'दाहोद' या दोहाद कह कर बोलना शुरू किया और उसी तरह लिखना प्रारंभ किया और फिर जिसका अनुकरण इग्रेजो ने किया—जिन विजय ।]

दोहाद मे प्राप्त हुए जयसिंह और कुमारपाल के समय के शिलालेखों* में भी दधिपद्र शब्द का प्रयोग मिलता है।

मुसलमान इतिहासकार दोहाद में दुर्ग निर्माण के जिस प्रश्न को पूर्णतया हल नहीं कर सके थे वह प्रस्तुत शिलालेख से हो जाता है। उदाहरणार्थ, मीराते अहमदी के लेखक ने एक जगह† लिखा है कि दोहाद को व्यापारी मण्डी की पहाड़ियों में अहमदशाह ने एक किला बनवाया, दूसरी जगह‡ इसके बनवाने का श्रेय मुजफ्फर (द्वितीय) को दिया गया है। परन्तु, मीरात ए सिकन्दरी के कर्त्ता का अभिप्राय है कि धमोद और दोहाद एक ही स्थान के नाम है और दोहाद का किला अहमद (प्रथम)* ने बनवाया तथा मुजफ्फर ने मालवा जाते हुए १५१४† ई० में इसका जीर्णोद्धार कराया।

हमारे शिलालेख के प्रसंग से ज्ञात होता है कि दधिपद्र में किला तो पहले ही मौजूद‡ था परन्तु वह टूटी फूटी दशा में था। इसका जीर्णोद्धार¶ महमूद (प्रथम) के समय में मलिक इमादल ने कराया। सम्भवत यह किला अहमद (प्रथम) का ही बनवाया हुआ था, जैसा कि ऊपर बताया गया है।

हम ऊपर लिख चुके है कि बागुला या तो फरिश्ता§ द्वारा उल्लिखित 'बगलान' है अथवा अबुल फजल|| व अन्य ग्रन्थ कर्ताओं के मतानुसार "बागलान" है। फरिश्ता का कहना है कि यह 'सूरत' के पास का प्रदेश है, दूसरे लोगों का मत है कि यह सूरत और नन्दरबार के बीच का पहाड़ी और घनी आबादी वाला प्रदेश था। आजकल के नासिक जिले** का एक भाग जो बागलान कहलाता है वह इस वर्णन से मिलता है। मुसलमान इतिहासकारों के मतानुसार इस स्थान के शासक राष्ट्रकूट वंश के थे। ये लोग और कन्नौज††के राठौड एक ही थे। इन लोगों की वंशपरम्परागत उपाधि 'बहरजी' थी जो

* इण्डियन एण्टिक्वेरी जि० १० पृ० १५९

† बर्ड पृ० १९०

‡ बर्ड पृ० २२२

* 'दोहाद का एक थान का कोट खिचवाया जो पहाड़ियों के बीच में था'। फरीदी, पृ० १७

† फरीदी पृ० ९६

‡ दधिपद्रे रुचिरतर दुर्ग व–पृ० १६

¶ उद्धरेत् पृ० २१

§ ब्रिग्स, जि० ४, पृ० १९ व ३०

|| आईन ए अकबरी (ग्लेडविन), जि० २ पृ० ७३। इस का उल्लेख सर्वप्रथम, Bombay Gaz Vol XVI, p 188 Vol VII p 65 and 189 में किया गया है।

** Bombay Gaz Vol XVI p 399

†† बर्ड द्वारा उल्लिखित 'माआसिरुल उमरा' (उमरावों का इतिहास) पृ० १२२ इसका यह कथन विश्वसनीय नही है कि 'जमीन्दार के पास देश चौदह सौ वर्ष से कब्जे में था।'

शायद मसूदी* के मतानुसार कन्नौज के राजवंश की उपाधि 'बहरा' से मिलती है। इन लोगों का कहना है कि इस प्रदेश में सात दुर्ग थे जिनमें से मुल्हेर और सालेर के किले असाधारणतया दृढ़† थे।

बहुत पहले ही से बागलान दक्षिण और गुजरात के समुद्री किनारे पर बीच का स्थान रहा है। तेरहवीं शताब्दी के अन्त में गुजरात के अन्तिम हिन्दू शासक कर्ण ने यहीं पर शरण ली थी। इसके बाद भी यह स्थान गुजरात के और दक्षिण के सुलतानों के बीच लड़ाई का कारण रहा है। कभी इस पर एक का अधिकार होता था तो कभी दूसरे का, और कभी कभी यह दोनों ही के अधिकार से निकल कर स्वतन्त्र हो जाता था। प्रस्तुत शिलालेख में भी गुजरात के सुलतानों की किसी ऐसी ही विजय से अभिप्राय है जिसका मुसलमान इतिहासकारों ने उल्लेख नहीं किया है। यह विजय उन्होंने दौलताबाद के सूबेदार मलिक वागी और मलिक अशरफ बन्धुओं की १४८७ ई० की जीत से पहले प्राप्त की होगी।

पल्लीदेश के विषय में प्रसङ्ग स्पष्ट नहीं है परन्तु इतना अवश्य विदित होता है कि इस नाम के देश में इमादल ने एक किला बनवाया था। आजकल के गोधरा तालुका‡ में एक स्थान है जो पाली कहलाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रदेश के प्राचीन नाम पल्लीदेश के आधार पर ही इस स्थान का यह नाम चला आ रहा हो। शिलालेख में वर्णित पल्लीदेश को राजपूताने¶ का प्रसिद्ध जिला पाली मानने के लिए प्रसङ्ग की सङ्गति ठीक नहीं बैठती है क्योंकि चांपानेर विजय करते समय महमूद ने उसी भूभाग पर अधिकार किया होगा जो आजकल गोधरा तालुका के अन्तर्गत है और जो उस समय पल्लीदेश के नाम से प्रसिद्ध था। राजपूताने में महमूद ने कोई विजय प्राप्त नहीं की। हाँ, जूलवाना और आबूगढ़§ के राजाओं से कर वसूल करने के लिये मारवाड़ के सांचोर और जालोर जिलों पर आक्रमण करने का इसने मनसूबा अवश्य किया था। इस हमले का कार्य इमादु-

* जैसा कि 'बाम्बे गजेटियर' भा० १६, पृ० १८४ नोट ८ में लिखा है।

† इनमें से बहुत से अब भी मौजूद हैं। (बाम्बे गजेटियर, भा० १६, पृ० ४००) बहुत सी पहाड़ियों पर सीधी चट्टानें खड़ी हैं और बहुत सी पहाड़ियों पर परकोटे खिंचे हुए हैं। इनमें से बिलकुल पश्चिम में बम्बई प्रदेश का सालेर और इससे करीब दस मील पूर्व में मुल्हेर का किला मुख्य है।

‡ रिवाइज्ड लिस्ट अन्टिक्वेरियन रिमेन्स, बाम्बे प्रेसि०, पृ० ९८

¶ जोधपुर राज्य में, देखिए—राजपूताना गजेटियर (इम्पीरियल गजट इण्डिया, प्राविन्शियल सिरीज) पृ० २०३; हेमचन्द्राचार्य ने भी अपने द्वयाश्रय महाकाव्य के सर्ग २० पद्य ३३ में पल्लिदेश का उल्लेख किया है परन्तु उसका अभिप्राय भी राजपूताने के तन्नामक प्रदेश से है।

§ ब्रिग्स, जि० ४, पृ० ६४; कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०६, बेले पृ० २०६

स्मुन्क और कसरग्री के आधीन किया गया था। परन्तु, इसमें सन्देह है कि यह हमला कभी हुआ भी था या नहीं। इसके विपरीत यह कहा जाता है कि महमूद के अधिकार में गोधरा नाम का एक अलग ही प्रान्त था जिसका सूबेदार कुयाम-उल-मुल्क था*। कुछ भी हो, इस (पल्लो) देश में दुर्ग निर्माण का प्रश्न इस स्थान पर हल नहीं हो सकता है।

पावकदुर्ग (१६) ही पावागढ़ का पहाड़ी किला है जो बम्बई प्रान्त के पंचमहाल जिले में गोधरा से २५ मील दक्षिण में और सड़क द्वारा बड़ोदा† से २६ मील पूर्व में स्थित है। यहां के शासकों के एक शिलालेख में इसका नाम पावागढ़ भी दिया है।‡

महमूद से पहले अहमदशाह और उसके पुत्र महम्मदशाह ने इस दुर्ग को लेने के लिए प्रयत्न किये थे परन्तु वे सफल नहीं हुए। एक लम्बे घेरे के बाद १४८४ ई० के नवम्बर मास में इस किले पर हमला करने और इसके दरवाजे तोड़ देने में सफलता मिली। कहते हैं कि पहाड़ी पर अधिकार प्राप्त करने के बाद महमूद ने ऊपर और नीचे के दोनों किलों¶ में रक्षकों के दल को और भी मजबूत कर दिया और यहीं पर महमूदाबाद नामक शहर बसाया जो महमूदाबाद चांपानेर§ भी कहलाता था। प्रस्तुत शिलालेख में इन कार्यों की ओर इतना ही कह कर लक्ष्य किया है कि महमूद ने उस देश पर राज्य किया।

जीर्ण (दुर्ग) से आधुनिक जूनागढ़ का अभिप्राय नहीं है बल्कि यहीं पर बनाये गये किलों में से एक का है जिसका हाल मुसलमान इतिहासकारों ने लिखा है और दूसरे शिलालेखों में भी जिनका उल्लेख मिलता है। उक्त आधारों से विदित होता है कि १५वीं शताब्दी में यहीं पर दो किले|| और एक शहर था। शहर का नाम सम्भवतः गिरिनगर** था अथवा कि इसके पूर्व क्रमशः दूसरी†† और आठवीं‡‡ शताब्दियों में मिलता है। शहर का किला जो दामोदर घाट¶¶ के किनारे पर गिरनार (रैवत पर्वत) की ढाल पर बना

* ब्रिग्स, पृ० ६२

† बाम्बे गजेटियर, जि० ३ पृ० १८५ नोट १

‡ वही, पृ० ३१३ नोट ३,४

¶ पावागढ़ की पहाड़ी और किले का नक्शा देखिये, बाम्बे गजे०, जि० ३ पृ० १६६

§ फरिश्ता जि० ४ पृ० ७ बद पृ० २१२ फर्गीसे, पृ० ६३ क० हि० इ० जि० ३ पृ० ३१०

|| फर्गीसे पृ० ५० ५४ बद पृ० ४०८

** ब्रिग्स (फरिश्ता), जि० ४ पृ० ५० ५१ 'महमूदशाह गिरनार देश की ओर (बढ़ा) जिसकी राजधानी का भी यही नाम था।

†† रुद्रदामा का शिलालेख, ब्रिग्स जि० ८ पृ० ४४

‡‡ जयभट्ट का दानपत्र (इं० ऐ० जि० ११ पृ० ३८ पंक्ति १०)

¶¶ ब्रिग्स जि० ८ पृ० ४३

हुआ है जीर्णदुर्ग,* ख़ियरकोट† अथवा जूनागढ़‡ कहलाता था। इसीको शायद आजकल ऊपरकोट¶ कहते हैं। वास्तव में, यह परकोटे से घिरा हुआ राजमहल था। यह मुगलों की गढ़ियों जैसा था और सम्भवतः इसको गिरनार के चूड़ासमा राजाओं ने बनवाया था। दूसरा किला पहाड़ के ऊपर बना हुआ था§ और अब उसके कोई भी चिह्न अवशिष्ट नहीं हैं। इस पर्वत का प्राचीन नाम रैवत अथवा ऊर्जयन्त (उज्जयन्त) से बदल कर गिरिनगर के आधार पर गिरनार होना और शहर का नाम जीर्णदुर्ग अथवा जूनागढ़ में बदल जाना सम्भवतः १५ वीं शताब्दी के बाद की बात है।

. रैवतक गिरनार पर्वत का ही दूसरा नाम प्रतीत होता है। इसी स्थान पर मिले हुए एक शिलालेख में इस पर्वत का नाम ऊर्जयत्|| लिखा है। स्कन्दगुप्त** के लेख में ये दोनों ही नाम मिलते हैं। फ्लीट साहब का मत है कि गिरनार की दो पहाड़ियों में से एक का नाम रैवतक है न कि खास गिरनार††ही का। इसके बाद १३०० ई० तक का कोई शिलालेख सम्बन्धी प्रमाण अबतक‡‡प्राप्त नहीं हुआ है। इसके बाद के शिलालेखों में रैवत

---

* मल्लदेव का चोरवाड का लेख वि० सं० १४४५ (रिवाइज्ड् लिस्ट एण्टि० रिमेन्स बाम्बे प्रेसि०, पृ० २५०; ब्रिग्स, जि० २१, परिशिष्ट पृ० १०३ स० ७३१, थेपक राजा मेहरा के हुवसनी के लेख, इण्डि० एण्टि०, भा० १५, पृ० ३६०; वही० भा० १६, परि० पृ० ६८

† रिवाइज्ड् लिस्ट बाम्बे प्रेसि०, पृ० ३६१ लेख क्र० ३५ पंक्ति ६

‡ ब्रिग्स, जि० ४, पृ० ५३

¶ यह हिन्दू ढग का बना हुआ और सम्भवत १३वीं अथवा १४वीं शताब्दी का है या इससे भी पहले का हो सकता है। (आर्कियालॉजिकल सर्वे वेस्टर्न इण्डिया, भा० २, पृ० १५)

§ फरिश्ता (ब्रिग्स, जि० ४, पृ० ५३) "पहाड़ पर......दृढ़तम किला"।

|| रुद्रदामन का लेख (ब्रिग्स, जि० ८, पृ० ४२)

** गुप्तकालीन लेख, कॉ० इ० इ०, भा० ३, पृ० ६०

†† वही पृ० ६४ नो० १, "ऊर्जयत् अथवा गिरनार के सामने का पहाड।" परन्तु 'बाम्बे गजेटियर' जि० ८, पृ० ४४१–४२ में लिखा है कि रेवतकुण्ड (जो दामोदर कुण्ड भी कहलाता है) के ठीक ऊपरवाले पर्वत को ही रेवताचल कहते हैं। इसका नाम रेवताचल, राजा रेवत के नाम पर पडा है। कहते हैं कि अपनी पुत्री रेवती का विवाह श्रीकृष्ण के बडे भाई बलदेव के साथ करने के बाद राजा रेवत द्वारका से गिरनार आकर रहने लगा था। भागवतपुराण के स्कन्ध १० अध्याय ५२ में इस कथा का उल्लेख है। वहाँ रेवत को आनर्तराज लिखा है परन्तु यह नही लिखा है कि वह गिरनार जाकर रहने लगा था।

‡‡ जौनपुर के ईश्वर वर्मन् के शिलालेख मे रेवतक का उल्लेख है। गुप्तकालीन लेख कॉ० इ० इ०, भा० ३, पृ० २३०

और उज्जयन्त‡ पर्वत को एक ही बताया गया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व समय में गिरनार की दो भिन्न भिन्न पहाड़ियों के नाम रैवत और उज्जयन्त थे परन्तु बाद में ये एक ही पर्वत¶ के नाम हो गए। अत प्रस्तुत शिलालेख में उल्लिखित रैवतक से उस पर्वत का अभिप्राय है कि जिस पर मन्दिर आदि बने हुए हैं और जो गिरनार के नाम से प्रसिद्ध है।

‡ देखो नेमीनाथ के मन्दिर से प्राप्त लेख न० १४ (रिवाइज्ड लिस्ट बाम्बे प्रेसि०, पृ० ३५५) और मल्लदेव का चोरवाड का लेख पृ० २५०। माण्डलिक राजा के एक लेख में दोनों नाम हैं परन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि ये दोनों नाम एक ही के हैं अथवा भिन्न भिन्न पर्वतों के। (पृ० ३४७ ४८)

¶ बाम्बे गजेटियर, भा० ८, पृ० ४४१ "जैन लोग कभी कभी गिरनार को ही रैवताचल कहते हैं, परन्तु यह गलत है।"

शिलालेख का पद्य विवरण

पद्य सं०	१, १०, २६	आर्या
"	३, ११ १२, १६ से १८, २०, २२, २३	अनुष्टुप्
"	५, ६	इन्द्रवज्रा
"	४, १३, १४, १५, २५	उपजाति
"	२	स्रग्धरा
"	७ से ९ १९ २१, २४	शार्दूलविक्रीडित

राजविनोद महाकाव्य में वर्णित प्रसिद्ध व्यक्तियों एवं स्थानों आदि की सूची

अङ्गाधिप ४ ४
अर्जुन २ १७
अल्पखा (खा) न २ ५
अहमद १ २६, २ १० १३,१४,३१, ३ ३३, ४ ३३, ५ ३५, ६ ३६, ७ ४२
इन्द्र ४ २०
इन्द्रप्रस्थ २ ८
उदयराज ७ ४१
ऐरावण ४ १
कच्छ २ ३
कान्यकुब्ज ४ १८
कर्ण १ ११ २ १७,२६ ४ २६ ५ ११
कर्णाटक ४ ८
कर्णाट ७ २८, २९
कलिंग ४ ६
कामरूप (देशपति) ४ १३
काश्मीर ३ ५, ७ ३५
काश्मीर मण्डलपति, ४ २०
कृष्ण २ २
कुम्भकर्ण ४ १२
गयासदीन १ २६ २ १४ ३१ ३ ३३ ५ ३५ ६ ३६ ७ ४३
गुर्जर २ २० ४ १, ७ ३४, ३४
गुर्जर क्ष्मापति १ २६ २ ३१, ३ ३३, ४ ३३, ५ ३५, ६ ३६, ७ ३४, ४३



* मांडू